[1]जात - हित मात निश - दिन दुख - पावे है ।
देवी देव धोकती फिरे है निज धर्म - छोर ,
मात भूखी रहै पर बाल ना रखावे है ।।
सूखे में सुवाड़े बाल आप आले सोती रहे ,
के तो दुख देवे बाल प्यार दरशावे है ।
पाल - पौखनारी सुखकारी धन्य मात पद ,
'मिश्री' मात - भक्त वोही भारत दिपावे है ।। १ ।।

— ढाल— मूलगी —

उण चिन्ता से इक दिन चिड़िया , मर पर-भव को जावे ।
चिन्ता चिता से बढ़कर मानो , नाना भूत नचावे जी ।। श्री० ।।१६।।
चिड़ो दुक्ख आणे घणो सरे, भूल गयो है चुगणो ।
छोटा बच्चा कैसे रुखालू , हो गयो माले रुकणो जी ।। श्री० ।।२०।।

— कवित्त —

प्रतिज्ञायें पालवे में पूरसल जोर परे ,
वाजे - वाजे प्राण तक देते केई देखा है ।
राम वनवास रहै हरिचन्द नीर ढ़ोयो ,
दुर्गा, शिवा, पत्ता ज्यां के कष्ट का न लेखा है ।।
प्रतिज्ञा के पारवेकूँ धर्मदास प्राण दीनो ,
तेजा जाट प्रतिज्ञा पै जिह्वा साँप पेखा है ।
सच्चा वीर-बच्चा कच्चा कभी ना पड़ेगा "मिश्री" ,
जच्चा सोना आग वीच कैसा रंग केका है ।। १ ।।

— ढाल— मूलगी —

घणां दिनों तक चिड़ियो राखी , कही प्रतिज्ञा पूर ।

---

(१) पुत्र

आखिर दूजी चिड़िया लायो, वचन चूक वेसूरजी ॥श्री०॥२१॥
अपर नार आवत अवलोक्या, माले बिचिया दोय ।
दुख देवे अणमाप एकदिन, मार गिराया सोयजी ॥श्री०॥२२॥
यह वृत्तान्त देख राणी री, कांपण लागी काया ।
हाय, शोक का सगपण कैसा, अत्याचार कराया जी ॥श्री०॥२३॥
यही हाल मुझ बालूड़ों का, मो-मरिया हो-जासी ।
बाप विराणो होय पलक में, धण[1] दूजी जब आसीजी ॥श्री०॥२४॥
दिन - दिन होवे दूबली सरे, अन्तर वेदन लागी ।
मोह-कर्म रो चक्कर मोटो, दशा विरहरी जागी जी ॥श्री०॥२५॥

※ दोहा ※

निज तिय[2] तन छीजत नयन, नरपति लीध निहार ।
पूछत प्रेमाकुल प्रिया !, दुक्खित क्यों दीदार ॥ १ ॥

ढाल २ जी ॥ तर्ज—पनजी मून्डे बोल० ॥

क्या दुख जी-को हो, महाराणी ! थाँरो मुखड़ो फीको हो० ॥टेर॥
मो-सरसो भरतार भूमि घर, कोमल थाँरे कीको[3] हो ।
भरिया धन भण्डार प्यार गहरो सजनी को हो ॥क्या०॥१॥
थोड़ा दिनों में कुँवर साब रे, आजासी घर टीको हो ।
आण अखण्डित वहे लँघे कुण, कथन कही को हो ॥क्या०॥२॥
फेरूँ कंइ रहगइ है मन में, सोच करो थें वीको हो ।
चौड़े ही कहदोनी यों कांई, मन में झींको हो ॥क्या०॥३॥
मुखड़ो थाँरो चमकरह्यो थो, ज्यों मालिक रजनी को हो ।
राहु-ग्रसित-सो आज पृथु-ढ़िग[4],-ज्यों गजनी को हो ॥क्या०॥४॥

१.-२. स्त्री । ३. पुत्र । ४. पृथ्वीराज चौहान के सन्मुख शाहगोरी ।

श्री अमरसेण वयरसेण चरित्र

रचयिता–

पूज्य गुरुदेव मरुधर केसरी प्रवर्तक

श्री मिश्रीमलजी म० सा०

प्रकाशक–

ी मरुधर केसरी साहित्य प्रकाशन समिति

जोधपुर–ब्यावर

द्रव्य सहायक–

शा० हस्तीमलजी बादलचन्दजी कांकरिया

चौकडी कलां (मारवाड़)

य

वीराब्द २४९

विक्रमार्क २०२

साच कहो सौगन्द है म्हारी, दुख मत दो देही को हो।
सदा सुहागन, बड़ भागन है, लेख लैही को हो ॥क्या०॥५॥

– ढाल - मूलगी –

प्यारी प्राणनाथ - पद शिर दे, गदगद भाखे वाणी।
मो-मरियों इण महलों दूजो, मत लाना महाराणी जी ॥श्री०॥२६॥
कारण, मेरे लाल सलोने, आ - कर सोत मरासी।
बेढ़ंगी या बात श्रवण-कर, नृप ने आगई हासी जी ॥श्री०॥२७॥
खोटी भावना स्याने भावो, मरसी दुश्मन थाँरा।
आनन्द मंगल सारा राज में, थाँरे लारे सारा जी ॥श्री०॥२८॥
जो नहिं व्है विश्वास आपने, लो अब सौगन्द लेलूँ।
नाहक काला पड़ो मतीना, हाथ थाँरे गल मेलूँ जी ॥श्री०॥२९॥
थाँरे सिवाय अपर राणी की, लाणे की तल्लाक।
म्हारो वस पूगेला जहां तक, मन राखूँला पाक जी ॥श्री०॥३०॥
सौगन्द लीनी भूपती सरे, विणने नहीं विश्वास।
देवे सान्त्वना तो भी राणी, भुगती सोचे खास जी ॥श्री०॥३१॥
दे - दे धीरज राजा कायो, – काठो हुवो हैरान।
रोग-ग्रसित चिन्ता से राणी, क्षीण हुई असमान जी ॥श्री०॥३२॥

ढाल ३ जीं ॥ तर्ज–हिवे राणी पदमावती० ॥

छेवट छेह राणी दियो, गई पर - भव ओर।
गुण स्मरण कर भूपती, दुख आणे घनघोर ॥ १ ॥
मोह - दशा दुखकार है, मोह कर्मों से मूल।
बड़ा - वड़ा ली विटम्बना, शोक - समुद्र में झूल ॥मो०॥टेर॥
मात विना दोनों वालूड़ा, रोय रह्या असराल।

विषय - सूचि

—:o:—

—: पुस्तक मिलने का पता :—

१. शाह हीराचन्दजी भीकमचन्दजी
सुमेर मार्केट के सामने,
जोधपुर (राज०)

२. तेजराजजी पारसमलजी धोका
सोजत नगर (राज०)

राज प्रिन्टिंग प्रेस, जोधपुर.

राजा छाती सूँ भीड़िया, धैर्य देवण बाल ॥मो०॥२॥
लाड लडावे अति घणा, राखे सुखरे मांय ।
छिन भर दूरा नहीं करे, विद्या पढ़वा जाय ॥ मो० ॥ ३ ॥
व्याह तणी बातों करे, देवे नृप फटकार ।
देव कुँवर-सा लाल है, फिर क्यों लावूँ नार ॥ मो० ॥ ४ ॥
सुख बेची दुख लेवणो, कांई समझरी बात ।
यूँ दिन बीते भूपना, सोचे सारो साथ ॥ मो० ॥ ५ ॥

※ दोहा ※

पूर्ण प्रतिज्ञा भूमिपति, राखी बहुला चोस ।
मंत्री कहे राणी बिना, शून्य राज्य अरु कोष ॥ १ ॥
भद्दिलपुरनो राजदी, डोलो सामी लाय ।
अत्याग्रह अवनीश ने, दीनो व्याह रचाय ॥ २ ॥

— ढाल - झूलणी —

एकान्ते नृप मन्त्री ले कर, कानों डाली बात ।
कुवरों को छाने से राखो, राणी नजर नहिं आत जी ॥श्री०॥३३॥
पुर बाहिर उद्यान एक जहां, सुन्दर महल उदार ।
युगल कुँवर विद्या अभ्यासे, आचारज पै सार जी ॥श्री॥३४॥
सचिव सभी सरदारों अथवा, दासी दास के तांई ।
कुँवर नाम नहिं लेने के हित, पूरी करी मनाई जी ॥श्री०॥३५॥
सुन्दर करी व्यवस्था मन्त्री, नितप्रति जाय संभारे ।
हवा खाने के मिस से राजा, मिलवा वहां पधारे जी ॥श्री०॥३६॥
राणी जाणी नहीं वातड़ी, आनन्द में दिन जावे ।
हावभाव अति हेज जगा कर, नृपको वश करवावेजी ॥श्री०॥३७॥

-: दो शब्द :-

मानव जीवन एक उदात दरिया की लहरों के समान है। प्रतिक्षण
ोवन के मस्तिष्क में अनेकों विचार धाराऐं उत्पन्न और विलीन का चक्कर
लता ही रहता है। एक प्रबल अन्धड़ से उठी हुई धुली के कण कण को मेघ
बा सकता है और मुसलाधार मेघ की धाराओं को एक पवन क्षणमात्र में विलीन
मिटा सकता) कर सकता है। लाखों वृक्षों से परिपूर्ण सघनघन वन को आग
ला सकती है, और उड़ती हुई उर्मियों से प्रचन्ड ज्वालाओं को पानी का
वाह शान्त कर सकता है।

किन्तु संघर्षमय मानव जीवन की विचार धाराओं का कोई ओर छोर नहीं
ा पाता, हाँ, उनकी ओर छोर लेने का उपाय है तो एक ही, विश्व मात्र में
पलब्ध होता है। वह उपाय यह है "मानव की मर्यादा", यह मर्यादा ही
ानवता को टिका सकती है और लहला सकती है। तथा जोवन को सौरभ मय
ना सकती है। प्रस्तुत प्रथम इस पुस्तक में अमर सेण वयरी सेण नामक युगल
भ्राताओं का कथानक सजीव चित्रण अपनी पवित्र जन्म जननी से प्रयाप्त मात्राओं
े ऐसा चित्रित किया कि प्रत्येक मानव के हृदय पटल पर अपना भाई चारा का
प्रभाव अंकित कर गये। अर्थात् अमिट छाप जमा गये।

इसी प्रकार प्रथम श्रावक "श्री जिनदास" का वृतान्त इतिहास भी
मर्यादा से परिपूर्ण इतना मन मोहक है कि लेखनी के द्वारा वर्णित नहीं कर
सकते। मर्यादा ही मानव का प्रथम अंग माना गया है।

ऐसा ही द्वितीय श्री "कहो सो करो" याने जो मुँह से वचन निकाल दिया
उसको पूर्ण करना ही मानव का कर्त्तव्य है।

तृतीय चौपाई में "स्त्री कपट की खान है" याने कपट औरतों के लिए
एक साधारण बात है। चाहे अगले व्यक्ति का कितना ही नुकशान क्यों न हो।

राज-काज मन्त्री करे सरे, महिपति रहवे महलों।
जातो काल जाणे नहीं सरे, स्नेह संचित रंगरेलोजी ॥श्री०॥३ ॥

ढाल ४ थी ॥ तर्ज–दादरा ॥

कर्मों रो आंटो भायों केर केरो कांटो,
केर केरो कांटो ओ तो खेर केरो कांटो,
नदीयों रा टोल सूं भी जाणो घणो लांठो ॥ टेर ॥
सुखी ने बणावे दुखी, दुखियों ने सुखियो।
मुखियो वणियोड़ो ओ तो, जैसे धोरी माटो ॥क०॥१॥
उलट पुलट कर डारे, छिन भर में।
जहर ने अमृत करे, वांसड़ा ने सांठो ॥क०॥२॥
शेर रो बणावे स्याल, स्याल ने बणावे शेर।
लहरों रो शुमार कठे, दरियारो कांठो ॥क०॥३॥
कायदो कर्मों रे नहीं, – दया एक दमड़ी।
हियां रो कठोर महा, मानन में माठो ॥क०॥४॥
मर्दगी तो राखो "मुनि - मिश्रीमल" दाखे।
तप जप करी वेगा कर्मों ने काटो ॥क०॥५॥

– दोहा –

कीड़ी, करि, अरि, हरि सभी, वर्ते कर्माधीन।
जे जीत्या जयवन्त है हार्या होवे हीन ॥ १ ॥

ढाल ५ मी ॥ तर्ज– घटा चढ़ी घनघोर, चमक रहि वीजलियों० ॥

कर्म दियो झकझोर, छोल इसड़ो आई।
बनो अनोखी वात के, सुनजो सब भाई ॥ टेर ॥

चतुर्थ– "सत्य से सम्पत" याने मानव जीवन की सभ्यता ही सम्पति लक्ष्मी है। सत्यता ही से सेठ सुदर्शन को सुली, सिहासन बना।

पंचम्– "आज्ञाकारी पुत्र कंवर कुरनाल" याने पुत्र वही है जो माता-पिता आज्ञा का निरन्तर पालन करे।

सष्ठम– 'बन्दा बन्दी का वृतान्त" यही आख्यान करता है कि दुनय में किसी की भी लाठाई (दबाबदारी) चलने वाली नहीं है।

सप्तम्- "राजा मूल देव का वृतान्त" शिक्षा युक्त है। जो बड़ों की शिक्षा निरन्तर पालन करता है उसका ही जीवन उज्जवल सोने की भांति तथा हीरे के समान चमक उठता है। मानव जीवन व मर्यादा में इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि उसे पालने पर आनन्द की गंगा निरन्तर बढ़ती रहती है। तथा मर्यादा भंग करने पर मानव कर्त्तव्य से गिर जाता है। भवभव में उलझ जाता है। इसलिये ही मानव के लिये मर्यादा श्रेष्ठ है। इस पुस्तक द्वारा भांति भांति से विदित हो सकता है। इस पुस्तक के निर्माता मरुधर केशरी प्रर्वतक पंडित रत्न मुनि श्री १००८ श्री श्री मिश्रीमलजी महाराज साहब हैं।

जिनकी लोह लेखनी द्वारा अनेकों अनेक ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं और प्रकाशित भी हो चुके हैं। जिसका अपार आनन्द वाचक वृन्द (पढ़ने वाले) ले रहे हैं। इस पुस्तक को मैंने मेरे परम आराधनीय श्री सुकनमुनि महाराज साहब से प्राप्त कर मेरे स्वर्गीय पूज्य पिता श्री हस्तीमलजी की स्मृति में प्रकाशित कर पाठक वृन्द (पढ़ने वाले) के कर कमलों में समर्पित कर आशा करता हूं कि वाचक वृन्द पढ़कर अपने जीवन को सफल बनायेंगे।

आपका
बादलचन्द कांकरिया
(मद्रास)

कुँवर पढ़े आनन्द के मांही, लोड़ी-सा जाणे है नांही ।
एक दिन इसड़ो ढंग, अचानक वणजाई ॥क०॥१॥
दास्यों ने वा मारे तारे, हन्टर के बिन रहे न न्यारे,
कठै पुकारे जाय, सुणे कुण दिलचाई ॥ क० ॥ २ ॥
किसा राणी-सा शाता देता, आये दिन आनन्द में रेता,
वे गये स्वर्ग सिधार, रही मन के मांही ॥ क० ॥ ३ ॥
अपों दुखी,क्या कुँवर सुखी है,जीवन काटे वनमें लुको है,
महाराजा वशमांय, एक सुनता - नांही ॥ क० ॥ ४ ॥
कुँवर शब्द कानों में आयो, लोड़ी सुन छाने चित्त लायो,
राज्य - कुँवर है भूप, – मुझे नहिं फरमाई ॥ क० ॥ ५ ॥

– ढाल-मूलगी –

पीतो मारलियो उण पुल में, दिवस कितायक बीता ।
एक दिन दास्यों ने वा पूछे, अपणे घर री गीता जो ॥श्री०॥३६॥
कुण कुण है सरदार खास, नृप, - किता गावों रो नाथ ।
किता महल अरु किता बाग हैं, हमें सुनादो बात जी ॥श्री०॥४०॥
कितरा व्याह किया राजाजी, कुँवर हुवा के नांही ।
है, अथवा साराही मरग्या, और हुई क्या बाई जो ॥श्री०॥४१॥
थाँने राणी - सा किसीक सोरी, रखता था दर्शावो ।
उणी तरहसूँ मैं पिण राखूँ, सही रीत समझावो जी ॥श्री०॥४२॥
इता दिनों में नहीं ओलखी, थाँरी आदत केरी ।
जिणसूँ कष्ट दियो मैं भोली, अकल हाल है ऐरीजी ॥श्री०॥४३॥

ढाल ६ ट्ठी ॥ तर्ज—थें तो मोटा हो भैंरूँजी बाबा देव० ॥

थें तो वणी रे पुराणी हुँशियार, डावरियों घर री ।
थां पै म्होंने है भरोसो अनपार, साथी ऊमर री ॥ टेर ॥

श्री अमरसेरा वयरसेरा चरित्र

म्होने साची साची कहदो बात, कालजिये राखूँ ।
थाँरे गलारी सौगन्द तिलमात, चौड़े नहीं भाखूँ ॥ १ ॥
आतो न्यारी न्यारी रंगत लाय, बातों में विलमावे दे-पटी रे ।
दास्यों सोचे मनरे मांय, लोड़ो - सा सरल नही कपटी रे ॥२॥
मिलवा लाग्यो दास्यों ने माल, थाल व्हांरे चोखी जमगी रे ।
आ तो बड़ी धूर्त बदमास, व्हांरा मनड़ा में पूरो पूरी वसगी रे ॥३॥
सारी बातों बताई ततकाल, चेता सारा व्हांरा खिसग्या रे ।
या तो स्वारथ बुरी बलाय, राणी घणा राजी मन व्हैग्या रे ॥४॥
आई राजकुँवर री बात, वे तो छांनेसेक कान में डारी रे ।
मत कहीजो किणीने आप, थाँरा कुँवर विराजे वाग-वाड़ी रे ॥५॥
पतो पायो राणीजी खास, सुण मन में जरी ज्यूँ होरी रे ।
म्हारो नृप ने नहीं विसवास, जिणसूँ चाल चली या कोरी रे ॥६॥

— ढाल मूलगी —

इक दिन चर्चा करी भूप से, कितरा राज कुमार ।
आज तलक नहि नजर निहारचा, कित राख्या सरकारजो ॥श्री०॥४४॥
चमक्यो भूप कही कुण इणने, अवतो कहणो पड़सी ।
छांने रा चवड़े होणे सूँ, आ म्हारा सूँ लड़सी जी ॥श्री०॥४५॥
भूप कहे वे पढ़े वाग में, कलाचार्य के पास ।
किणपै नहिं आणे - जाणे दे, अधिक करे अभ्यास जी ॥श्री०॥४६॥
थाँ नहि पूछयो, मैं नहिं दाख्यो, कारण और न कोय ।
थोड़ा दिनों में आय मिलेगा, जद थें लोजो जोय जी ॥श्री०॥४७॥

ढाल ७ मी ॥ तर्ज- मोहन गारो रे० ॥

कपट कियो कारो हो, प्रीतमजो ! मैं तो जाण्यो सारो हो० ॥टेर॥

॥ दोहा ॥

अमृतमयी जीवन अहा, सकल चराचर साथ ।
सो सानिध हो सर्वदा, श्रीमद् शान्तीनाथ ॥ १ ॥
गुण-सिन्धू बन्धू गहर, घननामी गण-ईश ।
लब्धि-निधी शरणो लहूं, वर दो विश्वावीस ॥ २ ॥
ज्यों जलधर वर्षत जगत, फले धरा फल फूल ।
श्री सद्गुरु के सानुग्रह, उक्ति लहे अनुकूल ॥ ३ ॥
भ्रातृ-प्रेम अरु कार्य शुभ, करते हैं बड़ वीर ।
विपदा में मति विमल-युत, सदा रहे गंभीर ॥ ४ ॥
अमर रु वयरीसेण ये, युगल-भ्रात बल-धाम ।
तिनको यह वृत्तान्त तुम, सुनहूं भविक ललाम ॥ ५ ॥

– मूल-ढाल –

तर्ज– तुम माल खरीदो, तृसला-नन्दन की खुली दुकान जी० ॥
श्री अमर, वयरसी - व्हावा होग्या रे भ्रात्री प्रेम सूं० ॥ टेर ॥
भाईचारो प्रेम विना रो, निभे न लाखों बात ।
मलयाचल विन चँदन बावनो, हर्गिज न्हावे हाथ जी ॥ श्री० ॥ १ ॥
राम और लिछमन री जोड़ी, अथवा हलधर कृष्ण ।
ज्यांरी वातों सुणत पाण ही, मनड़ो होवे प्रसन्न जी ॥ श्री० ॥ २ ॥
इसी तरह हुए अमर कुँवर अरु, वयरि कुँवर गुणवन्त ।
भाईचारो राखवा सरे, विपदा सही अनंत जी ॥ श्री० ॥ ३ ॥
जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र का, मध्य - खण्ड सु - विशाल ।
आर्य - देश में बहुल - देश वर, शौरीपुर सुरताल जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥
सूरसेण है सुन्दर राजा, प्रबल वीर गंभीर ।
अरि-घायक,सहायक-परजा को, पर-वनिता को वीर जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥

पुरुषों रो तो मूल-धर्म है, धोखो देवण वारो हो।
ऊपर सूं मीठा वचनां रो, जामो धारो हो॥ कपट०॥१॥
औरों रो पतिया रो पूछी, खेंचे चित्त उणोंरो हो।
है पुरुषों रो प्रेम जगत में, सार विनारो हो॥ क०॥२॥
लेवे पिण, देवे नहिं किण ने, भूली भेद हियारो हो।
नारी जात सरल समजेना, कपट कियारो हो॥ क०॥३॥
मैं कांइ डाकण, भूतण थी सो, खा- जाती सुत थांरो हो।
जिण सूं राख्या छिपाय, वाग में, करे विहारो हो॥ क०॥४॥
म्हारे तो है घणा लाडला, जाणूं हार हियारो हो।
पिण मरजी है, राज आपरी, 'कुण' केवण वारो हो॥ क०॥५॥
लोगों में भूंडी मैं लागू, सोत मात दुख खारो हो।
मैं तड़फू दिन रात मिलन, नहीं म्हारो सारो हो॥ क०॥६॥
यों कहि आँसूंड़ा ढलकाया, तिरिया-चरित करारो हो।
वडों-वडों रा हृदय हिला दे, 'कुण' भूप विचारो हो॥ क०॥७॥

– दोहा –

पृथ्वीपति कहे हे प्रिया ! मत कर इसो विचार।
कुण जाणे कुंवर कठे, पूछो सब परिवार॥ १॥

– कवित्त –

पढवा को समय पिछान दूर राख्या म्हांने-
लाड में विगर जात याते कियो पांतरो।
अध्यापक आछो अरु साधन सयल ठीक-
एकान्त-निवास कियो ज्ञान आवे सांतरो॥
उद्योगी कुंवर नहीं समय गमावे व्यर्थ-

जयणावति नृप के पटराणी, जिन - वाणी की जाण ।
पतिव्रता, कोमल मृदु-वाणी, इन्द्राणी अनुमान जी ॥ श्री० ॥ ६ ॥
मानेतण महिपाल री सरे, जनता में शोभाग ।
सरदार, मुसद्दी, नौकर-चाकर, ज्यांसूं बढ़तो राग जी ॥ श्री० ॥ ७ ॥
चतुर्विधी - नीती को ज्ञाता, धर्मसेण परधान ।
हय, गय, रथ, पैदल दल पूरण, भरा भण्डार महान जी ॥ श्री० ॥ ८ ॥
सप्तांगी लक्ष्मी को साहिब, शौरीपुर को नाथ ।
राज, प्रजा आनन्द में निवसे, सारों ने दे साथ जी ॥ श्री० ॥ ९ ॥

ढाल १ ली ॥ तर्ज- बटाऊ आयो लेवा ने० ॥

सिद्ध हुवे रे ज्यांरा काज, देवे पुनवानी झोलो जोर रो ॥ टेर ॥
इक दिन सूता रंग - महल में, राणी-सा सुखकार ।
हंस - शिशुनरी जोड़ी सागे, देखी है सुपन मजार ॥ दे० ॥ १ ॥
हर्षित हो राणी व्है बैठी, पहुँची प्रीतम पास ।
स्वप्न सुनायो, नृप आलोची, दाख्यो रे बुद्धी विलास ॥ दे० ॥ २ ॥
पुत्र युगल होगा पटराणी, सूरज, चन्द्र जिसान ।
एवमस्तु कहि के महाराणी, गया शीघ्र निज स्थान ॥ दे० ॥ ३ ॥
गर्भ यत्न के साथ राणी-सा, खूब करे धर्म ध्यान ।
राज्य - संपदा बढ़ती जावे, देवे रे अढ़लक दान ॥ दे० ॥ ४ ॥
पूरण काले प्रसव्या पदमण, नीका नन्दन दोय ।
उतसव अधिको होय रयो रे, घर-घर आनन्द जोय ॥ दे० ॥ ५ ॥

❊ दोहा ❊

पुत्र - जन्म पर भूपती, पायो मोद महान ।
द्वादश में दिन थापिया, आछा जस अभिधान ॥ १ ॥

(

धुन एक पढ़वारी रहे दिन रात रो।
और कोई बात नाहीं, सुणले लाखीणी नार-
साच कहूं रतो एक थांसूं नहीं आंतरो ॥१॥

ढाल ८ मी ॥ तर्ज– एक दिवश लंकापति० ॥

मोखो आयों मिल जासी, मतना राखो ऊदासी,
हे मृदुभाषी ! तूं मुझ प्यारी प्राण सूं ए।
दीवाली दिन आवियो, महाराजा फुरमावियो,
सुणावियो, मन्त्री ने सन्देशड़ो ए ॥१॥
चवदा वर्ष व्यतीत ए, कुंवर दो शुभरीत ए,
पुनीत ए, विद्या तन बल बेवड़ो।
लावो सभा मजार ए, देखे सहु परिवार ए,
पटनार ए, वा पिण मिलणो च्हा रही ए॥ २ ॥
सचिव कहे शिर न्हाय ए, कुछ ठहरो महाराय ए,
इणमांय ए, कपट झपट चाली सही ए,
अलगा में आराम ए, सुधरे सारो काम ए,
नाम ए, हाल आप लेवो मती ए॥
प्रथमा राणी बोल ए, हियड़े लीजो तोल ए,
अमोल ए, सत्य होसी भाख्यो - सती ए ॥ ३ ॥
ला - कर मृदु मुसकान ए, फरमावे राजान ए,
मत तान ए, अब मिलणो मन भावियो ए,
सचिव जाय उद्यान ए, स्वागत करी महान ए,
पुरम्यान ए, युगल कुंवर ने लावियो ए ॥ ४ ॥
मेलो मच्यो अपार ए, निरखे राजकुमार ए,
नर नार ए, जोड़ सरावे है घणी ए।

अमर सेण है पाटवी , वयरिसेण लघु नाम ।
लालन-पालन लाड़ में , हद बिन होत हगाम ।। २ ।।

— ढाल—सूलगी —

बीज-चंद सम बढ़े कुँवरसा , सब जन के मन भाया ।
दिव्याकृती देवसी दीपे , लच्छन ललित लुभाया जी ।। श्री० ।। १० ।।
इकदिन चिड़िया करे घोसला , राणी-सा रे महेल ।
दासी न्हाखे, पाछा लावे , इसोक वणियो खेल जी ।। श्री० ।। ११ ।।
चिड़िया चिड़े चेरी के ऊपर , चेरी चिड़ी पर खास ।
राणी-सा बोली में समज्या , पूरे उसकी आस जी ।। श्री० ।। १२ ।।
रे दासी ! चिड़िया को नाहक , क्यों देती है पीड़ा ।
एक घर में कई रहना च्हाते , कौन रहत है वीड़ा जी ।। श्री० ।। १३ ।।
चिड़िया सुनकर खुशी मनाई , वसगइ मालो डाल ।
ईंडा युगल दिया चिड़िया ने , पोखे प्रेम से बाल जी ।। श्री० ।। १४ ।।
ईंडों से वच्चे जव प्रकटे , वदन महा रमणीक ।
चाँच, परों, पद सब ही सुन्दर, चिड़िया रखे नजदीक जी ।।श्री०।।१५।।
इकदिन चिड़िया पड़ी सोच में , आँखों आँसू राले ।
चिड़ो कहे दुमणी क्यों प्यारी !, चिड़िया उत्तर आले जी ।।श्री०।।१६।।
एक शपथ लेलो थे कन्ता ! , तो मुझ चिन्ता जावे ।
मो-मरियाँ दूजी चिड़िया सूँ, मतना व्याह रचावे जी ।। श्री० ।।१७।।
करी वात मंजूर चिड़ा ने , तो भी चिन्ता लावे ।
नहि विश्वास शोक का तिल-भर, वच्चा मार-गिरावे जी ।। श्री० ।।१८।।

— कवित्त —

मात-सी ममत कहीं और ना मिलेगी मित ! ,

राणी झरोखे झांकीयो, पासो वैर रो न्हाखीयो,
नहिं राखियो, मन चिन्ते लेऊँ हणी ए ॥ ५ ॥

– ढाल-मूलगी –

महावत ने बोलायो महलां, कियो इसो संकेत।
मार डालो कुवरों भणी सरे, प्रच्छन्न वणावो वेत जी ॥ श्री० ॥४८॥
महादुर्बुद्धी महावत मानी, फीलखाने झट जाय।
कर दारू में मस्त हस्ति को, कुँवर मारन के तांय जी ॥श्री०॥४९॥
हुक्म दियो अरु मद फिर पायो, भिमरयो है गजराज़।
भांज आलान स्थंभ को निकल्यो, जुड़ियो जहां समाज जी ॥श्री०॥५०॥

ढाल ६ मी ॥ तर्ज– पपैया काय मचावत शोर ० ॥

कुँवरों पै कोप्यो गज अनपार, भांज के स्थंभ दियो भू-डार ॥टे
हो मद-मस्त गजानन घूँमे, जो देखे जाही के झूमें, करदे फाड़ विफाड़ ॥कुँ०॥
कोलाहल मचियो है भारी, भाग छूटगा सब नरनारी, छिपग्या है सरदार ॥कुँ०॥
नामी गज नायक गज मांही, युद्ध सहायक बल असहाई, रिपु धूझे सुनतार ॥कुँ॥
दोनों राजकुँवर के ऊपर हाथी लपक्यो है दृग भर कर, मचगयो हाहाकार ॥कुँ॥
फोज, रिशाला, पल्टन वारे, कुण जावे जावत वो मारे, कौन करें उपचार ॥कुँ॥

– कवित्त –

काल औ वैताल झाल आग-सी विशाल भाल-
आवे कौन चाल साल छाती पै वजर सो।
आँखें लाल-लाल ढाल ओपत कराल शीश-
सूँड औ त्रिशूल दन्त वदन कजरसो।
दोड़तो वजार मध्य उचक्यो कुँवर-प्राण-
लेन वो आतुर अती हरीन्द हजरसो।

भूपत सचिव सरदार पारावार लोग–
प्रभु ने अरज करे कुँवर सजरसो ।। १ ।।

– ढाल - मूलगी –

राज्य प्रजा सब लोग लुगायों, खड़ा डागले देखे।
हे भगवान ! बचे जो कुँवर, जन्म हमारो लेखे जी ।।श्री०।।५१।।
मोहन गारी सूरत प्यारी, अररर यह मरजासी।
हाय! हरामी दुष्ट हस्तियो, पातक किसो कमासी जी ।।श्री०।।५२।।
दुनियों डरे, कुँवर नहिं कंपे, सामी लियो वकार।
क्यों पाडिया मौत आई तुझ, लूण-हरामी जार जी ।।श्री०।।५३।।

– कवित्त –

अमर कुँवर होय सधर संभायो करी–
भमायो भवानो जिम रीसलाय डावरो।
फेंकियो गगन फेरु घूमायो गिरिन्द भांति–
शिला पै पछार डारचो जैसे धोबी कापरो।।
पौरुष अमाप आज देखके जहान बोली–
धन्य वीर वांके लाल भाग्य वड़ो रावरो।
दौर के पधारे भूप कुँवर वधाय लियो–
दूध तूँ दिपाय दियो गोद बीच आवरो।।१।।

* दोहा *

देश, जाती पुनि धर्म अरु, शरणागत को साज।
देन भलो घर जन्मियो, हे सूरां - शिरताज! ।। १ ।।

सज्जन एक दीसे नहीं, नित नया म्हांखसी सोत - मा जाल के ।। १ ।।
हिम्मत नहीं हारणी सोचलो, हिम्मत हारियों पत बिकजाय के ।
पत गयों प्राण किण कामरा, जल बिन माछरी जीव विसराय के ।।टेर ।।
वयरसी उत्तरयों वदे, दादा भाई ! अब क्यों करो जेज के ।
कुण इत आय बुचकारसी, बापरो देखियो हदबिन हेज के ।।हि० ।।२।।
जिणदिन मातजी मरगया, उणदिन सूँ ही सेवों वनवास के ।
पुण्य पूरा नहीं बांधिया, फिर इत रेवणो सहवणी त्रास के ।।हि०।।३।।
पाय पड़िया गुरुदेव रे, गदगद हृदय जल आँख में लाय के ।
दीठी अदीठी मैं जावसों, द्योजी आशीस शिर हाथ धराय के ।।हि०।।४।।
शुभ दिन आवियों आवसों, आपरी सेवना करोंला दिल खोल के ।
भेट में हार दो रत्नना, चरण में धरदिया मूल्य अनमोल के ।।हि०।।५।।
ब्राह्मण कहे वच्छ ! साँभलो, फिकर कीजो मती जबर तकदीर के ।
संपदा पग-पग पामसो, विसरजो हम भणी मत दुहुँ वीर के ।।हि०।।६।।
पश्चिम पंथ - लो पाधरो, वेला अभीच अमृत-सिधि-योग के ।
राज्य भण्डार सुख साहिबी, भल तुम भाइड़ा ! भोग-सो भोग के ।हि०।।७।।
ब्राह्मण सीखले घर गयो, असन बणाय लेगो तस लार के ।
कुँवर ममता तज गेहनी, चपल पणे चालिया ताजे तोखार के ।।हि०।।८।।
कागद एक नृप देण को, देकर भृत्य को सचिव के द्वार के ।
पारितोषिक उनको दियो, अन्य नौकरन को भल उपहार के ।।हि० ९।।

– दोहा –

दल में यों दर्शावियो, प्रथम चरण परणाम
धन्यवाद, निज सुतन को, व्यर्थ किया [illegible] ।। १ ।।
मात मरी, हम वन चले, तुम [illegible]
म्हाली के वश होय के, [illegible]

— ढाल-मूलगी —

शंको जमियो जोर रो सरे, कुँवरों रो सब शहर।
बालपणे इसड़ो है पौरुष, पूर्व पुण्यों की लहर जी ॥श्री०॥५६॥
मन्त्री मन में जाणियो सरे, हाथी - तणो उदन्त।
मावत पुनि राणी कियो सरे, मारन-हित एकान्त जी ॥श्री०॥५७॥
तो भी नृप से कहा न किंचित्, समय जाण प्रतिकूल।
कुँवरों रा दिन पाधरा सरे, शूल हो गया फूल जी ॥श्री०॥५८॥
सबसे मिलिया राजकुँवर दुहुँ, सरस सभ्यता साथ।
जबर काम कर जस लियो सरे, गजसूँ घालो बाथ जी ॥श्री०॥५९॥
मातासूँ मुजरो करवाने, जावे महल मँजार।
वाटों ऊभा जो रया सरे, भर मोतियन को थाल जी ॥श्री०॥६०॥

ढाल १० मीं ॥ तर्ज- सुणजो जी शील सुहावणो० ॥

थें भल आया लाल जी!, मैं जोती हो वाटों हरवार।
आज दिहाड़ो धन्य है, कांई पायो हो थाँरो दीदार ॥१॥
देखो कपट या केलवे, कांइ कपटण हो कुँवरों रे साथ।
पर भव सूँ डर पै नहीं, वा करणी हो च्हावे है घात ॥टेर॥
हाथी थाँ पर भीमरयो, देखो म्हारो हो दिल हुवो वेथाल।
पिण हो पुनरा पौरषा, हाथी मारी हो कियो काम कमाल ॥दे०॥१॥
कुँवर कहे कर-जोड़ ने, म्हांने मिलिया हो माजीसा आप।
यों आंणद अणमापरो, म्हारा टलिया हो सारा सन्ताप ॥दे०॥२॥
मिलजुल सभा पधारिया, कांई जावणरी मांगी है सीख।
राजा कहे पधारिये, अव आवणरो हो समय नजदीक ॥दे०॥३॥
कला सकल थाँ सीखली, कांइ राज - काज हो झेलो हाथ।

पुत्र हुये अरु ना हुये, होवरा - वारी होय।
वर्ष मास में आप सब, परतख लीजो जोय ॥ ३ ॥

ढाल २० मी ॥ तर्ज— पंथीड़ा! बात कहो धुर छेह थीर० ॥

दोनों रे दोनों बन्धव चालिया रे, पश्चिम दिशा प्रधान रे।
हुवा रे शकुन महा सश्रीक ही रे, पन्नग दाहिण जाण रे ॥ १ ॥
वीरा रे वीरा गया विदेश में रे ॥ टेर ॥
फुण पर रे मेंढक आछो ओपतो रे, दच्छिन रूपारेल रे।
वामो रे खर निज शब्द सुणावियो रे संमुख कुंभ सु-चेल रे ॥ वी० ॥२॥
योजन रे योजन एक रे आँतरे रे, नदी नर्मदा तीर रे।
ब्राह्मण रे ब्राह्मण जोवे वाटड़ी रे, भोजन सह गो क्षीर रे ॥ श्री० ॥३॥
इतने रे इतने में दुहुं आविया रे, गुरुदेव ने देख रे।
उतरी रे उतरी पद-वन्दन कियो रे, सुख मान्यो है विशेख रे ॥ वी० ॥४॥
भोजन रे भोजन भल जीमाविया रे, कीनो तिलक लिलार रे।
शिक्षा रे शिक्षा देय विदा किया रे, पोख्यो प्रेम अपार रे ॥ वी० ॥५॥
अपरा रे अपरा सो अलगा रह्या रे, सुपना-सो ओ खेल रे।
गप ना रे गप ना साची बात है रे, अन्तर पैदल रेल रे ॥ वी० ॥ ६ ॥
दिनभर रे दिन भर चाल्या एकसा रे, कोश लंघिया साठ रे।
संध्या रे पहुंच्या वापी पास में रे, वन है घणो विराट रे ॥ वी० ॥ ७ ॥

– ढाल-मूलगी –

वापी सुन्दर भल जल पूरित, लेत हवोला हद्द।
घोड़ा ढाल्या सघन घास में, स्नान करी ते सद्द जी ॥ श्री० ॥ ७६ ॥
भोजन जीम्या साथ को सरे, बैठा जीण विछाय।
मनहर पाज पे दोनों बन्धव, जलचर खेल दिखाय जी ॥ श्री० ॥ ७७ ॥

म्हांने नचीता कीजिये, सब च्हावे हो आपणड़ो साथ ।। दे० ।। ४ ।।
सेवा में हाजर खड़ा, जो कुछ हो फरमावो राज ।
हाल कला अभ्यास-सो, कांइ चिन्ता हो राजों - शिरताज ।। दे० ।। ५ ।।
यों कही गया उद्यान में, सब कलाचार्य ने दाखी बात ।
सुनकर द्विज मन सोचियो, आ राणी हो मांड्यो उतपात ।। दे० ।। ६ ।।
पढ़े लिखे शिक्षा ग्रहे, कांइ मुखपर हो नहिं जरा मिजाज ।
विनय भाव राखे घणो, कांइ आखों में है लाज लिहाज ।। दे० ।। ७ ।।

— छप्पय - छन्द —

कला - तणां वे कोष, दोष दुर्व्यसन विसारे ।
बलशाली बुधवन्त, काम देख्यों रो धारे ।।
नियमलिये जो धार, प्रेम से निशि दिन पारे ।
गुण - ग्राही गुणवन्त, देखके औगुण टारे ।।
चढति आयु, चातुर्यता, चञ्चलता चित ना [illegible]
युगल - जोडि जो देखले, नयनों में इम[illegible]

— सोरठा —

निज माता रो नेह, पुण्य - [illegible]
तृण सूखा सो तेह, सोत - [illegible]

ढाल ११ मी ।। तर्ज– [illegible]

दुर्जन रे नहीं दया रती, [illegible]
श्वान पूँछ सीधी [illegible]
[illegible]
बोले मीठा बोल [illegible]

कैसी दशा करी कर्मों ने, तनाजान हो दोय ।
कांइ करणो प्रोग्राम अगाड़ी, सफल काम व्है सोय जी ।। श्री० ।। ७८ ।।
इतेक खेचर उठे उतरियो, पूछन हुवो तैयार ।
कठे जावणो, आया कठासूं, भाखो सयल विचार जो ।। श्री० ।। ७९ ।।

❊ दोहा ❊

चख चंचलता लख चटक, जख दीनो न जबाब ।
अख आतुर चातुर चसक, भख भय लाय रबाब ।। १ ।।

ढाल २१ मी ।। तर्ज– मासखमण रो मुनि रे पालणो रे० ।।

पहले परकाशो परिचय पंथिया रे, दाखे है अमरसेण खग-साथ रे ।
सो कहे अठे भय है आकरो रे, सिंह नवहत्थो आवे रात रे ।। १ ।।
सुणजो रे वीर - नरों री वातड़ी रे, आवेला इणमें सु - रस अपार रे ।।टेर।।
मारे है जलचर और नरों भणी रे, किणने नहीं धारे है शैतान रे ।
जावो अठासूं घोड़ा ले करी रे, प्यारा जो होवे अपणा प्रान रे ।। सु० ।। २ ।।
थांने कंई मालुम इसड़ो केहरी रे, वीतो थांरा में कदे बयान रे ।
भेद खोलोनी तोलों जीवमें रे, म्हांतो नहीं डरपो मिले को आनरे ।। सु० ।। ३ ।।
खेचर खास लाय विसवास ही रे, वोला मैं निवसूं गिरि वैताढ़ रे ।
आनो जानो है म्हारो इत सदा रे, जिणसूं जाणूहूं सिंह रो गाढ रे ।। सु० ।। ४ ।।
मैं तो चेताया मानव जाणने रे, आगे मर्जी ज्यों करिये आप रे ।
घरसूं मिलवारी होवे भावना रे, जावो जल्दी सूं भाखूं साफ रे ।। सु० ।। ५ ।।

– सवैया –

घर छोर दियो वसवो वन में, जिन में मन मोद रहे हमको ।
परवा नहि आनत है कब भी, जब भी कित काम बने अबको ।।

नीच गति ज्यों नीर छती ॥ दुर्जन० ॥२॥
नहि माने उपकार कियोड़ो, शीघ्र विगाड़े काम वियोड़ो,
वो नहि माने जती सती ॥ दुर्जन ॥३॥
जालसाजी घड़ता रहै नितका, पता पड़े नहि उणरे चितका,
नीति-शास्त्र में बात कथी ॥ दुर्जन० ॥ ४ ॥
परभव विगड़े तो भल विगड़ो, लाखों ही सुधरे नहिं नुगरो,
संगत खोटी जाणो अती ॥ दुर्जन० ॥ ५ ॥

– ढाल–मूलगी –

शोकों दुख दीधो सीता ने, रामायण ने देखो ।
घरका परका हुवो कोई भी, दुष्टों रे नहीं लेखो जी ॥ श्री० ॥ ६१ ॥
राणी विष-मिश्रित दो मोदक, सुन्दर कीना त्यार ।
अति-सुगंधित घृत मेवा-युत, मृगमद केशर - डार जी ॥ श्री० ॥ ६२ ॥
रत्न कचोले ढाँकी दीधा, दासी केरे हाथ ।
जाय वाग में देकर आओ, कुँवर सहाब के आथ जी ॥ श्री० ॥ ६३ ॥
दासी जाय दिया कुँवरों ने, राणीसा भिजवाया ।
दोपारी में आप अरोगो, प्रेम सहित फुरमाया जी ॥ श्री० ॥ ६४ ॥
दासी पाछी गई रावले, कुँवर भोजन री टेम ।
दिखा गुरु को खावण च्हाया, आखे पाठक एम जी ॥ श्री० ॥ ६५ ॥

ढाल १२ मी ॥ तर्ज– फागण होरी० ॥

मति खावो रे लाडूड़ा वालूड़ा० ॥ टेर ॥
यह लाडूड़ा ठीक नहीं है, मने दीसे है जादूरा ॥ म० ॥ १ ॥
रस भरिया नहि विप भरिया है, जैसे कटोरा कादू रा ॥ म० ॥२॥
क्रिया-हीन जे शिथिलाचारी, भेपधारी ज्यों साधूड़ा ॥ म० ॥ ३

परनार गिने भगिनी जननी , फिर खा-न सकै कित भी ठपको ।
भल चोर मिले अरु ढोर मिले, घनघोर जुड़े रण जो जगको ॥१॥
भिरवो लरिवो सब याद हमें, करिवो निज काम विना डर रे ।
पर पैर धरै हटवा वहतो, मन - भावत नांहि रती - भर रे ॥
मन - भीति भरे रिपु से जु डरै, धिक काह कहावत वो नर रे ।
रजपूत रहै मजबूत घनो , तस मानहु वंश उजागर रे ॥ २ ॥

– शिखरिणी-छन्द –

सुनी बातें सारी प्रबल बलधारी समझगो ।
गुनी ये हैं भारी वदन मन - हारी युगल है ॥
सुनादूँ मैं सारी परवश सु नारी दुख सहै ।
मिटादेंगे कारी विपद विकरारी मन कहै ॥ १ ॥

ढाल २२ मीं ॥ तर्ज– भजले भल भगवान अरे मन मस्ताना ॥

कहूँ कुँवरसा बात ध्यान से सुन लेना ।
जिसपर सोच विचार हमें उत्तर देना ॥ टेर ॥
रंगपुर शहर सूर्ययश राजा, महा प्रतापी न्यायी ताजा ।
चंद्रावती तस नार , शील का तन गहना ॥ क० ॥ १ ॥
राणी संग नृप वाग सिधाया, जोगी एक अचानक आया ।
उठा ले गया नार , पता कुछ भी है ना ॥ क० ॥ २ ॥
राजा ने डूँडी पिटवाई , पता लगावे जो कोइ जाई ।
देऊँ मान अपार , भूलूँ ना दिन रेना ॥ क० ॥ ३ ॥
केइ गया वापिस नहिं आया, मैंने पिण यह काम उठाया ।
वीते महिने चार पार विन दुख पैना ॥ क० ॥ ४ ॥
आखिर पाया पत्ता उसका, जो लेगया था जोगी जिसका ।

ां खायों सूँ जाणलीजिये, परभव जाणो लालूरा ! ॥ म० ॥ ४ ॥
ऊपर सुन्दर, खोटा अन्दर, वचन मानलो माधूरा ॥ म० ॥ ५ ॥

– सोरठा –

करी परीक्षा ताम, साच कथन निवड़्यो जवै ।
राम - राम यह काम, माता होकर क्यों करै ॥ १ ॥
म्हां तो एक छदाम, व्हां सूँ विरवा हाँ नहीं ।
नाहक आठों याम, घाट घड़े विन - काम रा ॥ २ ॥

ढाल १३ मी ॥ तज– फागण होरी० ॥

दुश्मन रो है कांई रे भरोसो० ॥ टेर ॥
ः विसवास गलो ले वाढी, जैसे कटोरो आक करो सो ॥ दु० ॥१॥
जल नहीं झिलसी सोचो जरासो, साफ फूटोड़ोरे देखो घड़ोसो ॥ दु० ॥२॥
सावचेत अब सदा रेवणो, पिण न दिखाणो है अभरोसो ॥ दु० ॥३॥
मरणारो हाको नहीं सुणियो, राणी जीव चढियो चकरोसो ॥ दु० ॥४॥
विष सहलाणी लाय दिखासी, सारो माजनो होसी भदरोसो ॥ दु० ॥५॥
इसीलिये कोई युक्ति रचादूँ, जाल विछावूँ तेल वड़ोसो ॥ दु ॥६॥
शौकड़ली गे चिन्ह मिटादूँ, सोगे जीव मुझ हुवे जरोसो ॥ दु० ॥७॥

– सोरठा –

नागण, वाघण, आग, अणछेड़्यो अनरथ करे ।
छेड़्यो ले कुण थाग , सूर्पनखा किसड़ी करी ॥ १ ॥

ढाल १४ मी ॥ तर्ज–भँवर थांरी नागोरन नारी हो, भँवर० ॥

चिरताली चरित रच्यो छाने रे, चिरताली चरित रच्यो छाने ।
उणने छोड़ और कोई भी , सुपने नहीं जाने ॥ टेर ॥

वही शेर अवतार बनी निर्भय रहेना ॥ क० ॥ ५ ॥
काबू में आसकता नांही, विद्या अनेकों सिद्ध सदाई।
करता अत्याचार धारे नहीं वो कहेना ॥ क० ॥ ६ ॥
स्नान करन सिंह बनकर आता, वापी-जलमें छोल मचाता।
है यह सारा हाल मानलो सच वेना ॥ क० ॥ ७ ॥

— दोहा —

परवश पारहि दुख प्रबल, इन नृप चिन्ता पूर।
सूर विना कुण कर सकै, दुस्सह दुख यह दूर ॥ १ ॥

ढाल २३ मी ॥ तर्ज- अष्टपदी लावणी० ॥

अजय श्री अमर कहे वानी, हाल सब लीना दिलठाना।
बनेंगे अब हम अगवानी, होय जगदम्बा वरदानी ॥

— दोहा —

नष्ट करूंगो दुष्ट को, इष्ट वचन है एक।
पुष्ट प्रतिज्ञा मांहरीस कांइ, सिष्ट सयल लो देख ॥
नेक दिल कथा सुनो सारी ॥ १ ॥
कुंवर है कैसा उपकारी, धन्य है धीरज जो व्हांरी ॥ टेर ॥
स्वार्थ-वश शोस भरे पाणी, स्वार्थ-वश भार वहै प्राणी।
रणांगण मरे हो अगवानी, स्वार्थ से बने दास सानी ॥

— दोहा —

अकज करे, वन्ही जरे, पड़े पाड़ से जाय।
नाना दुख स्वारथ - वश भोगे, इस दुनियों में प्राय ॥
परमारथ करे न भल तारी ॥ कुं० ॥ २ ॥

पेट पीड़ ऐसी करी सरे , तड़फ रही अकुलाय, राणी वा तड़फ० ॥
हक्की बक्की दास्यों हो कहे , कांइ हुवो है माय ॥ चि० ॥ १ ॥
हाय हाय करती कहे सरे, म्हारी आयगी मोत, दासियों म्हारी० ॥
राजाजी ने जरद बुलावो , बुझे प्राण की ज्योत ॥ चि० ॥ २ ॥
दास्यों दौड़ गई राजा पै , रोवतड़ी कहे वेन, भूप से रोवतड़ी० ॥
वेगा राज पधारो महलों , राणीसा बेचैन ॥ चि० ॥ ३ ॥
पृथ्वी पति महलों में पहुंच्यो, देखी दशा खराब, राणीरी देखी० ॥
डाक्टर, वैद्य, हकीम बुलाया , आया सभी सताब ॥ चि० ॥ ४ ॥
मूर्च्छित पड़ी अंग सब ठंडो, चैतनता नहि तार, देखियो चेतनता०॥
राणीसा रा महल में सरे , मचियो हाहाकार ॥ चि० ॥ ५ ॥
नानाविध उपचार करत कुछ,जराक खोली आंख,राणी वा जराक०॥
राजा कहे राणीसा कैसे , बोलो हमसे झांक, ॥ चि० ॥ ६ ॥
हिलतों डुलतों घड़ी एक सूं , रोई बागोंपाड़ , राणी वा रोई० ॥
राजाजी री गोद में सरे, पड़े अश्रु की धार ॥ चि० ॥ ७ ॥

— दोहा —

विस्मित हो वसुधाधिपति, सोचे क्या है द्वन्ध ।
पूछ्यों बिन पत्तो कंई, पड़े न बात सम्बन्ध ॥ १ ॥

ढाल १५ मी ॥ तर्ज— अलगी रहनी० ॥

काइक बोलो, बोलो बोलोनी बोलो मुखड़ो खोलो ॥ टेर ॥
दासी दास नौकर सब रोवे, जीव म्हारो उचकायो ।
अकस्मात थांरे कांई होग्यो, वदन - कमल कुम्हलायो ॥ मु० ॥१॥
गद गद बोली खावत डुसका, शीश हमारो कापो ।
ओ अनरथ देख्यो नहि जावे, शक्त हुवे सन्तापो ॥ मु० ॥२॥

पुनरपि पूछै खग-तांई, ठिकाना जाना के नांही।
अगर हो तेरे ध्यान मांहो, चालकर बतलादे भाई!

० दोहा ०

सो कहे देखो सामने, शैल बड़ो रमणीक।
सरिता-तट गह्वर है मोटी, अटवी बड़ी नजीक॥
धूर्त वहाँ निवसे बलकारी॥ कु०॥ ३॥
घूमता निशिचर निश्शंका, मदान्धी अनड़ महा वंका।
दया का अंश नहीं अंका, भूप केइ छोड़े कर रंका॥

० दोहा ०

अर्द्ध-रयण वापी तरण, करण छोल वारीय।
जो देखे, भक्षण करे सरे, सीह - रूप धारीय॥
गूंज सुन हिया देत फारी॥ कु०॥ ४॥
वयर से अमर इसी आखी, अश्व दो लेजा वन-राखी।
पहरा मैं देसूं एकाकी, देखलूं किसोक है डाकी॥

— दोहा —

उस पर्वत की छोर पै, रहना तूं हुंशियार।
ला-परवा रखजे मती सरे, कर रखना करवाल॥
मिलूंगा ऊगत दिनकारी॥ कु०॥ ५॥
वयरसी आज्ञा-अनुसारी, अश्व ले चाल्यो ततकारी।
पहुंच्यो जहाँ पर्वत सरितारी, रात है गहरी अंधियारी॥

— दोहा —

मारग नहिं, झाड़ी विकट, वनचर भरया विराट।

इसी किसी है आपद थांने, म्होने जरद सुनाश्रो।
सारों ने काढ़्या है बाहिर, अब मत शंका खाओ।। मु० ॥३॥
कांई कहूँ अन्दाता! कहतों, कालो मूँडो हुय जासी।
विन केया पिण रह्यो न जावे, है दो-तर्फी फांसी॥ मु० ॥४॥
पुगता खबर मिली है म्होने, सात दिनों के मांही।
आप मार, सुत राज लेवेला, छाने बात सुणाई।। मु० ॥५॥
या सुणता धसको मन पड़ियो, अब म्हारो कंई होसी।
जद मैं जरदी सूँ बुलवायो, आयो विदेशी जोशी॥ मु० ॥६॥
वो पिण करड़ा दिन तुम भाख्या, जिणसूँ मैं घबराई।
'मिश्री मुनि' कहे राणी-कथन सुन, भूप गयो चकराई।। मु० ॥७॥

— ढाल–मूलगी —

मतकर चिन्ता, स्वस्थ्य रहो प्रिय!, प्रकट करूँ प्रतिकार।
बात कठातक है या साची, जाची करूँ जहार जी।। श्री० ॥ ६६ ॥
देई दिलासा भूप सचिव को, लीनो पास बुलाय।
बात अनोखी सुणतों मंत्री, आलोचे मन मांय जी।। श्री० ॥ ६७ ॥

ढाल १६ मीं ॥ तर्ज– काच की किंवाड़ी मांहे लोह खटको० ॥

राजाजी! विचारो यह तो जाल जबरो।
म्हारी जो मानो तो अब लेवो सबरों ॥ टेर॥
म्हारी शल्ला नहीं मानी, मनचाही दिल ठानी।
बनगी दुखद कहानी, सुन ऐसो खबरों॥ राजा० ॥१॥
बात जचै नहीं ऐसी, आप फरमाई जैसी।
कहणेवाला कही कैसी, नाग चितकबरो॥ राजा०॥२॥
दोनों कुँवर दयाल, एड़ो लावे नहीं ख्याल।
गूँथ्यो बुरो गोलमाल, यवा पको टपरो ॥राजा०॥३॥

तुरी थकित श्रम से भये सरे, घणो अघट है घाट ।।
नदी तट ठहर्यो सुविचारी ।। कु० ।। ६ ।।
घोडों री पग - चंपी करके, चरण को ढाल्या मन भर के ।
भवानी हाथों लेकर के, बैठगो भाड़ी छिपकर के ।।

— दोहा —

अमरसिंह वापी निकट, वड़ - कोटड़ के मांय ।
अर्द्ध-रयण होते पंचानन, गजब रहा गूंजाय ।।
पड़्यो वो वापी मझधारी ।। कु० ।। ७ ।।
उछाले पाणी विन-मपरो, खा-रयो जलचर भी धपरो ।
पाप से भरे खास टपरो, काम नहि त्याग और जप रो ।।

— दोहा —

पहर एक वीत्यों पछै, ऊंडो वड़्यो अथाग ।
फिर निकली मारग लियो सरे, चड़्यो मान रो छाग ।।
कुंवर पिण लाग्यो तस लारी ।। कु० ।। ८ ।।
चले है दवे पांव तखरो, भेद नहिं पायो है भखरो ।
सरीता पास जाय नखरो, पलटियो सिंह रूप मखरो ।।

— दोहा —

चौकस कर चारों दिशां, गयो जु गह्वर-गेह ।
अमर कमर काठी कसी सरे, निर्भय घुसियो तेह ।।
चलाकी चली नहीं व्हांरी ।। कु० ।। ९ ।।
करी शृंगार सभा जोड़ी, सुभट केइ ऊभा मद-मोड़ी ।
खबर नइ आई क्या ओरी, सुनादो काहुं बल-फोरी ।।

मेरे साथ आप चालो, नीती केरी वहाँ भालो।
खाली घास रो है मालो, रहियो नहीं ढबरो ॥ राजा० ॥४॥
दोनों बाग मांही आवे, वात विप्र को सुनावे।
विप्र प्रत्युत्तर दिरावे, विष दियो जवरो ॥ राजा० ॥५॥

– ढाल-मूलगी –

दासी मोदक लाय दिया दो, मुझको शंका आई।
कीनी परीक्षा साच निवड़गी, पिण किसको न सुणाई जी ॥श्री०॥६८॥
नृप कहे क्यों ना आय सुणाई, रखी बात क्यों छानी।
निर्णय करके देतो ठपको, भूल मानती राणी जी ॥ श्री० ॥ ६९ ।
बढ़ती राड़ देख नहिं भाखी, विप्र वदे महाराज ! ।
यह भी क्या पहले भी छोड़ा, मारण को गजराज जी ॥ श्री० ॥ ७० ॥
इन दोनों में कौन सत्य है, रहस्य भरी या बात।
कुँवर बुलाय महीपति भाखे, कैसे वण्या कुपात जी ॥ श्री० ॥ ७१ ॥
मुजको मारण थां दिल धारी, भूल सभी उपकार।
क्या दूँ दण्ड बतादो मुझको, करन लगे अपकार जी ॥ श्री० ॥ ७२ ॥

※ दोहा ※

जिती वात स्वामिन् ! कथी, रती सत्य ना तात ! ।
तो भी जचगी आपरे, दण्ड दीजिये नाथ ! ॥ १ ॥
वहस करों कंई वापसूँ, फरमावो क्या सार।
भलो नहीं, भूँडी लगे, हँसे सयल संसार ॥ २ ॥

ढाल १७ मी ॥ तर्ज–या हसीना वस मदीना, करबला में तूं न जा० ॥

लाखों नाहक मरगये, जिनका न नाम निशान है।

— दोहा —

एक खबर ऐसी मिली , अश्वारोही दोय ।
आया वापी आसना सरे , गये कहाँ लिए जोय ॥
पता नहिं पाया सरकारी ॥ कु॑० ॥

— दोहा —

वन सारो हम ढूंढियो , एक एक तरू डाल ।
गायब ऐसा हो गया, सरे चकमो दियो कमाल ॥ १ ॥
छुप्यो कुँवर सब ही सुणे, पुनि देखे सब ढंग ।
शाही ठाठ जमारख्यो , आज्ञा वहै अभंग ॥ २ ॥

— कवित्त —

पड़ा बेशुमार धन - ढेर अस्त्र शस्त्रन को,
महल अटारियों की शोभा विन - पार है ।
जेल में पड़े है घने, सिड़े है अनेकों शेठ,
राजा, बादशाह केई केदी जो करार है ॥
सारा सरदार तास निश्चर समान अघ-
करवा ने आगे रहै दया को विसार है ।
मरे सो मूरख हम कभी ना मरन हारे,
ऐसा वो घमण्डी बोल बोले हरवार है ॥ १ ॥

ढाल २४ मी ॥ तर्ज— कांइ रे जवाब करूँ रसिया० ॥

देखो मिजाज करे नर कितनो, तो, कितनो कितनो रे मेरू जितनो ॥ टेर ॥
यों नहीं सोचे हो जासी तड़ को, तो, सूखो पत्तो किम रहसी रे वड़ को ॥दे०॥१॥
खाना पीना ने नाना रे धोना, वो, भोग - विलास में जीवन खोना ॥दे०॥२॥

जहां पक्ष का दौरा चले, उत सत्य को नहिं स्थान है ॥ टेर ॥
यदि प्रेम होता आपको, उस रोज का जो बयान है।
क्या लिया निर्णय बतादो, किया गज तूफान है ॥ ला० ॥ १ ॥
बस, छोड़दो बातें सभी, अरमान अपना काढ़लो।
मंजूर है हमको पिता !, नहिं हटैं जो इन्शान हैं ॥ ला० ॥ २ ॥
उफ-तक कहेंगे हम नहीं, तैयार हैं शिर लीजिये।
खुश रहे अम्मा सदा, बस एक येहि बयान है ॥ ला० ॥ ३ ॥
सुनना न चह्वाता लब्ज आगे, कौन अब फरियाद है।
फरजंद पै फिर महर वां, क्या कृपा और महान है ॥ ला० ॥ ४ ॥
यदि दूसरा होता यहां, तब बात बनती और ही।
वालिद हमारे आप हैं, हम मानते भगवान हैं ॥ ला० ॥ ५ ॥

— कवित्त —

वागवान वाग का विनाश काज अग्र बढ़े,
वाड़ खाय काकड़ी को कौनसा इलाज है।
जरे चाँद सेती आग सुधा यदि प्राण लेत,
तिय लाज हरे पति काय को मिजाज है॥
सेवक की शान हरे अगर मालिक होय,
इष्ट नष्ट करे भक्त रखे कैसे लाज है।
वाप होय बालकों पै झूठा इलजाम धरे,
मिश्री कहाँ अर्ज करे डुबा देवे ज्हाज है ॥१॥

— सोरठा —

बोल सक्यो ना वाप, घेरचो घोड़ों गढ़ भणी।
कहे सचिव से साफ, माफी अब मँगवाय दे ॥१॥

मरण रो डर तो मूलसूँ भूला, तो, खाय रया अभिमान में भूला ॥दे०॥ ३ ॥
बड़का बोला ने औगुन गारा, तो, चोर, लुटेरा महा - हत्यारा ॥दे०॥ ४ ॥
'मिश्री' कहे मूरख नहीं माने, तो, अकड़ाई में अधिको ताने ॥ दे० ॥ ५ ॥

० दोहा ०

अश्वारोही दुहुँन को, क्यों नहिं लाये शोध ।
पड़े रहो, पत्ता नहीं, बोला लाकर क्रोध ॥ १ ॥

ढाल २५ मी ॥ तर्ज- अनन्त चौबीसी० ॥

कापड़ो कल कलियो भाखे वचन करूर,
जा विजयसिंह तूँ शोधी-लाव जरूर ॥
छलबलिया छोरा कोरा क्यों बचजाय,
मुझ आन शान में बट्टो ही लगजाय ॥१॥
ले भृत्य साथ में विजय चल्यो तिहिं वेर,
अमर-कुँवर भी लागो तिणरी लेर ॥
भट भमता भमता वयरीसीह विलोक,
कर हाकल ऊभा चारों मारग रोक ॥२॥
बोलो कित जासो हेरी हुवा हैरान,
तुझ बलि चढ़ासों देवी के भल स्थान ॥
दूजो अब कहाँ है वतला अरे गिंवार,
दोनों ने साथे ले - जासाँ दरबार ॥३॥
सुनतों ही ऊठयो सूरां रो सुलतान,
पहली मैं थाँरो दे देसूँ बलिदान ॥
क्यों हुवो ताकड़ा आजाओ मैदान,
लपरायों छोड़ो वश में राख जबान ॥४॥

गढ़ में पहुँच्यो भूप, कुँवरों से मंत्री कहे।
चंपत होगइ चूँप, साम्हा बोल्या बाप रे ॥२॥

ढाल १८ मी ॥ तर्ज– शिक्षा दे रही जी, हमको रामायण अति०

माफी मांगलो रे कुँवरों, कांइ विगरे इणमांय ॥टेर॥
लौड़ीजी राजा को आँटी, ऊँधी दी पकराय।
जिणसूँ पड़ी भर्मना काठी, भूप हृदय के मांय ॥मा०॥१॥
राजा सरल, कपट में किंचित, समझे नहिं कहुँ साच।
माफी मांग्या रीस ऊतरसी, पाच बने नहिं काच ॥मा०॥२॥
कैसे माँगलां जी क माफी, विगर गुन्हें म्हाँ आज ॥टेर॥
मरण रो डर नहिं है म्हांने, डर करतों अन्याय।
अन्यायी ने आत्म - समर्पो, लाजे म्हारी मांय ॥ कैसे० ॥ ३ ॥
होणी सो तो हुयां रेवसी, कारी लगे न कोय।
है धिक्कार जीवणो जग में, अपणी इज्जत खोय ॥ कैसे० ॥ ४ ॥
और कहो सो हम कर लेवें, भले कठिन हो काम।
कायरता री बातों म्हांने, नहीं करावे राम ॥ कैसे० ॥ ५ ॥

– ढाल - मूलगी –

गयो सचिव राजा पै सीधो, कही हकीकत सारी।
वे नहिं आन गमावन - वारा, मैं समजागयो हारी जी ॥ श्री० ॥ ७३ ॥
वात आपरी जरा न सच्ची, झूठ पगों किम चाले।
हाथी को कौतुक, विष देणो, कहो न किणने शाले जी ॥ श्री० ॥ ७४ ॥
वात सांवटणी पड़सी मंत्री !, ऐसी अकल उपजावो।
राणो, कुँवर रहे दुहुँ राजी, शुद्ध राह समजावो जी ॥ श्री० ॥ ७५ ॥

ढाल १९ मी ॥ तर्ज– सतीय शिरोमणि अंजना० ॥

अमर कुँवर कहे वयरसी, अब इत रहवण में नहीं सार के।

ले खड्ग झपटियो मानो ज्यूँ वनराज,
वो विजयसिंह भी भिड़ियो सन्मुख गाज ॥
छोरा क्यूँ छलके शिर पर आई मौत,
तूँ तिरचो तलाई मैं दरिया रो गोत ॥५॥
आपस में अड़िया टाल्या नहीं टलंत,
वन गूँजरा लागो मानो भीम भमंत ।
लियो विजय पछाड़ी साथे जे सामन्त,
सब मार-गिराया वयरसीह बलवन्त ॥६॥
अमरसिंह चौड़ होकर, दी स्याबास,
हे बन्धव ! तूँने किया शत्रु का नास ॥
अब चालो उनपै जोवाँ कितोक जोर,
पर विद्या उसपै खग कहतो घनघोर ॥७॥
होनी सो होसी डर-लानो है नांय,
घोड़े चढ़ चाल्या पर्वत पश्चिम प्राय ॥
इक जोगी खिखर तपस्या तपै करूर,
उत पहुँच्या जाई उभय कुँवर गुरा-पूर ॥८॥
योगी कहे बच्चों ! जबरो साहस कीन,
उपकार कररा में दोनूँ वीर प्रवीन ॥
लेकिन है टेढ़ी खीर पचानी एह,
वो जोगी जालिम कइ विद्या रो गेह ॥९॥

— ढाल–मूलगी —

लायक हो थें लाडला सरे, शररों आया आज ।
लेवो लकुट यो मांयरो सरे, सारो सुधरे काज जी ॥श्री०॥७९॥
जीत सकै नहि अब वो तुमको, दियो हाथ में दण्ड ।

जावो अधिक मत देर लगावो, गालो तास घमण्ड जी ॥श्री०॥८०॥

ढाल २६ मीं ॥ तर्ज– सुमति सदा दिल में धरो० ॥

नमन कियो चरणों-पड़ी, कहे धरदो शिर हाथ, गुरुजी ।
मांग्यों बिन मेवो दियो, देव-रूप साख्यात, गुरुजी ॥१॥
धन्य कृपा है आपरी, धन्य लियो भल योग, गु० ।
पूर्व पुण्यों सूं आपरो, मिलियो शुभ संयोग, गु० ॥ टेर ॥
पाछो ला मुझ सौंपजो, विजय-दण्ड परधान, बालूड़ा ।
शीघ्र सिधावो सिद्ध करो, अवसर उत्तम जान, बा० ॥ध०॥२॥
घेरचा हय हर्षित हुई, चाल्या बन विकराल, सलूना ।
साँझ समै गव्हर मिलो, हय तज कर दुहुं लाल, स० ॥ध०॥३॥
चतुर पणै छिपता थकां, जोगी सभा के पास, स० ।
ऊभा सुणे तस बातड़ी, जोगो पूछै हुल्लास, स० । ध०॥४॥
विजयसिंह आयो नहीं, कारण इण में कौन ?, स० ।
इतने में नर हाँफतो, बात प्रकाशे जोन, स० ॥ध०॥५॥
विजयसिंह मारीजियो, अरु मरिया जे साथ, स० ।
घातक गायब हो गया, सही बात है नाथ !, स० ॥ध०॥६॥
प्रजल्यो पापी सुणत ही, वदल्यो किणरो दोह, स० ।
छोडूं नहीं लख बात ही, जाणो लोह री लोह, स० ॥ध०॥७॥
अमर अगाड़ी आयने, लपक लियो ललकार, मिजाजी० ।
आव उरो मैं देखलूं, किसड़ो तोर करार, मिजाजी ॥ध०॥८॥
चन्द्रावती झट सौंपदे, या झेलो तरवार, मिजाजी० ।
सामो आय वकारियो, ढीलो वहै कांई ढ़ाल, मिजाजी० ॥ध०॥९॥

— सवैया —

धाज अनोखि अवाज सुनी हरि-भांति उठ्यो अब गाज करी ।

श्रृंगारित कन्या भई, आई माला कर - धार हो ।। सा० ।। २ ।।
अप्सर - सी आदर्श है, पेख्यों उपजे प्यार हो ।
ठहरी मण्डप बीच में, झांका पड़्या जनपार हो ।। सा० ।। ३ ।।
ज्यांका दिन है पाधरा, व्हांके घर या नार हो ।। सा० ।।
भाग्य - विना पावे नहीं, हुन्नर करो हजार हो ।। सा० ।। ४ ।।
दास्यों रा रमझोल में, ऊभी राजकँवार हो ।। सा० ।।
कौशलपुर-पति यों वदे, यह बतीसमी ढार हो ।। सा० ।। ५ ।।

— तर्ज— थियेटर —

भरी सभा में आम, कहे कन्या-पितु ताम, एक आयो ऐसो काम, मनचाह फले २,
सीह पिंजर में गाज रयो है, विना शस्त्र विन हाथ लगाय । यदि देवे उसे मार,
कन्या नियम विचार, पावे वोही वरमाल, कहूं साच साच साच २ ।। १ ।।
आप बड़े हैं झुंझार, बुद्धि-बल के भण्डार, जल्दी करो सरकार, वखत आयगई २ ।
पोल दिखाणी फबै नहीं है, क्षत्री-पन को रखिये आन । ज्यादा कहना भिकाल,
आप बड़े पृथिपाल, फोड़ो प्राक्रम विशाल उठो आज आज आज २ ।। २ ।।

— दोहा —

शब्द शाल विष व्याल सम, डंक लग्यो महिराण ।
जोर जाल महिपाल रच, आन ताल चे फाल ।। १ ।।
छल, बल, कल तिहुँ एक थल, मिले न हेर हजार ।
व्याह नहीं, यह व्याधि है, निश्चय लेहु निहार ।। २ ।।

ढाल ३३ मी ।। तर्ज— म्हारे व्याह पधारोला कांई जी० ।।

क्यों क्रोडों द्रव्य लगाया, क्यों स्वयम्बर यह रचवाया ।
यह फंदा आन लगाया, म्हारी स्यान गमावोला कांई जी ।। १ ।
यह बात नहीं पाया - री, नहीं इज्जत बढ़े बाया री ।

आन वकार लियो शठ! तूँ तुझ जीवन चाह मिटी जु खरी ॥
जोर दिखा कितनो बल है हमसेति छुड़ावत काह परी ।
जीवन आस जरावन को हुँशियार रहो करवाल धरी ॥१॥

ढाल २७ मी ॥ तर्ज— राघव आविियो हो० ॥

अमर आखे ढौंग थारा, देख लीना दुष्ट ।
स्पष्ट सुनले नष्ट करसूँ, अरे पापी - पुष्ट ॥ १ ॥
अब मत देर समझे रंच ॥ टेर ॥
मदान्धो आदेश दीनो, सैन्य ने ततकाल ।
घेरलो चकचूर करदो, क्या समझता ख्याल ॥ अब० ॥ २ ॥
पाय आज्ञा सुभट आया, शस्त्र ले छत्तीस ।
मेघ - धारा जेम वर्षे, नयन भरिया रीस ॥ अब० ॥ ३ ॥
वयरसी तब खड्ग खेंची, उचक पड़ियो मांय ।
यमराज सादृस हाथ वाहे, ओर छोर फिराय ॥ अब० ॥ ४ ॥
एक की नहिं चलन दी वो, लाश पै कई लाश ।
पड़त धररर धरण-धूजी, 'जिम' लग्यो काटण घास ॥ अब० ॥ ५ ॥
त्रासिया भट नासिया ते, करे हाहाकार ।
सकज सूरो, लक्ष पूरो, लग्यो हरि ज्यूँ लार ॥ अब ॥ ६ ॥
खून - वाला चले खलखल, कापड़ी कोपंत ।
होट - डसतो, दांत - पोसत, धरा लात हणंत ॥ अब० ॥ ७ ॥
जायगा कित अब नराधम, पूर दूँ सब हूँस ।
मोर वल है अनल जामें, भस्म होसी फूस ॥ अब० ॥ ८ ॥
वीर भाखे वके मतना, काछ - लम्पट नीच ।
दोस इतना जुल्म कीना, आंख दोनों मीच ॥ अब० ॥ ९ ॥

यो मोद पाणी में बाया जी, सारी धूल उडावोला कांई जी ॥ २ ॥
गम्मत गढ़पतियों - वारी, मण्डप में हो रही भारी ।
नहीं लगी एक भी कारी जी, अब रोल उडावोला कांईजी ॥ ३ ॥
पींजर में शेर दहाड़े, वो छोल चढ़्यो अनपारे ।
अब कैसे इसको मारे जी, कोइ मंत्र चलावोला कांईजी ॥ ४ ॥
सब अधोमुखी हुय बैठा, मानों खुशियों रे चेंठा ।
बण्या धैर्य-विना रा घेठाजी, यां में जोस जगावोला कांई जी ॥ ५ ॥

— ढाल - मूलगी —

अमर सेण उठ बोलियो सरे, यो छोटो-सो काम ।
इतरी कांई विचारणा सरे, करते हो जनस्याम जी ॥ श्री० ॥६१॥
थाके राज कन्या ऊभोड़ी, मण्डप के दरम्यान ।
गौरव झांको पड़रयो सरे, रजवट रो राजान जी ॥ श्री० ॥ ६२ ॥
दुख-भरिया चिड़िया सभी सरे, वदे आँख कर लाल ।
एड़ा जो हो आकता सरे, थेई करो ततकाल जी ॥ श्री० ॥ ६३ ॥
जो व्है हुकम आपरो तो अब, है मोने स्वीकार ।
जय जगदम्ब करी झट ऊठ्यो, दृढता मन में धार जी ॥ श्री० ॥ ६४

ढाल ३४ मी ॥ तर्ज– हांरे वना चौहटा री चलगत छोड़दो०

हांरे कुँवर पिंजरा पास में पौंचियो, हाँ "रेओ" तो लीनो नयन निहार ।
हांरे ओ तो निर्णय सारो पालियो, हांरे ओ तो परम प्रज्ञा रो भंडार ।
उत्पातिया है वुद्धि महारमणीक जो ॥ टेर ॥
हांरे ओ तो अग्नि प्रजाली चारों पाखली,
हांरे ओ तो अद्भुत कीनो खेल ।
हां रे वो तो सारो पीगलगो मेण रो,
हांरे उणने गरमी पौंचत ठेलाठेल ॥ उ

० दोहा ०

इष्टदेव को याद कर, तन शस्त्रज-विद्याय ।
सारो बल ले काम में, मत रखजे मन-मांय ॥१॥
अगणित कीना अकज तूं, ताको आज हिसाब ।
व्याज सहित लेसूं सही, रख मत इतो रवाब ॥२॥

— छन्द - पद्धरी —

ताहि को सद्य बदलो चुकाय, रजपूति रंग ले ध्यूं दिखाय ।
नहिं मिला तुझे मर्दान एक, झट शस्त्र चला अब लेउं देख ॥१॥
यों कही भिड़े भट दोउं जोर, संग्राम तत्र माच्यो सघोर ।
कइ देवि देव खग आये दौर, भय-लाय खड़े सब एक ओर ॥२॥
नभ गूंज रहा, धरणी थराय, छा-गयो बान व्योम तांय ।
जोगणी भरत खप्पर खराक, धकधोल मच्यो धरणी धराक ॥३॥
विद्या-बल फोत वो अथाग, पर मन्द-ज्योति क्या करे भाग ।
छेवट सब उतरचो दुष्ट छाग, योगी-दत्त लीनो विजय-राग ॥४॥
फटकार दियो फटके फराक, शिर-फोड़ मरचो कामी कराक ।
की, पुष्प-वृष्टि सुर गगन जाय, जय विजय शब्द सारे सुनाय ॥५॥

— ढाल - मूलगी —

कुंवर जोतियो जंगने सरे, अमर अमर आशीस ।
दीवी है भल भाव सूं सरे, जीवो क्रोड़ वरीश जी ॥ श्री० ॥८१॥
चंद्रावती यों जाणके सरे, शान्ती लही शरीर ।
पर दुख काटण परगड़ा सरे, भलों पधारचा वीर जी ॥श्री०॥८२॥

— दोहा —

तन साजो सत्वर कियो, औषध के उपचार ।

हाँरे वहाँ पै मेलो मंडियो जोर रो,
हाँरे व्हांरी अकल सरावे सारा लोग ।
हाँरे वा तो राजकन्या राजी हुई ।
हाँरे वहां रे शुभ पुण्यां रो संयोग ॥ उ० ॥३॥
हाँरे कन्या माला पहराइ घणा मोद सूँ, हाँरे राजा सारा हुवा मद-हीन ।
हाँरे देवे स्याबासी मूर्ज्या थका, हाँरे ओतो निकल्यो परम-प्रवीन ॥ उ० ॥४॥
हाँरे राजा व्याह रचायो वड़ा ठाठ सूँ, हाँरे पूछे है किणरा लाल ।
हाँरे एतो सूर्यंयश रा जामात है, हाँरे ए तो जोगी री सारो तोड़्यो जाल ॥५॥
हाँरे दोनों दंपति मिलिया महल में, हाँरे चाली बुद्धि-तणी इलोल ।
हाँरे विजय वरो है अमरसी , हाँरे सारा राजा री निकली पोल ॥ उ० ॥६॥
हाँरे सूर्ययश कहे चालिये , हाँरे वांसे जोता होसी वाट ।
हाँरे छोटा बन्धव आपरा , वयरीसिंह बलराट ॥ उ० ॥ ७ ॥

— दोहा —

मण्डप सूँ पहिपति गये, सीखलही निज गेह ।
उणमें सूँ इक भूपती , अमरष करत अछेह ॥ १ ॥
कर उपाय मारूँ अमर , कन्या लूँ उचकाय ।
काम सरचा सूँ म्हायरा, पित्त सभी बुझ जाय ॥ २ ॥
अमर गयो हथनापुरे , दोनों नार मिलंत ।
हँसी खुशी राजी रहै , मिल्यो कन्त पुनवन्त ॥ ३ ॥

ढाल ३५ मी ॥ तर्ज–अनोखा भँवरजी हो, साहिबा झालो दूँ घर आय० ॥

रातों भरतपुर राजवीं हो , भवियण , ले साथे सरदार ।
गुप्त पणे तस महल में हो, भवियण, घुसगये हो हुँशियार क ॥१॥
विरोधी वैर में हो प्राणी जे वसिया दिन रात ।

सारी गुफा सँभालली, दोनों राजकुमार ॥ १ ॥
रुण्डमाल केता टिरे, केइ जेल के मांय।
सिड़े करे संभाल कु'ण, दुख भोगे असहाय ॥ २ ॥

ढाल २८ मी ॥ तर्ज– अरणक मुनिवर चाल्या गोचरी० ।

दोनों बँधव उण दुखियों भणी, दोधी खूब दिलाशा जो।
निज निज स्थाने रे सर्व पौंचाविया, सफल करी सब आशा जो॥
परउपकारो रे विरला विश्व में, सहायक सुणतों होवे जी।
आघो पाछो सुख दुख आपणो, वीर जरा नहिं जोवे जो ॥टेर॥
चंद्रावती ने रे बेनड़ थापदी, नृप ने लियो बुलाई जी।
स्वागत व्हारो करने सांतरी, महाराणी सँभलाई जी ॥प०॥२॥
खेचर सबने रे खाँत-धरी जबै, वीतक हाल सुनायो जी।
आयो अचंभो रे सागने तदा, जस वे जबरो पायो जी ॥ प० ॥ ३ ॥
मिलवा आवे रे वड़ २ राजिया, आदर इधको पावे रे।
राक्षस मारचो रे मोटा मानवी, शोभा कहियन जावे रे ॥ प० ॥ ४ ॥
चीजों सारी रे कब्जे कर लिवी, एक एक संभाली जी।
आछा आछा रे नर अवलोक ने, राख्या करे रूखाली जी ॥ प० ॥ ५ ॥
थाणो वहाँ पै रे थाप्यो ढंग सूँ, चारों दिश में हाको जी।
हुवो जोर रो, धाको जम-गयो, गुण गावे सब व्हांको जी ॥ प० ॥ ६ ॥
घोटो पाछो रे जोगीश्वर भणी, नमन करीने सौंपे जी।
आप कृपाथी रे इज्जत रहगई, गुण विण पग कु'ण रोपेजी ॥ प० ॥ ७ ॥
सेवा सारो रे वालूड़ा तुम्हें, ऊमर अल्प हमारी जी।
अमर वयरसी रे वारी डालदी, भगतो करे मजारी जी ॥ प० ॥ ८ ॥
जोगी जंपेरे रीज्यो थाँ-परे, उत्तमता निहारी जी।
मरियों पाछेरे कंथा, पावड़ी, लकुट, खटोली थांरी जी ॥ प० ॥ ९ ॥

पाप-पथ प्राहुणा हो , भवियण, वहता करे उत्पात ॥ टेर ॥
निशभर सूता नींद में हो, भवि०, अमर अमर-तिय सोय।
ढोल्यो अधर उठावियो हो, भवि०, वन में ले गया जोय ॥वि०॥२॥
दरिया में डबकावियो हो, भवि०, अमर भणी वन नीच।
बाला ले गयो साथ में हो, भवि०, पड़ी पाप-पथ-बीच ॥वि०॥३॥
अशुचि सुख अभिलाषियो हो, भवि०, कीनो कर्म कठोर।
बाला जागी महल में हो , भवि० , देखे दृग चहुँ ओर ॥वि०॥४॥
अपरिचित देखी स्थान ने हो, भवि०, चतुरा चमकी चित्त।
दासी दास एको नहीं हो , भवि०, कंथ गया है कित्त ॥वि०॥५॥
कुण लायो, किण कारणे हो, भवि०, वणियो कवण बयान।
अणहोणी क्या होगई हो, भवि०, कर्म-गती दुख-खान ॥वि०॥६॥
इतने राजा आवियो हो , भवि०, मद भरियो भाखंत।
मतकर चिन्ता माननो ! हो,भवि, लिखिया नांहि टलन्त ॥वि०॥७॥
आनंद से लो आदरी हो,राणीजी,मुझ को निज भरतार।
मम शक्ती अवलोकलो हो,राणीजी, लायो अधर उठार ॥वि०॥८॥

– दोहा –

अमरसिंह अर्द्धांगिनी , तड़की बोली ताम।
शर्म हीन बोले किसो , तज जाती की माम ॥ १ ॥

ढाल ३६ मी ॥ तर्ज– पनजी मूँडे बोल० ॥

क्या डमडोले रे , निर्लज बनकर के हिये न तोले रे ॥ टेर ॥
परनारी थारी नहिं प्यारी , खारी नागिन - कारी रे।
प्रान, आन, सन्मान, राज्य की, करत खुवारी रे ॥ क्या० ॥ १ ॥
चोर जेम चोरी-कर-लायो, वात विगारी सारी रे।

जरजर कंथा रे खेरचो धन झरे, पावड़ी जल में तारे जी।
जहाँ तहाँ जावे खटोले बेसने, लकुट। शत्रु ने मारे जी ॥ प० ॥ १० ॥
सुरण सुखपाया रे सेवा साधली, अन्तिम स्वासा तांई जी।
सेवाना फल निश्चे संपजे, ढाल 'मिश्री मुनि' गाई जी ॥ प० ॥ ११ ॥

— ढाल-मूलगी —

इक दिन अमरसेरण चढ़ घोड़े, जावे खेलन वन्न।
छटा देख प्राकृतिक वहाँ पै, मगन हो गयो मन्न जी ।।श्री०॥८३॥
सीह-शार्दूल तक्यो गज मारन, कूँवर करुणा लाय।
खेंच तीर मार्यो है हरि ने, वो हरि नर प्रकटाय जी ॥श्री०॥८४॥
विस्मित हो पूछे कूँमरजी, यह क्या कहिये मोय।
बनी अचंभेकारी घटना, कुरण पशु कीना तोय जी ।।श्री०॥८५॥

ढाल २६ मी ॥ तर्ज—पनिहारी० ॥

प्रगटित नर पभरणे तदा, पद-प्रणमी रे लो।
ईश सुरणो अरदास, साक्षी म्हारी रे लो ॥
मैं हथनापुर राजवी, विनमी रे लो।
करतो जीव विनाश, होय शिकारी रे लो ॥ १ ॥
तपसी पालक मिरगलो, मैं देख्यो रे लो।
ताकी मार्यो तीर, मिरगो कँक्यो रे लो ॥
घायल मृग ऋषि पास में, जव कँक्यों रे लो।
भरकर नयनों नीर, योगी छेंक्यो रे लो ॥ २ ॥
कर-स्पर्शी साजो कियो, रोसायो रे लो।
मेरे पर अनपार, मैं घबरायो रे लो ॥
जल छांटी सिंह कर दियो, लपकायो रे लो।

जाती री पत खोय, बन्यो तूँ अत्याचारी रे ॥ क्या० ॥ २ ॥
खास स्वयम्बर मण्डप में सूँ, आयो नहीं अगारी रे ।
रे विषयान्धी जाल रच्यो, गई बुद्धी मारी रे ॥ क्या० ॥ ३ ॥
अगर मेरे स्वामी को चवड़े, लेतो आन वकारी रे ।
तो टणको हो किसो, मालुम होजाती थारी रे ॥ क्या० ॥ ४ ॥
क्या प्रियवर का हाल कियातूँ, खवर हमें न लिगारी रे ।
अब आकर मेरे पै बनता, तूँ वलधारी रे ॥ क्या० ॥ ५ ॥
याद-राख तेरे नहिं सारे, एक लात की मारी रे ।
कर देसूँ भख - भूर, मान मत अवल अनारी रे ॥ क्या० ॥ ६ ॥
हटजा, खेर - चहे जो तेरी, बद किस्मत री बारी रे ।
पर-घरा चहत असन झूंठा सम काग करारी रे ॥ क्या० ॥ ७ ॥
एक मिनट इत मतना ठहरे, क्यों सुनता मम-गारी रे ।
निज नारी ने रांड वतावन, मनसा थारी रे ॥ क्या० ॥ ८ ॥
जोलों कंथ मिले ना तोलों. तजती चार अहारी रे ।
'मिश्री मुनि' कहे धन्य शीलवति !, है वलिहारी रे ॥ क्या० ॥ ९ ॥

– दोहा –

कान्ता-क्रोध-कृशानु लखि, भय पायो भोपाल ।
होय अधोमुख अलग गो, निज महलों में चाल ॥ १ ॥
आसण एक जमाय के, दीना सदर कपाट ।
वैठगई पति ध्यान धर, निश्चित पणे निराट ॥ २ ॥

– चन्द्रायणा –

[illegible]र पड़ताँ अमर नींद दूरी गई, समरचो श्री नवकार एक [illegible] ।
[illegible]क तृण सम होय तिरे विन भार है, जाके धर्म-सहाय [illegible] है ॥१॥
[illegible]धिन पायो तोर, वीर सुविचारियो, अकस्मात [illegible]

मैं रोयो तिणवार, जद फरमायो रे लो ।। ३ ।।
अमरसेण शर-योगथी, नर वणसी रे लो ।
इणही विपिन मजार,तब दुख टलसी रे लो ।।
आज कृतारथ करदियो, उपकारी रे लो ।
पायो नर अवतार, सुधरी सारी रे लो ।। ४ ।।
कुँवर कहे हिंसा तजो, दुखदाई रे लो ।
परतख लीवी निहार, सोचो भाई रे लो ।।
करी प्रतिज्ञा कहत ही, हर्षाई रे लो ।
दया-भाव-उर-धार, जीवनतांई रे लो ।। ५ ।।
भूप कहे पगल्या ठवो, घर म्हारे रे लो ।
मानो प्रिय-मनुहार, सेण हमारे रे लो ।।
चाल्या दोनों साथ में, गहगहता रे लो ।
आया वाग मजार, लहरां लेता रे लो ।। ६ ।।
खबर दिवी पुरमांयने, झट आया रे लो ।
लिया वधाई ताम, मोद भराया रे लो ।।
स्वागत कीनो जोर रो, हिल-मिलके रे लो ।
जुड़ी सभा अभिराम, कलियों पुलके रे लो ।। ७ ।।

* दोहा *

हाल वाल गोपाल से, कहा लाल भोपाल ।
मो रक्षा नृप-लाल ने , कीनी अहो ! कमाल ।। १ ।।
क्षमता लखि जनता जवै , धन्यवाद अनपार ।
दीधो ज्यों पीधो सुधा , इला धन्य अवतार ।। २ ।।

ढाल ३० मी ।। तर्ज- मल्लि जिन बाल ब्रह्मचारी रे० ।।

भलाई दुनियों मन भावे रे , भलाई दुनियों मन भावे ।

पूरव कृत से कर्म उदय फल आविया, महा-प्रभू पिण देख अथक दुख-पाविय

ढाल ३७ मी ॥ तर्ज—जलो म्हारी जोड़रो, उदयापुर म्हाले रे०

हिम्मत सूँ किम्मत बढ़े, रोयों राज न पाय ।
ऊठ चल्यो वन लंघियो, रविपुर दियो दिखलाय ॥ १ ॥
कुँवर श्री अमरसी, पुनवानी सूँ प्यारो हो राज ।
साहस रो सेहरो, सूरसेण दुलारो रे ॥ टेर ॥
उपवन केरे आसनो, बिसरामो लीनो रे ।
भूखो प्यासो थाकगो, दुख भोगे तीनों हो राज ॥ कुं० ॥ २
मालण मीठा बोलड़, बतलायो आई हो ।
कित रहणो, कित जावसो, देवो फुरमाई हो राज ॥ कुं० ॥ ३
मैं आयो पथ भूलगो, कौशलपुर जाणो हो ।
जाणो तो बतलायदो, मारग मनभाणो हो राज ॥ कुं० ॥ ४
पहले पधारो बाग में, फिर थाल अरोगो हो ।
मारग फिर दिखलावसूँ, एक काज है योगो हो राज ॥ कुं० ॥ ५
घरलाई गहरा पणे, मालण जीमाया हो ।
नृप-कन्या लीलावती, इत छै महाराया हो राज ॥ कुं० ॥ ६
धा संगीत-शिरोमणी, नहिं हारनवारी हो ।
पण शत कुँवर पढ़रया, कलाचार्य खिलारी हो राज ॥ कुं० ॥ ७
अद्यावधि जीत्यो नहीं, कोई नारी जायो हो ।
आई पूनम दुमना पड़े, पाठक घबरायो हो राज ॥ कुं० ॥ ८
लायक हो थें कुँवरसा, परख्यो मैं पाणी हो ।
राजा रो दुख मेट दो, हो उत्तम प्राणी हो राज ॥ कुं० ॥ ९

— कवित्त —

अशन अरोगी अबे मेरे है अवश्य काज-

बुरी बुराई देखो चतुरों ! , कोई नहीं व्हावे ।। टेर ।।
वहता करे बुराई जिणमें , जोर कांइ आवे ।
पल में पाप पोट शिर धरले , अपयश हो जावे ।। भ० ।। १ ।।
कीचक, कंस, और पद्मोत्तर , कांइ लाभ लीना ।
लंकेश्वर , दुर्योधन , जयचन्द , जुल्म किया जिन्ना ।। भ० ।। २ ।।
कोणिक हार-हस्ति के कारण , नाना से लड़ियो ।
वैर वसायो , हिंसा करके , नर्कों में पड़ियो ।। भ० ।। ३ ।।
करी भलाई कर्ण दान दे , अमर नाम वरियो ।
विक्रम - भूप महा - उपकारी , दोनन दुख हरियो ।। भ० ।। ४ ।।
आजतलक दुनियों नहिं भूलो , प्रात नाम लेवे ।
'मिश्री-मुनि' कहे भला काम में , उत्तम नर वेवे ।। भ० ।। ५ ।।

– ढाल-मूलगी –

दोय दिनान्तर सीख मांगता , भूप करे अरदास ।
एक दिवश तो और विराजो, पूरो मन री आस जी ।। श्री० ।। ८६ ।।
मन - राखण महाराजकुमर जी, और ठहरग्या मान ।
राजा निज परिकर ने पूछो, एक मतो लियो ठान जी ।। श्री० ।। ८७ ।।
राज - कन्या को व्याह रचायो, धूमधाम के साथ ।
माडाणी श्री अमरकुंवर को, पाणिग्रहण करात जी ।। श्री० ।। ८८ ।।
अर्द्ध राज दीनो दिल - घर के, खुशी हुवो परिवार ।
बड़ो वीर जामाता मिलियो, उपकारी सरदार जी ।। श्री० ।। ८९ ।।
सुख सोना वे लेवे रंग में, राज्य व्यवस्था कीध ।
सिंहासन - पर दोनों भूपति, बैठो शोभा लीध जी ।। श्री० ।। ९० ।।

ढाल २१ मी ।। तर्ज– जो आनन्द मंगल च्हावो रे० ।।

कार्य में सफलता च्हावो रे, बांधो पुनवानी सेंस ।। टेर ।।

कौशल - नगर पंथ हमें बतलायदो।
काम से फारक बन आऊँगो अवश्य इत-
आपको बनासूँ काम फिकर हरायदो ॥
मालरण मुलक बोली भोली कैसी करो वात-
पूनम तो आनवारी कीकर गमायदो ;
मरदों को मान सारो जावे है समंद-खारे –
तो भी ओला लेवो आप रंग दरसायदो ॥१॥

ढाल ३८ मी ॥ तर्ज– पाली रा पटवा, मोड़ो क्यों आयो म्हारा देश में॥

आलीजा कुँवर !, कीकर लजावो थाँरी जातड़ी ।
कन्या ने जीतो , जद मैं मानूं ली साची वातड़ी ॥ टेर ॥
थें लाखोरणा कुँवरसा !, मोत्यों तपे लिलाड़ ।
अरणियाली आँखडल्यों मांहे , भडभूंजा री भाड़ हो ॥ आ० ॥ १ ॥
रजपूतों रे काम क्या ?, कांई चिन्ता री वात ।
मारग वहता राड़ले , रंग दिखावे हाथ हो ॥ आ० ॥ २ ॥
कोष डोडसो ऊपरे , कोशलपुर है खास ।
कन्या परणी जावजो , लेकर के स्याबास हो ॥ आ० ॥ ३ ॥
कुँवर मानपुर में गयो , आचारज संकेत ।
पूछ्यांनन्तर दे दियो , पण्डित उत्तर तेथ हो ॥ आ० ॥ ४ ॥
जीते जो कन्या - प्रती , इसो कौन है लाल ।
पाठक कहे दीसे नहीं , सारा ठोठ सियाल हो ॥ आ० ॥ ५ ॥
फिकर करो मत आपरो , देसूँ काम निकाल ।
इसी किसी है कन्यका , व्यर्थ फुलावे गाल हो ॥ आ० ॥ ६ ॥
मालरण घर कुँवर रहै , भक्ती है भरपूर ।
कन्या से मालरण कहे, तजदो अबै गरूर हो ॥ आ० ॥ ७ ॥

राज्य - सभा के मांही, आयो है दूत चलाई,
स्वयम्बर मण्डप-तांई रे, या खबर आयो छूं देन ॥ का० ॥ १ ॥
कोशलपुर महाराया, ज्यांकी चन्द्रकला है बाया,
जिसके-हित सर्व बुलाया रे, है आमन्त्रण मृदु-वेन ॥ का० ॥ २ ॥
केई राजा राजकुमारा, उत आगये हैं सरदारा,
रहा खाली स्थान तुम्हारा रे, चालो जल्दी मम केण ॥ का० ॥ ३ ॥
नृप कहे मैं उत आसू, एक बात पूछलूँ थांसू,
वहां नई बात है कासू रे, जिससे न व्याह का चैन ॥ का० ॥ ४ ॥
कहे दूत शेर इक नामी, है पींजर-मांय विरामी,
बल अतुल वीर अनुगामी रे, विन शस्त्र मारलें येन ॥ का० ॥ ५ ॥

— कवित्त —

पिंजर उघाड़े विन हाथ ना लगानो हेक,
शस्त्र विन धारी टेक सामने सिधावनो ।
भरी सभा मांहे सूर-बीड़ो ले पछाड़े कोऊ,
मारने के हेतु नांही कंकर उठावनो ॥
काम करड़ारे मारे ताको वरमाला मिले,
अन्यथा पधारो नहीं कन्या रत्न पावनो ॥
अमर कहे है ताम चलो जनपार वेग,
देखेंगे कैसा है ठाठ समम सुहावनो ॥ १ ॥

ढाल ३२ मी ॥ तर्ज– हरिया मन लागो० ॥

चाल्या सह-परिवार सूँ, कौशलपुर के पंथ हो, साजन सांभलो
आया मण्डप स्थान के, पाया मान अत्यन्त हो ॥ सा० ॥ १ ॥
भोजन सब साजन कियो, कार्य - व्यवस्था त्यार हो ॥सा०॥

अलबेलो नर आवियो, देसी टंट निकाल।
राजीपो पहले करो, वरते मंगल - माल हो ।। आ० ।। ८ ।।

० दोहा ०

मुँह मचकोड़ी कन्यका, कहे कुतूहल लाय।
मालण ! मूँगा मोलरो, लाई किने उठाय ॥१॥

ढाल ३६ मी ॥ तर्ज– म्हांने दोरो लागे जी० ॥

भोला मालणजी क, भोला मालण जी क।
वीणा में जो मुझने जीते, किनको लालन जो ।। टेर ।।
आज तलक आयो नहिं इसड़ो, इण विद्या रो जाण।
कपट - कला ने छोड़ मर्दों में, मिले न दूजो नाण ।। भो० ।। १ ।।
चाहे जितरो मान तोल ले, होड करे नहीं म्हारी।
रोल नहीं मिनखों में पोल है, मालुम पड़सी सारी ।। भो० ।। २ ।।
गम्मत करने मालण बोली, होले से कहरासी।
ऐसो नर निरखोला जद थें, देवोला स्याबासी ।। भो० ।। ३ ।।
इती नहीं है पूनम आगी, सुण लाखीणी लाडी।
मान अणूतो नहीं कामरो, अकल आवेला आडी ।। भो० ।। ४ ।।
मिनखों री पुनवानी मोटी, सुणी शस्त्र में बात।
जिणसूँ नारी - केरे ऊपर, नर वनजावे नाथ ।। भो० ।। ५ ।।
कन्या रे करडावण काठी, जची नहीं तिलमात।
मालन आई वाग वीच में, भाखे जोड़ी हाथ ।। भो० ।। ६ ।।
कुँवर-साव ! थें करामात कर, इण कन्या ने जीतो।
जद मर्दो री मूँछ रहेला, घणो राखजो पीतो ।। भो० ।। ७ ।।
मत डरपो मालणजी ! थाँरी, वात सत्य हो-जासी।

शृंगारित कन्या भई, आई माला कर - धार हो ।। सा० ।। २ ।।
अप्सर - सी आदर्श है, पेख्यों उपजे प्यार हो ।
ठहरी मण्डप बीच में, झांका पड़्या जनपार हो ।। सा० ।। ३ ।।
ज्यांका दिन है पाधरा, ह्वांके घर या नार हो ।। सा० ।।
भाग्य - विना पावे नहीं, हुन्नर करो हजार हो ।। सा० ।। ४ ।।
दास्यों रा रमझोल में, ऊभी राजकँवार हो ।। सा० ।।
कौशलपुर-पति यों वदे, यह बतीसमी ढार हो ।। सा० ।। ५ ।।

— तर्ज— थियेटर —

भरी सभा में आम, कहे कन्या-पितु ताम, एक आयो ऐसो काम, मनचाह फले २,
सीह पिंजर में गाज रयो है, विना शस्त्र विन हाथ लगाय । यदि देवे उसे मार,
कन्या नियम विचार, पावे वोही वरमाल, कहूं साच साच साच २ ।। १ ।।
आप बड़े हैं झुंझार बुद्धि-बल के भण्डार, जल्दी करो सरकार, वखत आयगई २ ।
पोल दिखाणी फबै नहीं है, क्षत्री-पन को रखिये आन । ज्यादा कहना झिकाल,
आप बड़े पृथिपाल, फोड़ो प्राक्रम विशाल उठो आज आज आज २ ।। २ ।।

— दोहा —

शब्द शाल विष व्याल सम, डंक लग्यो महिराण ।
जोर जाल महिपाल रच, आन ताल वे फाल ।। १ ।।
छल, वल, कल तिहुं एक थल, मिले न हेर हजार ।
व्याह नहीं, यह व्याधि है, निश्चय लेहु निहार ।। २ ।।

ढाल २२ मी ।। तर्ज— म्हारे व्याह पधारोला कांई जी० ।।

क्यों क्रोडों द्रव्य लगाया, क्यों स्वयम्वर यह रचवाया ।
यह फांदा घात लगाया, म्हारी स्यान गमावोला कांई जी ।। १ ।।
यह बात नहीं पाया - री, नहीं इज्जत वढ़े वाया री ।

इतनी कन्या उछले स्याने, हो जावेला हाँसी ।। भो० ।। ८ ।।
हाँ करतो प्रगटी है पूनम, मण्डप री व्हो त्यारी ।
कुँवर सजग होकर झट चाल्यो, आचारज रे लारो ।। भो० ।। ९ ।।

– दोहा–आजिंद री चाल में –

हाँरे ओ तो सब लड़कों ने लार पाठकजी ले चल्यो ।
हाँरे व्हाँरी छाती धड़का खाय कन्या बल देखल्यो ।।
हाँरे वे तो मण्डप धसिया जाय के ओलो-ओल ही ।
हाँरे आई परीक्षण टेम के बजे शुभ ढोल ही ।। १ ।।
करी परीक्षा ताम छात्र गण की तबै ।
हास्या पल में तेह कन्या आगे जबै ।।
दुमनो हो गयो विप्र अमर तब ऊठियो ।
कन्या के अभिमान के ऊपर रूठियो ।। २ ।।

ढाल ४० मी ।। तर्ज– असी रुपैया ले कलदार० ।।

राजकन्या सुनलो मुझ बात, इतना मत उछलो स्त्री-जात ।। टेर ।।
जितनी विद्या व्हे तुम पासे, वो दिखलादो नव-नव भाँत ।। रा० ।। १ ।।
मन में रती न रखजो बाला !, गायन वादन को सब साथ ।। रा० ।।२।।
इसो विचार आणे दो मतना, म्हांसूँ लारे है नर-जात ।। रा० ।।३।।
मैं भी चुटकलो फिर दिखलासूँ, मर्दोंरा देखोला हाथ ।। रा० ।।४।।
कन्या श्रवण करत हो भिड़की, विद्या विस्तारी धरखाँत ।। रा० ।।५।।
अभिनव रंग छा-गयो मण्डप, नर, सुर सुणने वनचर आत ।। रा० ।।६।।
इणने कुंण जीते जग-मांही, देव-रूप चवड़े दिखलात ।रा० ।।७।।
एक घड़ी नाटारंभ कीनो, शोभा तो वरणी नहिं जात ।। रा० ।।८।।
थकित होय विश्रान्ती लीनी, ढाल चालीसमो सुनिये भ्रात ।। रा० ।।९।।

राज्य - सभा के मांही, आयो है दूत चलाई,
स्वयम्बर मण्डप-तांई रे, या खबर आयो छूं देन ॥ का० ॥ १ ॥
कोशलपुर महाराया, ज्यांकी चन्द्रकला है बाया,
जिसके-हित सर्व बुलाया रे, है आमन्त्रण मृदु-बेन ॥ का० ॥ २ ॥
केई राजा राजकुमारा, उत आगये हैं सरदारा,
रहा खाली स्थान तुम्हारा रे, चालो जल्दी मम केण ॥ का० ॥ ३ ॥
नृप कहे मैं उत आसू, एक बात पूछलूं थांसू,
वहां नई बात है कासू रे, जिससे न व्याह का चैन ॥ का० ॥ ४ ॥
कहे दूत शेर इक नामी, है पींजर-मांय विरामी,
बल अतुल वीर अनुगामी रे, बिन शस्त्र मारलें येन ॥ का० ॥ ५ ॥

— कवित्त —

पिंजर उघाड़े विन हाथ ना लगानो हेक,
शस्त्र विन धारी टेक सामने सिधावनो ।
भरी सभा मांहे सूर-बीड़ो ले पछाड़े कोऊ,
मारने के हेतु नांही कंकर उठावनो ॥
काम करड़ारे मारे ताको वरमाला मिले,
अन्यथा पधारो नहीं कन्या रत्न पावनो ॥
अमर कहे है ताम चलो जनपार वेग,
देखेंगे कैसा है ठाठ समय सुहावनो ॥ १ ॥

ढाल ३२ मी ॥ तर्ज– हरिया मन लागो० ॥

चाल्या सह-परिवार सूं, कौशलपुर के पंथ हो, साजन सांभलो
आया मण्डप स्थान के, पाया मान अत्यन्त हो ॥ सा० ॥ १ ॥
भोजन सब साजन कियो, कार्य - व्यवस्था त्यार हो ॥सा०॥

० दोहा ०

कर वन्दन आचार्य को, अमरसिंह धर रंग।
वीणा लीधी हाथ में, कल पुर्जा इक ढंग ॥ १ ॥
तान, आन अरु गान युत, डंडारस भेदान।
दिखलावे दुनियों-प्रते, मण्डप रे दरम्यान ॥ २ ॥

ढाल ४१ मी तर्ज– केशर थें लाइजो मूंगा मोल री० ॥

हाथ धरचो उण वीण पै, निकली राग छतीस, रसिकजन।
मुग्ध हुवा सब मानवी, ऐसी अलाप बनीश, रसिकजन ॥ १ ॥
कला महा-सुखकार है, कला करावे किलोल, रसिक जन ॥क०॥ टेर॥
मेलो मँडियो मोटको, देव असुर आया दौर ॥ रसि० ॥
वनचर वनसूं आविया, ऊभा ओला ओल ॥ रसिक० ॥ क० ॥ २ ॥
रंगत छाई सांतरी, सुध बुध भूला लोग, रसि०।
यो पुन्यां रो पौरषो, सुन्दर मिलियो योग, रसि० ॥ क० ॥ ३ ॥
घड़ी दोय रो जाणजो, गायन रो गहकाय, रसि० ॥
जातो काल न जाणियो, मोद बढ़यो मन मांय, रसि० ॥ क० ॥ ४ ॥
बंध कियो संगीत ने, करे प्रशंसा पूर, रसि०।
यों कोई नर या देवता, निरख रया है नूर, रसि० ॥ क० ॥ ५ ॥
कन्या लज्जित हो गई, गर्व गल्यो छिन-मांय, रसि० ॥
वरमाला पहरायदी, आदर दीनो राय, रसि० ॥ क० ॥ ६ ॥
कन्या गइ है महल में, मालण पहुंची पास, रसि० ॥
अहो ! वाईसा ! मुझ भणी, दो-नी खूब स्यावास, रसि० ॥ क० ॥ ७ ॥

– ढाल - मूलगी –

मालण जी मति आगला सरे, नर परख्यो थें सार।

मैं नहिं मानी बातड़ी सरे, जिद् अगूती धार जी ॥ श्री० ॥ ६५ ॥
पिण थांरी महनत फली सरे, मनमान्यो पतिराज ।
मिलियो म्हांने मोदसूं सरे, थांरो रह्यो मिजाज जी ॥ श्री० ॥ ६६ ॥
कर मोच्छव शुभ मुहुरत देखो, दो कन्या परणाय ।
कर मोचन में राज्य दियो सब, दीक्षा ली महाराय जी ॥ श्री० ॥ ६७ ॥
राज्य - व्यवस्था ऐसी कीनी, परजा पाई चैन ।
अमरसेण मुनिराज ने सरे, पूछया इसड़ा वेन जी ॥ श्री० ॥ ६८ ॥

ढाल ४२ मी ॥ तर्ज– जावो-जोवो ऐ मेरे साधू, रहो गुरू के संग० ॥

कहदो कहदो हो करुणा सागर!, आप ज्ञान के जोर ॥
सुख से सूता रंग महल में, कुण मुझ सागर-डारयो ।
मम वनिता की कौन दशा है,किणविध विरहो पारयो ॥क०॥ १ ॥
मुनि भाखे तव-वनिता इच्छुक, ऐसो कियो अन्याय ।
नाम कहन का कल्पे ना मुझ, द्युं थोड़ो जतलाय ॥ क० ॥ २ ॥
सागर में तुझको वो डारी, ले तव - राणी साथ ।
अपने घर जा सति छेड़ी, वा नहीं मानी बात ॥ क० ॥ ३ ।
महल कपाट - जड़ोसा बैठी, तज्या खान ने पान ।
ध्यान धरे वा निशदिन तेरो, दुख-पूरित उण स्थान ॥ क० ॥ ४ ॥
सात दिवस तो बीतगा, खुलता नहीं कपाट ।
विषयी को नहीं चैन जरासा, झेली ऊजड़ वाट ॥ क० ॥ ५ ॥
कर उद्योग कुंवर अब जल्दी, दुख पावे सा बाल ।
पता सभी पड़जासी पथ में, तीजे दिन सर-पाल ॥ क० ॥ ६ ॥
अमर नमन मुनि ने कर पाछो, आयो सभा मझार ।
मंत्री ने सब राज्य सौंप के, चला अल्प चमू लार ॥ क० ॥ ७ ॥
कोश डोड सो दोय दिनों में, लांघलिया है सोय ।

न अरु नाम बतादो जी , कांई खाँप है राज , परीचय हमें जतादो जी ॥६॥
रिसिंह नाम हमारो जी, बड़-बन्धव के काज , फिरूँ मैं ढूँढनवारो जी ।
रीपुर नगर रसारो जी, सूरसेण-नृप - नन्द , यही परिचय जनपारो जी ॥७॥

० दोहा ०

कनक-नगर, श्रीपुर-नगर, सला करी दुहूं भूप ।
निज-निज कन्या व्याह हित, निश्चय कियो निरूप ॥१॥
वयरसीहशिर-धुनदियो , बिन मिलियों मुझ वीर ।
व्याह करूँ हर्गिज नहीं, सुनिये आप सधीर ॥२॥

ढाल ५२ मी ॥ तर्ज– छोटी मोटी सैयां ए, जाली का मेरा काढ़ना ॥

सुनलो सजनों रे,कर्मों का कैसा हाल है ॥ टेर ॥
एक मिनट में राजा बनाता, हाँ राजा बनाता, दूजे मिनट कंगाल ॥क०॥१॥
ख्याल पड़ेना इसके खेल की, हाँ इसके०, यह तो थोहर की डाल ॥क०॥२॥
वयरीसिंह की बातें सुनके, हाँ बातें सुनके, नृपति हो गये निहाल ॥क०॥३॥
राजमहलों में कुँवर विराजे,हां कुँवर विराजे,मान मिला है बेमिसाल।क०।४॥
चारों तर्फ श्री अमरसीह की, हाँ अमरसीह की,खबर करे अनपार ॥क०॥५॥
एक दिन जावे सेठ साहब के , हाँ सेठ०, सदन मिलन सुकुमार ॥क०॥६॥
घोड़ा नचाता सदर बाजारों , हाँ सदर०, नम रहै बाल गोपाल ॥क०॥७॥

– ढाल–मूलगी –

मदनमालती वैश्या नामी , निरखि कुँवर को नैन ।
कामातुर सा आडी फिरगी , अर्ज करे मृदु-वेन जी ॥श्री०॥१०५॥
राज पधारो मेरे घर पर , सुख - दुख की सब बात ।
श्रवण-करी शाता बगशावो, पुण्य प्रभाविक नाथजी ॥श्री०॥१०६॥

तीजे दिन सरवर पै डेरा, दिया राजाजी जोय ॥ क० ॥ ८ ॥
भोजन से फारक होने पर, इधर उधर टहलन्त ।
चार सवार जावे है जल्दी, पाल - नीचले पंथ ॥ क० ॥ ९ ॥

– दोहा –

सरदारों ने शीघ्रतर, कहे लावो थे जाय ।
वे लाया आया उठै, अमर अखे कहो वाय ॥ १ ॥
छो किणरा असवार थें, जावो कुणसे गाम ।
ऐसी जल्दी किण-मुदे, काँइ जरूरी काम ॥ २ ॥

ढाल ४३ मी ॥ तर्ज– हां पाप मोहि लागे प्यारो० ॥

हाँ सुणो महाराजा म्हारी, वीतक बात करों छो ज्हारी ।
आया भरतपुर शहर से, चारों इणवारी रे ॥ टेर ॥
घटना एक घटी हदवारी, पर-धण लायो नृप व्यभिचारी ।
सा जड़-दिया कपाट, खुले नहिं थक्या हजारी रे ॥ सुणो० ॥ १ ॥
खाना, पीना वा तज दीना, मार गिराया उत मुख कीना ।
छट्ठे दिन की बात निकलगइ बाहिर नारी रे ॥ सुणो० ॥ २ ॥
वन विकराल सभा में आई, पकड़ भूप मारे पशुनाई ।
जो छोडण-हित कर्‌यो, उन्हें पिण लोना मारी रे ॥ सुणो०॥ ३ ॥
चवड़े चौहटे टेरयो तरुवर, नीलो काम उडावे सररर ।
ठहर ठहर जल छाँट, चोट वा देत करारी रे ॥ सुणो० ॥ ४ ॥
साहस-हीन हो गये सारा, उण पै बल नहिं चले लगारा ।
महाराण्यों री विनती सुनवा इसी उचारी रे ॥ सुणो० ॥ ५ ॥
कोशलपुर पति जो इत आवे, तासु कथन पर हम छिटकावे ।
नहितर इसको सिडा-सिडा कर देवु सजारी रे ॥ सुणो० ॥ ६ ॥

घोड़ा सहित आयो गनिका घर, बतलादो क्या काम।
नयन-घुमाती,मुँह-मुसकाती, वयण वदे अभिरामजी ॥श्री॥१०७॥

ढाल ५३ मी ॥ तर्ज–जल्ला री०॥

प्रेम-पियासी दासी राज तुम्हारी हो, महाराज-कुमार, महा०।
महर करी ने रंग-महल पधारो हो रसाल।
सुर, विद्या धर,किन्नर सूँ रूपाला हो महाराज कुमार, महा०।
अबला री आ अरज आप स्वीकारो हो, रसाल ॥ १ ॥

वयरीसिंह वनिता ने यों फरमाई हो, आगे मत बोल, आगे०।
मैं अधुना नहीं मानूँ बात तुम्हारी हो रसाल।
भाई-सहाब के मिलिया बिन नहिं मर्जी हो,म्हारी रति एक, म्हारी०।
यों कही घेरचो घोड़ा ने ततकारी हो रसाल ॥ २ ॥

इतनो घमंड मत राखो कुँवरसा मन में हो,थोड़ी सुणलो बात, थोड़ी०।
विन मर्जी एक पैर भरण दूँ नांही हो सुजान।
चोर, ढोर केइ जीत जोस में आया हो, मैं नारी जात, मैं नारी०।
म्हाने जीते इसो कौन बलधारी हो, सुजान ॥ ३ ॥

यों कह कर सा पाणी मंत्र छिड़कायो हो,कियो शुक ततकाल, कियो०।
स्वर्ण पींजर में डाल दियो मतवाली हो, रसाल।
दाख, विदामो, चिलगोजा जल साथे हो, सन्मुख पर चूर, सन्मुख०।
टिरे ढोलिया पासे वो मनुहारी हो, सुजान ॥ ४ ॥

कैसी विटम्बना हुई कुँवरसा सोचे हो, अनहोनी आज, अन०।
अब जाणो किम होसी हाय हमारो हो रसाल।
हे प्रभो! संकट टारो दया विचारी हो, करुणालय आप, करुणा०।
कांइ सोची व्हेला मनमांहे सरदारों हो सुजान ॥ ५ ॥

पर - प्यारी रा प्रेम - पियाला , इसे पिलाती हूं मतबाला ।
फेरूं ऐडो काम करे नहिं फेम विसारी रे ॥ सुणो० ॥ ७ ॥
मैं सब जावों कौशलपुर को , लावों जल्दी उस नर-वर को ।
सारा राज्य में है कोलाहल , लगे जु कारी रे ॥ सुणो० ॥ ८ ॥
ठीक, कहे नृप-सुत मत जावो, कितो भरतपुर हमें बतावो ।
करदेसों शाता सब पुर में बन अधिकारी रे ॥ सुणो० ॥ ९ ॥

० दोहा ०

आखे वे यों अमरतें , करिये कृपा कृपाल ! ।
अमर नाम होसी जगत, हे रजवट-प्रतिपाल ! ॥ १ ॥

ढाल ४४ मी ॥ तर्ज- हां रे लाला बिछिया थारे बाजणा० ॥

हां रे लाला आठ कोश दूरो अछै, म्हारो शहर भरतपुर राज रे लाला ।
आप पधारो कर दया, राखो सारों री लाज रे लाला ॥ १ ॥
अरज सुणो अलवेशरू ॥ टेर ॥
हां रे लाला कूंचनगारो वाजियो,वेतो चढ़ चाल्या जिणवाररे लाला ।
आथमते रवि पौंचिया, जठै मिलिया लोक अपार रे लाला ॥आ०॥२॥
हां रे लाला देख दशा उण भूप री, अमर लह्यो आनन्द रे लाला ।
वदलो वनिता वालियो, ओ तो भूलगयो सब फन्द रे लाला ॥आ०॥३॥
हां रे लाला बतलाई राणी भणी, वा ओलख अलगी थाय रे लाला ।
अमर कहे सुण राजवी! , तूं तो कीधो जबर अन्याय रे लाला ॥आ०॥४॥
हां रे लाला सभा करी ने पूछियो,किम आई इसड़ो लहर रे लाला ।
थारो कंई बिगाड़ियो, फिर क्यों उमढ्यो मन जहर रे लाला ॥आ०॥५॥
हां रेलाला नृपकहे भावी योगथी,म्हांसूं वणियो काम निकामरे लाला ।
मरजी व्है ज्यों कीजिये, मैं तुझ दास गुलाम रे लाला ॥आ०॥६॥

— दोहा —

रयरण वरणावे पुरुष सा, रमन करन धर रंग ।
किन्तु कुँवर नहिं हानरे, आखडि रखै अभंग ।। १ ।।
परवश पोपट रूप में, बोते पंच विहान ।
सब सोचे कित गे कुँवर, छायो शोक महान ।। २ ।।

ढाल ५३ मी ।। तर्ज– पांच मोहर रोकड़ लेलो० ।।

विलख वदन जोवे सब वाट, दो कन्या दोनों समराट ।। टेर ।।
होय नाराज गया कित छाने, हाजर थो सेवा में थाट ।।वि०।।१।।
कोई कुटिल ले गयो विलमाई, या कोई जुलमी घड़ियो घाट ।।वि०।।२।।
इते सेठ जी पिण आ पूछे, गया कुँवरसा कुणसी वाट ।।वि०।।३।।
आप मिलन हित गया कुँवरसा, बारे बजन में दो-घड़ि घाट ।।वि०।।४।।
सेठ सोचने इसी प्रकाशी, पुर बाहिर नहीं जावरण चाट ।।वि०।।५।।
पतो लगावो थें रजवाड़ों, जल्दी भेजो चारण भाट ।।वि०।।६।।
यहाँ की शोध करूँला मैं खुद, बावन चन्दन बने न काठ ।।वि०।।७।।

– ढाल - मूलगी –

सेंध लगाई सेठजी सरे, सुल सुल आई कान ।
हय चढ जातां घेरिया सरे, मदना आप मकान जी ।।श्री०।।१०८।।
आगे जाने की खबर नहीं है, जची सेठ के मन्न ।
एक नारी ने भेज प्रच्छन्न-पन, खबर करन एकन्न जी ।।श्री०।।१०९।।

ढाल ५४ मी ।। तर्ज–इण सरवरिया री पाल हींडो मैं घालस्यों०।।

ारी सारो वात अगाड़ी बैठने, मोरालाल अगाड़ी बैठने ।
ा-शंकित सा होय कही है सेठ ने, मोरालाल कही है सेठ ने ।।

हांरे लाला उदधी में मुझे डालियो, सूतो निद्रा वीच निशंक रे लाला।
राणी ने लायो शील-भंजवा, कुल ने दियो तूं कलंक रे लाला ॥आ०॥७॥

— ढाल—मूलगी —

लोग सहू धिक्कारियो सरे, भयो वंश में नीच।
पाप लगे मुख देखियों सरे, कल्यो काम के कीच जी ॥ श्री० ॥ ९९ ॥
इसके योग्य है दण्ड मृत्यु का, सारा - जन सुण लीजो।
तो भी दया लाय ने छोडूं, बुरो पंथ तज दीजो जी ॥ श्री० ॥ १०० ॥

ढाल ४५ मी ॥ तर्ज—म्हारा हाथ में नौकर वालीं, मने नवपदनो आधार जी

कुंवराणी सूं मिलियो महलां, सुख दुख दियो सुणाय जी।
कैसो बेहद पड्यो बिछोवो, मिल्या भाग्य सूं आय जी ॥ १ ॥
पुण्य-तणो प्रभाव प्रबल है, पाप-तणां फल हीन जी ॥ टेर ॥
आधो राज दियो है उणने, सेवक अपणां थाप जी।
अर्द्ध-राज निज कब्जे कीनो, सब कहे की धनियाप जी ॥ पु० ॥२॥
हथनापुर रे साथ मिलाकर, वृहद् बनायो राज जी।
हाथों वैर लियो बड़भागी, भांज दुष्ट रो खाज़ जी ॥ पु० ॥ ३ ॥
आछी रीत राज्य री कीनी, नीतो - मय मर्याद जी।
सबने एक सरीखा वर्ते, करे न वाद - विवाद जी ॥ पु० ॥ ४ ॥
अमर पड़ह दो राज्य वजायो, कौशल गजपुर साथ जी।
आण अखण्डित वर्त रही है, निपुण मिल्यो है नाथ जी ॥पु०॥ ५ ॥

— दोहा —

अब सुनिये आनन्द से, वयरिसीह वृत्तान्त।
वड़-भ्राता आयो नहीं, पड़ी हृदय अति-भ्रान्त ॥ १ ॥

सुन्दर अति शुकराज स्वर्ण पींजर टिरे,मो., विलखानन अनपार कदे आंसू झरे ॥
साची जाणे भगवान साखी मन दे रयो,जादूगरनी तेह कुँवर वश व्हे रयो, मो॰
सेठ कहे सुस्ताव म्होने पिण वेम है,मो०,आछी नहीं तकरार बुरी या टेम है,मो.॥
मार न्हाखे महा नीच पछै कांइ जोर है,मो.,सोच घणो है मोय ठौर कु-ठौर है, मो.
बाईजी रे पास जाय यूँ केवजो,मो०,कुँवर विराजे अत्र,मरो मत रेवजो,मो० ॥
नश्चय आसी वेह दिनों री देर है,मो०,ईश कृपातें अहो! उन्हों के खेर है, मो॰
तेड़ो नृप-दरबार तेह कोश्या भणी,मो०,ले पिंजर आई तेथ भाखे तद नर-मणी,॥
नवलो दिखावो नाच गायनरी लहर में,मो.,होवे मन खुशियाल संगीत री शहर में
नाटक के पश्चात पूछियो राजवी,मो०,मदना म्हाने आज उत्तर दे वाजबी, मो.॥
कुँवर गया किण ठौर थने कुछ ध्यान है,मो.,सा कहे दरियापार के बंदीवान है, मो
पोपट आँख करूर करी सुण बातड़ी,मो०,समजो सेणी माय कन्या नृप आंतड़ी, ॥
सीख लही गइ भौन सेठ सुविचारियो,मो., शुक रूपे नृप-लाल ख्याल सब भालियो
अबकर दाव उपाव चौड़े करणो सही,मो.,वैश्या ने तिल-मात भेद देणो नहीं,मो॥

- दोहा -

कोची मालण रहत उत, सहियर मदनारीय ।
पलट रूप प्रच्छन पणे, सेठ गयो रातीय ॥ १ ॥
मदना आई रात-मध, कोची कहे तव काम ।
वणियों के खालो हुयो — बैठों ही बदनाम ॥ २ ॥

ढाल ५५ मी ॥ तर्ज— सहियों म्हारी, गुरुसा पधारचा ए० ॥

मदना कहे सुण आली !, म्हारी चाल एक नहीं चाली है ।
मानव मतिवन्तो० ॥ टेर ॥
उसके वीरा को हेज, नहीं आया हमारी सेज ए ॥ मा० ॥१॥
मैं तो वातों में विलमायो, घणो रिझायो,डकरायो ए ॥मा०॥
वो तो हट सूँ चट नहि होवे, म्हारे साम्हो ही नहीं जोवे ए ॥मा.॥२॥

शोधन चाल्यो चढ़ - तुरी, वन वन लीनो छान।
पर्वत, तरू, गव्हर, नगर, गाम डगर जल-थान ॥ २ ॥
मा - जायो पायो नहीं, आयो दुक्ख अपार।
अणचिन्ती कैसी वणी, भ्रात-विरह उर-जार ॥ ३ ॥

ढाल ४६ मी ॥ तर्ज– म्हारा छेल भँवर रो कांगसियो० ॥

म्हारा बड़भाई ने आय हाय कुण वैरी हरियो रे।
ओ कुण आंटो साजियो, कुण जादू जरियो रे॥ टेर॥
भाई भट मोटो है म्हारो, विलमायो हद कीनी रे।
क़ैद कियो या मारलियो है, या तस्ती कांई दीनी रे॥
वेम यो मन में वडियो रे॥ म्हारा० ॥ १ ॥
कहीं बात रो नहीं है बुड़को, खोज खबर है नाही रे।
जहर उमढियो मन नहीं लागे, गयो कठै ममभाई रे॥
प्रेम में गिरकँद गुड़ियो रे॥ म्हारा० ॥ २ ॥
माता मरगी, बाप रूठगो, बन्धव छेह दिखायो रे।
मैं हत-भागी पूर्व-कर्म रो, किसड़ो लेख लिखायो रे॥
आनन रो नूर उतरियो रे॥ म्हारा० ॥ ३ ॥
सरदारों ने शीघ्र बुलाई, गुफा सर्व सम्भलाई रे।
पूरी हिफाजत सूँ रुखवालो, जबतक न्हावे भाई रे ॥
झोखो थांरे शिर - धरियो रे॥ म्हारा० ॥ ४ ॥
कंथा,खटोली,लकुट,पावड़ियों,शस्त्र लिया सब साथे रे।
उडग्यो है आकाशगती - कर, ज्यों पक्षी उडजाते रे॥
भाई शोधन परवरियो रे ॥ म्हारा० ॥ ५ ॥
ग्राम, नगर, पुर, पाटण पेखत, श्रीपुर पौंच्यो आई रे।
चारों चीजें गुप्त करी ने, ढूँढ़यो शहर में जाई रे ॥

अब कांई शला है थारी, उसे राखूँ या लूँ मारी ए ।।मा०।।
कोची कहे मत मारो, जो भलो च्हावे थूँ थांरो ए ।।मा०।।३।।
सेठ घणो बुधवारो, उणरो जाल-पास है खारो ए ।।मा०।।
थने ऐसी फन्दा में वो लेसी, फिर छाने सजा वो देसी ए ।। मा० ।। ४ ।।
मदना तब मुँह मचकोड़ी, कहे कोंची तूँ तो भोली ए ।। मा० ।।
म्हारो बाल बाँको नहीं करसी, जो जाल कियो तो मरसी ए ।। मा० ।। ५ ।।
जद तूँ थारी जाणे, थूँ बात किणी री माने ए ।। मा० ।।
नहीं मारू, हाल निहालूं, मैं तो प्रेम उणी सूँ पालू ए ।। मा० ।। ६ ।।
तद मदना निज घर चाली, कोंची सूतो थी निद्रालो ए ।। मा० ।।
सेठ प्रात घर आयो, अब पत्तो पूरो पायो ए ।। मा० ।। ७ ।।

० दोहा ०

कोचो सोचो पौंचगी, प्रात सेठ की पोल ।
आवण रो कारण अठै, कह कोची दिल-खोल ।। १ ।।

ढाल ५६ मी ।। तर्ज–खिदमते धर्म पै जो मरजायेंगे० ।।

सेठ-साहब सुणो हमरी बतियाँ, गमगोन दिखाते हो दिन-रतियाँ ।। टेर ।।
यदि राजा गिने, महाराजा गिने, दुखियों के गले का हार गिने ।
कुण आप समान मिले थितिया ।। सेठ० ।। १ ।।
जो आज किसी के काम अड़े, वहां आप विना कैसे पार पड़े ।
विगड़ी भी सुधार देवो गतिया ।। सेठ० ।। २ ।।
सूज बूझ है आपकी सर्व सिरे, आये शर्ण डूबे नहिं, शीघ्र तिरे ।
अति स्वच्छ समय पर को मतिया ।। सेठ० ।। ३ ।।
अफशोष मुझे यह आय रहा, उपकारी कुँवर का पता कहां ? ।
हाय ! मेरी तो धड़क रही छतिया ।। सेठ० ।। ४ ।।

पतो पूरो नहिं परियो रे ।। म्हारा० ॥ ६ ॥
सेठ वसुदत्त मोटो धनपति, राज्यमान्य सुखदाई रे ।
तास भवन के सन्मुख बैठो, पथ-श्रम टालनतांई रे ।।
सेठ के नजरों अड़ियो रे ।। म्हारा० ॥ ७ ॥

— दोहा —

सेठ ऊठ सन्मुख गयो, झुक-झुक कियो जुहार ।
प्रेम - भाव दर्शावियो, मिलिया बाँह पसार ।। १ ॥

ढाल ४७ मी ॥ तर्ज– थें तो मोटा हो भैरूँ जी बाबा-देव० ॥

थेंतो आया कठासूं भाई-साहब!, चिन्ताकांई थांरे मनमें रे ।
आवो पधारो बेसो मांय, मोने बतावो, मेटूं छिन में रे ॥१॥
ओ तो आदर दे अनपार, लायो हवेली रे मांही रे ।
भोजन जीमायो धरप्यार, लियो बातों में विलमाई रे ॥२॥
बयरसिंह कहे सेठ, भाई म्हारो गयो वन रन में रे ।
वेतो गया कठै जा बैठ, मैंतो ढूंढत फिरूं लाधे जिनमें रे ॥३॥
मिलसी तुम्हें महाभाग!, खबर मँगावूं पुर-पुर सूं रे ।
देश विदेशों अथाग, मैं तो लगावूंला धुर सूं रे ॥४॥
इम विता दिहाड़ा दोय, समय संध्यारो आयो रे ।
राजा वुलायो सोय, सेठ मिलवा महलों में धायो रे ॥५॥

— ढाल–मूलगी —

राजा सेठ ने ले एकान्ते, सारी वात सुनाई ।
कनकपुरी नगरी को राजा, यहां पै करी चढ़ाई जी ॥श्री०॥१०१॥
सबब यही कन्या परणादे, नहींतर जंग-रचा सूं ।

उसका पता लगाना मुनाशिब है, आप जैसे बुजर्गों को वाजिब है।
कहीं ऐसा न होवे जो व्है हतिया ॥ सेठ० ॥ ५ ॥

० दोहा ०

सेठ वदे शारद-हृदय, नहिं अक्षर को ज्ञान।
कुण माने कोची कहो, तुझ से छानो स्थान ॥ १ ॥

ढाल ५७ मी ॥ तर्ज- मांड० ॥

यह चिन्ता करारी, मेटनवारी, थां सम और न एक।
मै नजर पसारी, शहर मँजारी, इणमें मीन न मेख ॥ टेर ॥
एता दिन एला - गया रे छूटा खान ने पान।
पिण कोई नहिं पूछचो म्हाने, चतुर थवा नादान हो ॥ यह० ॥ १ ॥
राजाजी री स्यान सुधारी, मेटचो जनता दुक्ख।
आज कोई रे परवा है नांही, किणसूं मिलावूं रुक्ख हो ॥ यह० ॥ २ ॥
पतो बतावे मो - भणी रे दाखे और उपाय।
तो छोड़ूं नहीं, लावूं छिन में, दाखूं सौगन्ध खाय हो ॥ यह० ॥ ३ ॥
डरूं नहीं यमराज सूं रे, तो दूजा किण ज्ञान।
प्रण ऊपर मैं प्राण बिछावूं, करले परीक्षा आन हो ॥ यह० ॥ ४ ॥
महर करी मुझ ठौर बता दे, जहाँ है राजकुमार।
फिर कोशोश करूंला बहिनी!, पक्की दिल में धार हो ॥ यह० ॥ ५ ॥
एक मास में जो न मिले तो, जरसूं अगनी जार।
हृदय सेठरो गद - गद होग्यो, छूटी आंसूं धार हो ॥ यह० ॥ ६ ॥
म्हारो मित्र हृदय रो वटको, सटके देगो छेह।
अंतर उनसे है नहीं रे, एक जीव दो देह हो ॥ यह० ॥ ७ ॥

– ढाल–मूलगी –

कोची कहे कायरता तज दो, थें हो सेठ महान।

कठिण जीतणो सेठो! उणाने जुड़ियो राज गमासूं जी ॥श्री०। १०२॥
परणादूं कन्या नहिं माने, वो नृप मिथ्या मांही ।
बाया समकित धारी पक्की, डिगती नहीं डिगाईजी ॥श्री०॥१०३॥
इसी समस्या में मैं फसियो, शल्ला दो सुखदाई ।
कन्या रहै. राज नहिं बिगड़े, अकल उपावो भाईजी ॥श्री०॥१०४॥

ढाल ४८ मी ॥ तर्ज- धम्मो मंगल महिमानिलो० ॥

सेठ वदे स्वामी सुणो, पाछो आवूं पूछ ।
हूंकारो मिलजाय तो, ऊँचो रहसी मूंछ ॥ १ ॥
उत्तम अवसर सांध ही, उत्तम देवे सहाय ।
उत्तम उत्तमता भजे, देवे दुक्ख हटाय ॥ टेर ॥
सीख लही ने सेठ आ, बैठो कुँवर पास ।
वयरसीह बतलावियो, सेठो ! केम उदास ॥ उत्तम० ॥ १ ॥
गुप्त बात सेठों - तणी, सुण बोल्यो सुकुमार ।
भजो शान्ति, चिन्ता तजो, देसूं तस मद गार ॥ उ० ॥ २ ॥
मिलियो महिपति से सही, सेठ संगाते जाय ।
मत डरपो हाजर अछूं, देसूं देण मिटाय ॥ उ० ॥ ३ ॥
दूत मुखे कहलावियो, कनकपुरी - नृप - कान ।
जैन बणो कन्या मिले, नहितर देखो आन ॥ उ० ॥ ४ ॥
जा सँभलाई दूत ते, श्रीपुर - पति नी बात ।
प्रजल्यो घृत-पावक जिसो, सैन्य सजी उत-आत ॥ उ० ॥ ५ ॥

— छप्पय-छन्द —

मान चढ्यो महिपाल, लाल आँखों कर डारी ।
कर देसूं चकचूर, भूर भूखो इणवारी ॥
म्हांसूं राखे गाढ़, अकल गइ उनकी सारी ।

मैं तो तुच्छ आपके सन्मुख, अरु ऊमर नादान जी ॥श्री०॥११०॥
मांह पधारो बात बतावूँ, सेठ साथ गये चाल ।
कोची कथन करयो युक्ती से, सेठ कान में डाल जी ॥श्री०॥१११॥
कर तरकीब तीन दिन भीतर, काज कुँवर का सारे ।
नहितर सत्य मानजो सेठों!, विजनस उनको मारे जी ॥श्री०॥११२॥

ढाल ५८ मी ॥ तर्ज—दादरा ॥

बतायदे बतायदे बतायदेनी ए, थोड़ोसोक मारगियो बताय देनी ए ॥टेर॥
जीवनभर उपकार न भूलूँ, योतो पड़ियोड़ो सुजस उठायलेनीए॥थो०॥१॥
एक बचायों सहस्त्र बचेगा, एक दया के ऊपर रहनी ए ॥थो०॥२॥
कोची का दृग अँसुवन भरिया, तत्त्व बात है उरजेनी ए ॥थो०॥३॥
मित्र-द्रोह का डर उर शाले, गुप्त बात मुख से कहेनी ए ॥थो०॥४॥
मतडर, मतडर, मतडर मन में, न्याय-मार्ग में तूँ वहनी ए ॥थो०॥५॥

* दोहा *

इणपुर में वैश्या-सदन, खग तन बीच कुमार ।
अकल लगाकर ओलखो, मैं जाऊँ निज द्वार ॥ १ ॥

— कवित्त —

डरे मत सरे आम काम यो करूँगो सारो—
थारो नाम आसी नहीं पेट मांहै जानजे ।
किन्तु तरकीब कोई होय तो बतादे मुझे—
ज्यादा नहीं लागे देर हिया बोच ठानजे ॥
अछाना उपाय कांई आप से है सेठ स्हाब—
इन पुर बारे सारे मिले नहीं आन जे ।

कित नवहत्थो शेर, कहाँ बकरी बदकारी ॥
जैन बणावे हम भणी, रांक बांक राखण सघर ।
जिणरो मजो चखायदूँ, सरदारों बाँधो कमर ॥ १ ॥

— दोहा —

दोडचो दल ले दलपती, घेरो नगर घिराय ।
पथ रोकी पसरचो प्रबल, गये लोक घबराय ॥ १ ॥
रिण-रसियो हँसियो कुँवर, कस्यो कमर पट-कूल ।
हय हाँकी बाहिर गयो, समर-थले कर शूल ॥ २ ।
जाय कह्यो हटिये जरद, घेरो तज धर गाढ़ ।
दटिये अब नटिये नहीं, सटिये अवसर षाढ़ ॥ ३ ॥

ढाल ४९ मी ॥ तर्ज– नवीन रसिया० ॥

लपको मतकर रेतूँ लाडी, ओ तो लश्कर है वांको ।
ओ तो लश्कर है बाँको, जिणसूँ धूजे नर लाखों ॥ टेर ॥
चमूपती रे चटकी लागी, रोस अणूती उर में जागी ।
आयो कठासूँ घेरो तोड़वा, नाम कांई थांको ॥ ल० ॥१॥
इस दल को जो पीछा मोड़े, लाख करो वो बचे न कोरे ।
छोरों को नहीं ख्याल, दूध नहिं सूको है मा-को ॥ ल० ॥२॥
सीधी तरह कन्या परणावे, राज, प्राण दोनों रह जावे ।
नहीं मानो तो सत्य मानजो, मरणां रो आंको ॥ ल० ॥३॥
वीर वयरसी वोला तड़की, इतनो वात कहो क्या कड़की ।
कन्याका कहाँ दर्श, अठे घर नहिं है नाना को ॥ ल० ॥४॥
अगर व्याह की होय तमन्ना, आजाओ मैदाने बन्ना ।
व्यर्थ वको मत होय वावला थोड़ी समज राखो ॥ ल० ॥५॥

सेठ सुणी सीख दीनी कीची पींची गेह निज-
सोचे है उपाय सद्य सुधा-रस-पान जे ॥१॥

ढाल ५६ मी ॥ तर्ज- चौक नी० ॥

नर उपकारी दुर्लभ दुनियों-मांय थोडासा जानजो।
ज्यों दरिया में मीठा जल आइठाण हिया में मानजो ॥ टेर ॥
शहर मध्य सभा कीनी, जनता सर्व बुला लीनी।
जब राजाजी आज्ञा दीनी ॥ न० ॥१॥
कोई नहीं घर में रह जावे, जो रहसी शक्त सजा पावे।
इसड़ी जो डूंडी पिटवावे ॥ न० ॥२॥
सुण, खलक मुलक आ जुड़ियो है, मानव नहिं पाछो मुड़ियो है।
जित सेठ वचन ऊचारियो है ॥ न० ॥३॥
राजा पै आफत आई है, कल दुश्मन लेगा ढाई है।
एक अकल याद मुझ आई है ॥ न० ॥४॥
रूप बदल कब्जे करले, या जादू सेती हरले।
वो मन इच्छित झोलो भरले ॥ न० ॥५॥
जो शेखो काढ दियो सारा, तो मरणारा चिन्ह म्हांरा।
यह सत्य वचन सुणलो म्हारा ॥ न० ॥६॥
कुँवर प्रथम संकट टारयो, उसको रिपु छांने मारयो।
अब अपणो काम अपों धारयो ॥ न० ॥७॥

- दोहा -

डर वड़ियो दुनियाँ हृदय, किसी वणी करतूत।
जे भाखी ते ना वणे, 'तो' जबर उडे सिर जूत ॥ १ ॥

लेनपती ललकारी भाखे, वढ़ो अगाड़ी क्या इत भांके।
भिड़गये भट अनपार, जोर रो हो गयो है हाको ।। ल० ।। ६ ।।
नाना-विध वहाँ शस्त्र चले हैं, जोधा तो नहिं भिल्या भिले हैं।
ढाल कही गुनचासमी 'मिश्री' लोभ परो न्हांको ।। ल० ७ ।।

– दोहा –

वैरीदल में वयरसी, वड़ियो जा-विधि वाघ ।
हलफलिया सारा हुवा, सहस फुणो लखि नाग ।। १ ।।
लगे जठै कट-कट पड़ै, वठै मिले ना माग ।
वयरसीह - वल - सिन्धु में, पड़ै, लहै कुण थाग ।। २ ।।

ढाल ५० मी ।। तर्ज– कड़खा० ।।

सूर मुख नूर रवि-तेज के पूर ज्यों, दूर थी ढ़हपड़े दहल सारा।
ओट विन चोट या पोट के ज्यों पड़े,आकसा जानलो बान खारा ।। १ ।।
ल्हास पै ल्हास तित दिख रही पहाड़वत्,खून खाला वहै खलल खासा।
आसिया नासिया पीपल पानड़ा सयल चमू छोड़दी जीत आशा ।।सू०।।२।।
जंग में भंग लखि, कनकपुर राजवो, होय तैयार आयो अगाड़ी।
अस्त्र शस्त्रे करी भिड़गयो भूतसो, खोलदी बाण की जबर भाड़ी।सू०।।३।।
खग्ग खरणाट थी धरा आखड़हड़े, हड़भड़े शेष पिण भीत पामी।
लड़थड़े कायर वायड़ बापड़ा, जोध जुड़िया जित कौन खामी ।।सू०।।४।।
श्रीपुर राजवो फौज लेकर खड़ो, दूर थी दंगल देख रहियो।
शहर के कंगुरे कंगुरे जन सभी, कुँवरना जोस थी होंस गहियो ।।सू०
तीर, भाला वहै वर्छि बरणाट ही,शेल,शमशेर, मुदगर, मुसण्डी।
गदा घनघोर पुनि तोमर, त्रिशूल घन, खेत खोधा खरै हो घमण्डी
देव, दानव धरै पैर पाछा तदा, अरे भइ! फेट में आय जासों

ढाल ६० मी ॥ तर्ज– चेलों रा भरमाया दर्शन मोड़ा दीना राज० ॥

कठे जावों किने केवों, किसो वणियो सूत ।
कवण मेटे आपदा ने, इसो कुंण मजबूत ॥ १ ॥
म्हारा सारा सुणो सेण, राजाजी ने केम बदलो, मानो किण विध केण ॥टेर॥
नित नया इत वणे खिलका, कै कौतुक जोय ।
नइ निभै जो राज यांसूं, संभला देवे सोय ॥म्हा०॥२॥
ऊने पूछै जिने पूछै, मचगयो घमरोल ।
बीच में ही बोली मदना, मान मोटो तोल ॥म्हा०॥३॥
रूप बदलूं महीपतिनो, करूं पहले कौल ।
राज आधो मुझे आपो, चल सकै ना पोल ॥म्हा०॥४॥
सेठ कहे ना फर्क इण में, चला माया जाल ।
लकुट ले संग सेठ बैठो, काख मांये घाल ॥म्हा०॥५॥
पाणी छिड़क्यो भूपती पै, पिण लकुट के स्पर्श ।
चलो नहीं चातुर्यता उत, मलिन मुख भो अर्श ॥म्हा.॥६॥
अधो मुख सा रही ऊभी, सेठ खीज्यो खास ।
ढाल है या साठमी रे, कुंवर पुण्य प्रकाश ॥म्हा०॥७॥

* दोहा *

चुटो पकड़ चौगान में, घींसी ढोर जिसान ।
बतलादे कुंवर भणी, प्यारा जो व्है प्रान ॥ १ ॥
इसी रीस सेठों तणो, कदे न देखी कोय ।
आज अचम्भे हो रही, जनता सारी जोय ॥ २ ॥

ढाल ६१ मी ॥ तर्ज—जगत् गुरू तृसला-नन्दन वीर० ॥

पोपट लीनो खोसने जी, आपुण कब्जे कीन ।

नाचत भैरवी भैरव साथ ले , खप्पर भरत है जान आसी ।।सू०।।७।।
रीस में ऊछले दुहूं गजराज ज्यों, चालगी सम वण्यो वदन व्हांको।
रुपगया पैर जहाँ वड़-वड़ शेल ज्यों,लोग कहे जबर यो वण्यो साको।।सू.।।८।।
वयरसी वीर गभीर अरु धीर है, लाखों सूँ ले रया यह झड़ाका।
कनकपुर राजवी शंकियो मन जबै, अवसर वयरसी जान सीधो।
ढाल पच्चासमी पकड़ काठो लियो , नगाड़े जीतको डंक दीधो ।।सू०।।९।।

– सोरठा –

जस छायो जग जोर , दौर दौर पावों परै ।
सुर, नर फूलों फौर , जय जय कर वर्षा रहै ॥ १ ॥
जिण्यो न जननी और, इसड़ो सुत इल ऊपरे।
एकलड़ो रण - ठौर , लियो झड़ाको जोर सूँ ॥ २ ॥

ढाल ५१ मी ॥ तर्ज– पपैयो बोल्यो सा० ॥

घाव साजा करवाया जी , सात दिनों के बाद, सभा में कुँवर पधारया जी।
कनकपुर-पति को लाया जी, कहेकर के यह वाद, कौनसा कारज सारया जी।।१।।
इज्जत अरु राज्य गमाया जी, जो करे व्यर्थ तकरार, निरर्थक दीना न्योता जी।
व्याह मर्जी से होता जी , करे अणूती राड़ , वही नर खावे गोता जी ।।२।।
कनकपति मद-भर बोला जी, थें मिलिया झूँझार जिणी से खाया झोला जी।
अन्यथा यह क्या जीते जी, इतनो कांई करार, लिया मोटों का ओला जी ।।३।।
छोड़दो अब तो म्हांने जी , राज पाट लो सर्व , साच मैं भाखूँ थांने जी ।
कुँवर कहे मुझ नहिं च्हावेजी, 'पर' मतना रखिये गर्व,किसी को नहीं सतावेजी ।।४।।
हुवा खुश सारा मन में जी, यह निर्लोभी महाभाग, भलाई भरी सु मन में जी।
मिले दुहूँ बाँह पसारी जी, दियो द्वेप सब त्याग, धन्य धन जन कहे जनमें जी ।।५।।
ऐसा नर विरला जग में जी,यांरे लोभ नहीं लव-लेश, राग ज्यांके रग-रग में जी।

बता-वता झट पापणी जी रे, क्या क्या दुख तस दीन रे ॥१॥
लोगों देखो इणारा रे काम ॥ टेर ॥
महा पुरुषां सूँ ना टली जी रे, औरों री कांई शंक।
इतनी या मद में भरी जी रे, राज्य मांग्यो निशंक रे ॥लो०॥२॥
जो लों आ नहीं हाँनरे जी रे, तो लो कोडों री मार।
बंध करो मत भूलथी जो, देवो राज रो भार रे ॥लो०॥३॥
विद्या सारी विसरगी रे, दण्ड तणो परयोग।
इज्जत सारी उडगई रे, हँसे सारा ही लोग रे ॥लो०॥४॥
मद छोड़ी मदना कहे रे, भारी हो गई भूल।
स्वारथ वश में सेठ जी रे, आ मैं खाई धूल रे ॥लो०॥५॥
सूवा बनाया सांतरा जी, अब नहीं मानव होय।
कारण, विद्या भूलगी जी, हुई फजीती मोय रे ॥लो०॥६॥
मो मरवा रो दुख नहीं जी, दुक्ख कुँवर रो देख।
पशू पणो कैसे मिटे जी, कुण मारे रेख में मेख रे ॥लो०॥७॥

* दोहा *

सेठ काढ शुक को तदा, लकुट स्फर्श तन तीन।
प्रकट कुँवर होग्यो प्रवर, ज्यों रवि प्राची चीन ॥१॥

– ढाल-मूलगी –

लोक सकल राजी हुआ सरे, कुँवर साब ने देख।
मिला सेठ से स्नेह सूँ सरे, चतुराई को पेख जी ॥श्री०॥११३॥
धन्यवाद है आपको सरे, पूर्ण मित्रता राखो।
वरना यह संकट था भारी, कहीं न बचना बाकी जी ॥श्री०॥११४॥
मिला भूप आदी सब-जन से, राज-भवन में आया।
राज-कन्या ने किया पारणा, आनन्द मंगल छाया जी ॥श्री०॥११५॥

ढाल ६२ मी ।। तर्ज—न्यालदे की० ।।

मदना ने श्री वयरसी जी, काँई, फटकारी फंफेर ।
ऐसा कृत क्यों कर रही जी, कांई, जीवन बीच ग्रंधेर ।।१।।
अब तो सुधारो ग्रातमा जी० ।। टेर ।।
मदनमालती तिरण समेजी, कांई, कर रही पश्चाताप ।
हाथ जरचा, होला ढुरचा जी,कांई, नाहक बँधिया पाप ।।ग्र०।।२।।
अब दासी छूं रावरी जी, कांई, कीजे मर्जी जेम ।
मैं तो पल्लो आपरो जी, कांई, झाल्यो पूरण प्रेम ।।ग्र०।।३।।
इतेक कोची कह उठी जी, कांई, सुणजो राजकुमार ।
पुनवानी पोते घरणी जी, कांई, सहायक पग-पग सार ।।ग्र०।।४।।
सेठ समारचो काम यो जी, काँई, नातर लगती देर ।
मदना और मैं दो जणी जी,कांई, भेर करचो सब स्हेर ।।ग्र०।।५।।
घमण्ड आप कीजो मती जी, कांई, अधिकाधिक जग-मांय ।
व्याह तीनों कर लीजिये जी,कांई, दुविधा सहु मिटजाय ।।ग्र०।।६।।
शोध करो बड़-भ्रातनी जी, कांई, मिलजासी निश्चिन्त ।
'मिश्री' बासठ ढाल में जी कांई, कोची समय सधन्त ।।ग्र०।।७।।

* दोहा *

मदना ग्ररु नृप कन्यका, कोची को प्रस्ताव ।
स्वीकृत करावरण कुँवर से, विनती कीध सताब ।।१।।
ध्यान कुँवर दीधो नहीं, सीधो कह्यो सटाक ।
क्रोड़ करो मानूं नहीं, मेरा प्रण है पाक ।।२।।

ढाल ६३ मी ।। तर्ज— गांधण जी री० ।।

वी कहे ताणो मती हो,हठ भीना,नहीं ताणन में सार,सुणो रसभीना हो,कुँवर

दोनों तट उद्यान अनूपम, हरिया तरू अमीर जी ॥ श्री० ॥१२३॥
रस भरिया स्त्री, पुरुष अनेकों, मारग शोभ वढावे ।
तरुण चढ़यो तोखार तेजस्वी, देखी ने वतलावे जी ॥श्री०॥१२४॥
काँई नाम अरु आया कठासूँ, कठे जावणरी चाह ।
आयो पूर्व सूँ जाणो शाङ्ग-गढ़,आज ठहरसूँ यांह जी ॥श्री.॥१२५॥

ढाल ७२ मीं ॥ तर्ज– रे जाया ! तुझ बिन घड़ी रे छमास० ॥

णरे घरे पधारसोजी रे, कहोतो देवो वताय ।
या ठहरो धर्मशाल में जी, सो साम्हे रही दिखाय ॥१॥
विदेशी रे भाखो मनरा रे भाव ॥टेर॥
कुँवर कहे पंथी-भणीजी रे, कुंण राखे घर मांय ।
धर्मशाला सब से शिरे जी, हरको धरको नांय ॥वि०॥२॥
वहाँ से वयरोसिह जो रे, धर्मशाल पौचन्त ।
अधिकारी पर-जापतीजी रे, ठहरन हित पूछन्त ॥वि०॥३॥
सुखे विराजो म्हावसूँ जी रे, जो भी सेवा होय ।
शंका तजकर भाखजोजी रे, काम हो जासी सोय ॥वि०॥४॥
मुहरों दी तस हाथमें जी रे, भोजन देवो बनाय ।
जीम्यों पाछे और भी रे, देसूँ काम बताय ॥वि०॥५॥

*** दोहा ***

कुम्भारी त्यारो करी, भोजन दियो जिमाय ।
इते नफर कन्या - तणां, आकर दोध सुणाय ॥ १ ॥
सुणो विदेशी बातड़ी, बिन आज्ञा पुर मांय ।
आया सो अपराध है, चलो बाई बुलवाय ॥ २ ॥

ढाल ७३ मी ॥ तर्ज– आ काँई धून्धी आई रे० ॥

यह कैसा कानून, पूछ कर यहाँ आना ।

जो इसड़ो हठ झेलियो हो ,कुँवरजी,रहसो अखंड कँवार,सार मैं दाखूँ हो, कुँ०॥॥
शार्ङ्ग-भूप री डीकरो हो,कुँवरजी, सात कोटसमांय, उसे कोई तोड़े हो, वलधारी।
वा परणीजे उण भणीहो,कुँवरजी,हाल परणिया नांय,फेरकांइ आशाहो,वर-वारो॥
रूप रती, मति गीष्पति हो,कुँ०, गति मानो गजराज, अति गुनवारी हो, दातारी।
सती,क्षति काचित नहीं हो,कुँ.,छति छोणी सिरताज,कलावती प्यारी हो,ज्ञातारी॥
पद्मसेणा री लाडली हो,कुँ०, नियम लियो है धार, भूप केई भटके हो जावाने।
पिण जाणो दुष्कर घणो हो कुँ.,विन मुख हो नर सार, रात-दिन रटके हो,खावाने॥
जो गुण,कला पुनि विज्ञता हो,कुँ.,सुण गया उत जो दोर,लौट नहींआया हो,निज भवने
वा आँटी छोरे नहीं हो, कुँ., मिले न इसड़ी जोड़,हो गया काया हो, सुन-सुन ने॥५॥

॥ दोहा ॥

वीर वांकुरो वयण सुण, ततछिन हुयगो त्यार।
किसी शार्ङ्ग री है सुता, नयनों लेउ निहार ॥ १ ॥
कोची कहदे कोटड़ा, किसा किसा है तेथ।
किता कोश, मारग किसो, वही वणावूँ वेत ॥ २ ॥

ढाल ६४ मीं ॥ तर्ज– पहलो तो पासो रायवर ढालिये० ॥

कहना पर क्यों कर कम्मर बाँधली, पहली वीती कांइ गया भूल।
इतरी उतावल नहीं है कामरी, सोचो हिरदा सूँ कारण मूल ॥ १ ॥
सुगणा स-सनेही, शार्ङ्ग-सुता ने देखण दोहली ॥ टेर ॥
कोश ढाई से शारँगपुर वसै, देश अनोखो घणो विशाल।
राजा रढ़ियालो शार्ङ्ग देव है, कोट भयंकर सात संभाल ॥ सु० ॥ २ ॥
वृश्चिक,अहि,अगनि, गज पुनि सींह है, वज्र कांटा ने राक्षस-सात।
सज्जन ने शाताकारी सर्वदा, दुश्मन एक पग भी नहीं भरात सुं०॥ ३ ॥
राजा आंटीलो, सुभट सूरमा, वावन तुंगा है सैन्य सधीर।

नहीं मानव का धर्म, पथिक को संताना ॥ टेर ॥
तो भी चलो हमें डर नांही, सत्य बात कह देंगे व्हांही ।
आया भृत्य के साथ, पूछा क्यों बुलवाना ॥ यह० ॥ १ ॥
जोश-भरी कन्या कहे वाणी, बिन पूछे आये क्या ठानी ।
शक्त किया अपराध, सजा का है पाना ॥ यह० ॥ २ ॥
वयरिसीह उत्तर जब वाला, यह कानून सुना है निराला ।
कहीं नहीं है रोक, जाते हैं मनमाना ॥ यह० ॥ ३ ॥
करी भूल यहाँ आ निकले हैं, नहिं मानवता की सिकले हैं ।
सजा करन की बात जिगर में मत लाना ॥ यह० ॥ ४ ॥
गीदड़ घुरकी को सुनकर के, जो हम लोग हृदय में थर के ।
फिर क्या क्षत्रिय जात जन्म ले लजवाना ॥ यह० ॥ ५ ॥
मन की हूंस निकालो सारी, कौन सजा देनी दिलधारी ।
दे देना दिलखोल पाहुना मनमाना ॥ यह० ॥ ६ ॥
फिर कौशीश करेंगे हम भी, देख लेवेंगे शक्ती तुमकी ।
यह 'मिश्री' का मेवा शोख से खा जाना ॥ यह० ॥ ७ ॥

* दोहा *

विजयसिंह-नृप-बालिका, कड़क बोलि युत क्रोध ।
शक्ती हमरी शोध ले, जग जन्म्यो कुण जोध ॥ १ ॥
अयि सुभटो ! सामान अस, बेखटके लो खोस ।
कड़ी डाल कारागृहे, डालो तंज अफशोष ॥ २ ॥

ढाल ७४ मी ॥ तर्ज– जय बोलो महावीर स्वामी की० ॥

जय राज-सुता जय हो तेरी, करें आज्ञा-पालन विन-देरी ॥टेर॥
भट ऊठ कुँवर पै आया है, झट बाँह पकड़ सुनवाया है ।

इतरो दुख देखे कन्या कारणे, जिणरे वश होवे बावन वीर ॥सु०॥ ४ ॥
आशा अणूती जे नर धारले, व्हांरा घर समजो समुंदा-पार ।
इणसूं विराजो सुखसूं राजवो, सारा सेवा में है सरदार ॥सु०॥ ५ ॥
वारे अब मतना प्रथम छेड़ने, कलावती रो कौतुक काय ।
पूरी तरह सूं मै संभाल सूं, डरिया रड़वड़िया जग के मांय ॥सु०। ६ ॥
राजा दोनों ने व्हांरी कन्यका, फेरूं सेठों ने वो समझाय ।
चाल्यो वयरसो 'मिश्री मुनि' भणे, बुद्धि बल तीजो तन उत्साह ।सु०॥७॥

– ढाल–मूलगी –

विजय-दण्ड ने उडन-खटोला, पावड़ियों, कंथाय ।
सेठ-सहाव से तुरत मंगाई, साथे ली सुखदाय जी ॥श्री०॥११६॥
रैवत पै चढियो रढियालो, सब से मिलकर जाय ।
शुकन हुवा है सब मनच्हाया, हृदय हिलोरा खाय जी ॥श्री०११७॥
भोजन, धन वा कथा पूरे, घणा विलोके स्थान ।
रात-वसेरो लेवे लाडलो, पर्वत, सर, उद्यान जो ॥श्री०॥११८॥

० दोहा ०

प्रचुर भाग्य तन प्रवलता, साधन सखरो संग ।
सुकरत संचित जेहने, तेहने मिले उतंग ॥ १ ॥
माणिकपुर रा वाग में, ठहरयो देखी ठाठ ।
दिन ऊगो नर दौड़तों, आयो करे अरड़ाट ॥ २ ॥

ढाल ६५ मी ॥ तर्ज– नर-भव निकमो गमाय दियो रे० ॥

वितडा ने देख पूछै इतरो रोवे क्यांई,अरे मुझे तो आप बचाओ,मारडालेगा यांही ।
पकड़ण वाला म्हारे लारे आयरया रे ॥ १ ॥
सहायक हमारा कोई नहीं रया रे, भाग्य भी हमारा दगा देय गया रे ॥टेर॥

अब चलो जेल में इस वेरी ।। जय० ।। १ ।।
प्रथम सामान हमें दे दो, कुँवर कहे क्या इत वेंदो ।
हटजावो अगर च्हाते खेरी ।। जय० ।। २ ।।
यों कहकर झटका इक मारा, गिरपड़े सुभट वहाँ थे सारा ।
मानो जीर्ण भींत की व्है ढेरी ।। जय० ।। ३ ।।
कन्या ने विगुल बजाई है, सेना को शीघ्र बुलाई है ।
राजा सुन सोचा क्या एरी ।। जय० ।। ४ ।।
आकर के दृश्य निहारा है, नृप सुता से जाना सारा है ।
यह कौन कुँवर ऐसा गैरी ।। जय० ।। ५ ।।
नृप कुँवर को ललकारा है, क्या उद्देश्य तुम्हारा है ।
घर आकर राड़ तुम्हें छेरी ।। जय० ।। ६ ।।
नहीं आया, मुझे तो बुलाया है, मुझे जेल का हुकम सुनाया है ।
है कन्या आपकी अति बेड़ी ।। जय० ।। ७ ।।

— कवित्त —

घूंमे हैं अनेकों पुर वाट घाट पाड़ झाड़,—
आश्रम रु ग्राम नग्र सन्नी वेष झिले हैं ।
मिले हैं भले रे भूप शाह सुलतान केई—
गढ़ कोट खाडी लंघी नामी ग्रामी किल्ले हैं ।।
महात्मा रु दुरात्मा भी ठौर ठौर चोर डाकू—
पण्डित गुणज्ञ संत कलाकार छिले हैं ।
किन्तु पूछ आवो हम पुर में पथिक सारे—
अन्यथा पाओगे सजा ऐसे यहीं मिले हैं ।।१।।

— दोहा —

शस्त्र धरावे हाथ से, होकर नारी जात ।

इतने में तो कोतवाल फौजी लोक साथे, आया हल्लो करता पकड़ो कहीं भाग जाते।
थर-थर धूजे तन काँप रया रे ॥ स० ॥ २ ॥
कुँवर फिरयो है आडो, ठैर जावो भाई, शर्णे हमारे आयो, मार सकते नांही।
बतादो नुक्शान थांरे कांई हुया रे ॥ स० ॥ ३ ॥
कोटवाल कहे, आज्ञा मारवारी चौड़े, राजाजी रो गुन्हेगार इणने कौन छोड़े।
शरणागत री शान राखे वे तो मूया रे ॥स०॥४॥
शरणों लियों रे बाद उणने मार लेसी, थेंही तो बतावो पछै क्षत्री केने कैसी।
शर्णागत राखे ज्यांरा पंथ जुया रे ॥ स० ॥ ५ ॥

० दोहा ०

कोटवाल करड़ो अखै, कौन छुरावे छेक ।
पाण कितो है पेखलो, पास बिठाकर देख ॥१॥

ढाल ६६ मी ॥ तर्ज– राजा रे राघव राय कहावे० ॥

एलो परखलो पौरुष प्यारा, यह अपराधी तुम्हारा रे ।
मेरे पास से कौन छुरावे, धड़ सिर करदूं न्यारा रे ॥ १ ॥
मन में मत राखीजो मर्दों !, यो पड़ियो मैदानो रे ।
पाछा पग थें मतना धरजो, रंग जुड़ियों घमसानो रे ॥टेर॥
अपराधी ने पकड़ण सारू, वे पांवडा भरिया रे ।
कर पग शाही कुंवर घुमाई, फेंक्या इत उत पड़िया रे ॥म०॥२॥
अश्व दौड़ाई, नृप पै जाई, सारी बात सुनाई रे ।
राय रिसाई, फौजों सजाई, आया कर अकड़ाई रे ॥ म० ॥ ३ ॥
घसमस ऊठयो कुंवर रूठयो, तूठयो ज्यों वर्षालो रे ।
चमू चहूं दिश मांय विखेरी, बाँध्यो नृप मूंछालो रे ॥म०॥४॥
कोनो शाको हुयग्यो हाको, काकी जायो करड़ो रे ।

जिसका मजा चखायदूँ, निपट तुम्हें नरनाथ ॥ १ ॥

ढाल ७५ वी ॥ तर्ज—जोगी से पास फरमाते, धुनी में नाग काला है० ॥

मिले बिल बिल तुम्हें मूषा, कहीं तो नाग काला है।
पता नहिं आजलो पाया, ऐसा अभिमान आला है ॥ टेर ॥
किसी के चलते मारग में, अगर कोई डगर ला डाले।
भला क्या ? कहेंगे उसको, अकल के दिया ताला है ॥मि०॥१॥
आँख का देख के पानी, विजय नृप ने विचारा है।
इसे करें कब्ज में कैसे, ढ़ंग दिखता निराला है ।मि०॥२॥
प्रथम विश्वास देकर के, फजीती इसकी करनी है।
सभा में चलो, नृप भाखे, समझगे कुँवर चाला है ॥मि०॥३॥
कन्या की वयरसी वेणी, ले चला पकड़ नृप देखे।
कुँवर कहे छुडाले राजा, अगर तूँ आन - वाला है ॥मि०॥४॥
खडाऊ पहनते घोड़ा, अधर आकाश में दौड़े।
देखते रह गये सारे, अरे किस मां का लाला है ।मि०॥५॥

– ढाल - मूलगी –

पाँच कोश पै एक सरोवर, रोक वहां पै घोड़ा।
कन्या से कुँवर यों पूछा, कहो बाला हो सोरा जी ॥श्री०॥१२६॥
और तेरे से कुछ नहीं लेना, नहीं वैर की बात।
शार्ङ्गगढ़ जावारो मारग, बतलादो हम च्हात जी ॥श्री०॥१२७॥
पहले मुझको आप छोड़ दो, सच्ची राह बतावूँ।
अभरोसो मत आणो मनमें, अब ना कपट रचावूँ जो ॥श्री०॥१२८॥

* दोहा *

मान हान कर ज्हान में, मर्द लियो मैदान।

एकलड़ो जीत्या सारों ने, कर देशी ओ परड़ो रे ॥ म० ॥५॥
हाथ जोड़ ने पावों पड़िया, बन्धन नृपना टरिया रे।
इण पापी ने केम बचायो, जुलम घणां इण करिया रे ॥ म० ॥६॥
सत्य सुनादो कांई कियो है, जिणसूं मालुम होवे रे।
बिन निर्णय कर देना दण्डित, न्याय नीति पथ खोवे रे ॥ म० ॥७॥

० दोहा ०

राज्य-सुता अपहरण-हित, रचियो पापी जाल।
याते मृत्यु - दण्ड मैं, दीना इसे दयाल ॥ १ ॥
उससे पूछा निकट ले, सत्य सुना मो बात।
सो भाखे अब आदि से, कहूं जोड़ि दुहुं हाथ ॥ २ ॥

ढाल ६७ मी ॥ तर्ज–मनवा समझले रे वीर० ॥

श्रीपुर को मैं रहवन-वारो, श्रीधर सेठों-वारो।
महिधर नाम माल ले आयो, सेठ-साहब रो शालो ॥ १ ॥
वीती बात सुनाऊँ जी क, वीती बात सुनाऊँ जी।
जो झूठी हो जाय, मृत्यु को दंड मैं पाऊँ जी ॥ टेर ॥
विणज वढ़ायो, खूब कमायो, दिवाण-सुत वियो साथी।
कोतवाल ने नहीं सुहाई, जाल खेलियो घाती ॥ वी० ॥२॥
एक दिन म्हारे घर पर आयो, वातों इसड़ी भाखी।
छोड़ मित्रता दिवाण - सुत थी, रखणी च्हावे नाकी ॥ वी० ॥३॥
मैं तो सुणी अणसुणी करके, उत्तर टुक नहिं आल्यो।
लाल आँख, भृकुटी कर बांको, पाछो मारग झाल्यो ॥ वी० ॥४॥
चार दिनान्तर मुझ घर चोरी, जबरजस्त करवाई।
माल संघाते मुझ वनिता को, ढोल्या सहित उचकाई ॥ वी० ॥५॥

कहा करूं पहलो मुझे, पड़ी नहीं पैछांन ॥ २ ॥

ढाल ७६ मी ॥ तर्ज- म्हारो पियु ब्रह्मचारी० ॥

बात हमारो है सुखकारी, मैं अर्ज करूं इणवारी रे ॥ है सहायक सारी ॥
करवो अब मुझे मुक्त मुरारी, है तव बल की बलिहारी रे ॥ है० ॥१॥
वयस्थी कोरि वेणी तिणवारी, खुश हो कहे सा नारी रे ॥है०॥
शार्ङ्गगढ की राजदुलारी, मम साधण है सुखकारी रे ॥ है० ॥ २ ॥
समजायस मैं करसूं थारी, आगे मर्जि उणांरी रे ॥ है० ॥
सप्त कोट तोडण भयकारी, विन तोड़्यो लगे नहिं कारी रे ॥है०॥ ३ ॥
कुंवर कहे चिन्ता न लिगारी, क्या सप्त तोडूंगो हजारो रे ॥है०॥
परणन को परवाह न ज्हारो, मद-भंजन मनशा म्हारी रे ॥है०॥ ४ ॥
फिर मिलजो थें समय विचारी, कहदीजो रहे जो त्यारी रे ॥है०॥
ढाल छियंतरमी रसवारी, कहे 'मिश्री' अणगारी रे ॥ है० ॥ ५ ॥

– दोहा –

वाला उड गइ तिण समै, शार्ङ्गगढ सखि धाम ।
वात कथी बीती जिसी, आयो नर अभिराम ॥ १ ॥
निर्भय भट नीतिज्ञ अति, विद्या बुद्धि अपार ।
मैं छेड़्यो, तस्ती मिली, अब इत आवणहार ॥ २ ॥

ढाल ७७ मी ॥ तर्ज- नवीन रसिया० ॥

मुझको क्या डरपावे बहिनी !, मैं नहीं डरने वाली हूं ॥टेर॥
सप्त कोट की ओट ऊपरे, चोट करण वालो ।
इसो नहीं निरख्यो नयनों सूं, जग जननी - लालो ॥ मु० ॥ १ ॥
सा कहे जो नहिं निरख्यो व्है तो, मोरे संग चालो ।
किसो शेर सुलतान मगन निज धुन में मतवालो ॥ मु० ॥ २ ॥

प्रातः काल यो हाल देखने, गाढ़ो मन घबरायो।
इतेक कोटवाल आ पकड़्यो, – मुझे जेल पधरायो ॥ वी० ॥६
नाना - विधसूँ मने मारियो, झूठ कहलावण तांई।
दिवाण-सुत नृप-कन्या लिजासी, नृपने दे बतलाई ॥ वी० ॥७
मैं कयो, तूँ बरबाद कियो मुझ, फिर भी झूठ कहावे।
इणसूँ तो मरणो है आछो, यह अन्याय न थाने ॥ वी० ॥
जद यो चक्कर डाल मेरे पै, हाजर नृप पै कीनो।
बिन निर्णय मुझको मारण हित, हुक्म राजाजी दीनो ॥ वी० ॥

– चन्द्रायणा –

मारण को महाराज ! मुझे ले चालिया,
हीन दीन दुख क्लीन फेर उर बालिया।
पुर के बाहर आत मोखो कर - लागियो,
आयो आपके शरण उन्होंसू भागियो ॥ १ ॥

० दोहा ०

राज-सुता रो माल पुनि, आभूषण अनमोल।
कोटवाल रे घर अछै, चौकस करो स-तोल ॥ १ ॥
अश्विन - शुक्ला सप्तमी, रात उसे उचकाय।
ले जासो यो पत्र है, बाँचलीजिये राय ! ॥ २ ॥

ढाल ६८ मी ॥ तर्ज– डोरी तो लागी रे रसिया करतले० ॥

भाखे वयरसी, नरपति! साँभलो, यो थाँरोड़ो न्याय हो, सौभागी।
माया मारे रे चौड़े चोरटा, भला मरे बिन आय हो, सौभागी ॥१॥
न्याय करोनी आँखों खोलने, सुधरे सारो ढंग हो, सौभागी ॥ टेर ॥
कोटवाल ने कब्जे कर तदा, घर-संभालो लीध हो, सौभागी।

कर-ग्रही बैठ विमान चली संग, परख्यो वे घालो।
चंचल अश्व नचातो चाले, भल के कर भालो ॥ मु० ॥ ३ ॥
प्रथम कोट ढिग कुँवर पहुँचगो, वहै वृश्चिक वालो।
पचरंगा पंखाला पनड़ी, डंक जहर खालो ॥ मु० ॥ ४ ॥
अश्वपदाहट से भीभरिया, ज्यों मक्खी - मालो।
चारोंकानी टिड्डी दल वत, देवे ऊछालो ॥ मु० ॥ ५ ॥
हय रु कुँवर के सभी वदन पर, जमगये ज्यों जालो।
कुँवर कंथा से वृश्चिक - खानो, डाल्यो भर डालो ॥ मु० ॥ ६ ॥
सौरभ से भये मस्त समस्त ही, पियो प्रेम प्यालो।
सितंतरमी ढाल 'मिश्री' कहे, पुण्य है रुखवालो ॥ मु० ॥ ७ ॥

— ढाल—मूलगी —

आगे बढियो है रढ़ियालो, द्वितीय कोट आयो।
पन्नग महा भयंकर व्हांने, सुन्दर पय ही पायो जी ॥श्री०॥ १२६ ॥
सिंह कोट तीजो है तीखो, विजय दण्ड थी सायो।
अबल हुवा सारा ही रक्षक, वा कन्या लखवायो जी ॥श्री०॥१३०॥

— दोहा —

सात कोट तोडया सबल, शार्ङ्गढ के पास।
पहुँचगयो पुण्यातमा, खामी रही न खास ॥ १ ॥
दोनों वाला दौरगी, तात पास ततखेव।
अश्वारोही आवियो, दिव्य रूप ज्यों देव ॥ २ ॥

ढाल ७८ मी ॥ तर्ज— जीव रे तूँ शील तणो कर संग०॥

कुँवर बाग में आवियो जी, वसियो नृप आवास

माल बरामद सारो हो - गयो, अब पूछे परसीध हो, सौ० ॥२॥
दाखो, तलवर आभूषण अठै, लाया कुण से काम हो, सौ० ॥
कांई मनसा थारी वर्तती, पत्र दियो किण हाम हो, सौ० ॥३॥
महिधर मारण किम थे मांडियो, कांई तुम्हारे वैर हो, सौ० ॥
वनिता इणरी माल चोरयो तिको, ला सौंपो विन देर हो,सौ०॥४॥
नहींतर कुत्तों-साथ कटावसूं, जीवत देसूं जराय हो, सौ० ।
चमड़ी सारी सुणले नोंचसूं, पोल चलेगी नांय हो, सौ० ॥५॥
जाल तिहारो जाहिर कर सभी, फिर मरसी बिन मौत हो,सौ०।
नहींतर सत्य हकीकत दाखवो, कांइक होसी धौत हो, सौ० ॥६॥
कोटवाल तो साफ बूबीचगो, उत्तर आपे काय हो, सौ० ।
ढाल आठ ने होगइ साठमी, दगा सगा किम थाय हो, सौ० ॥७॥

– ढाल - मूलगी –

परिषद और प्रजापतीस रे, बड़ा - बड़ा सरदार ।
लियो अचम्भो आकरो सरे, दे उणने धिक्कार जी ॥ श्री०॥ १२० ॥
ले हंटर राजाजी ऊठ्या, वयरसीह तिणवेर ।
कहे विराजो आप जरासा, पछे पूछजो खेर जी ॥ श्री० ॥ १२१ ॥
पकड़ हाथ ले-गया कुँवर जी, कोटवाल ने साथ ।
वनिता माल बतायो सारो, पग-पकड़्या दो-हाथ जी ॥ श्री० ॥ १२२ ॥

– दोहा –

गुप्त-बात दाखूं प्रभो!, कन्या को मो-संग ।
मतो पको ही हो गयो, दोनों रो इक-रंग ॥ १ ॥
खास पत्र भेज्यो उसे,लियो सचिव-सुत वीच ।
भूप भिड़ासी इण-मुदे, कियो काम मैं नीच ॥२॥

वन.रक्षक तस देखने जी, दिल में रया विमास ॥१॥
रे देखो कैसो नर बड़ वीर, डरपै नहीं डरपावियो जी, धीर वीर गंभीर ॥टेर॥
नरपति ने कहलावियो रे, शक्ति, भक्ति, यह दोय ।
दिल च्हावे सो धारलो रे, आण मनासूं तोय ॥ रे० ॥ २ ॥
बागवान नरनाथ ने रे, संभलावी सा वात ।
मन खीज्यो, रींभयों नहीं रे, कैसी करी उत्पात ॥ रे० ॥ ३ ॥
आज तलक धारयो नहीं रे, पीडयों में घणी कोय ।
यो कालो म्हारे लगे रे, स्यूं करवो अब मोय ॥ रे० ॥ ४ ॥
सरदार मुसद्दी एकठा रे, करके सल्ला कीध ।
एकलड़ो अनमी घणो रे, कला कौशल प्रसिद्ध ॥ रे० ॥ ५ ॥
बाईजो परणायदो रे, अपणायत करवाय ।
ठाकर रा ठाकर रहो रे, आज्ञा नांहि मनाय ॥ रे० ॥ ६ ॥
मतो विचारी महिपती रे, बाला से कह्यो बोल ।
व्याह रचावूं थांयरो रे पूरण होग्यो कौल ॥ रे० ॥ ७ ॥

※ दोहा ※

पाणी सूं व्हे पातला, सादी में क्या सार ।
एक वार तो उण भणी, दिखलादूं बल-पार ॥ १ ॥

ढाल ७९ मी ॥ तर्ज- लियो है सांवरिया ने मोल० ॥

लीनो हिया में धार, पिताजी लीनो हिया में धार ॥ टेर ॥
है पति प्यारो, जीवन सहारो, इण भव में भरतार ॥ ली० ॥१॥
विण कुछ करके फिर मैं परणूं तो इज्जत रहै अणपार ॥ली०॥२॥
भाग्य भरोसे व्हे अगवानी, छल बल कल कर सार ॥ ली० ॥३॥
मौन लिवी महाराजा, तो भी, चिन्तित चित की चाल ॥ली०॥४॥

ढाल ६६ मी ॥ तर्ज- कायथड़ा री० ॥

हाँरे कुँवरसा! इसड़ा कर्म कमाविया, हाँरे कुँवरसा! निज स्वारथ रे काज
आज सारी पोल उघड़ गइ पाप सूँ, अब माफी माँगूँ आपसूँ ॥ टेर॥
हांरे, कुँवरसा! आज पछै करसूं नहीं, हांरे, कुंवरसा! रखसूं कुलरी लाज
अब छोड़ो जाणी दास गुलाम जो, अमर बनाओ नाम जो ॥ १ ॥
हाँरे, कुंवरसा! पामरसूं पामर घणो, हाँरे कुंवरसा! मैं न रख्यो मानव पणो
सारी अरज सुणायदी, मैं जल में आग लगायदी ॥
हाँरेक, कुंवर अभयदान दीनो मुदा, हाँरेक राजा अति खुश हुवो है तदा।
जनता में जस छावियो, गुणिजन रो गुण-गावियो ॥ २ ॥
हाँरेक, उणरो वनिता, माल दिरावियो, हाँरेक, सारो कालो कलंक मिटावियो।
उत्तमता रो रूप है, यो करुणा रो भूप है।
हाँरेक, कुंवर! सेठ-साहब रो मित्र हूं, हाँरेक मो पै सेठों रो उपकार।
घर जावो कह दीजो सब वारता, रखो धर्म री आसथा ॥ ३ ॥
हाँरेक, उठासूं आगे जावण भाखियो, हाँरे सारा ही रोक रया नर नार।
काम करड़ो शार्ङ्ग-देव नृपाल रो, छोड़ो यो पंपाल रो।
हाँरेक, मैं तो एकवार जावसूँ, हाँरेक, मैं तो अपणा भाग्य अजमाव सूं।
थे म्हारो जरा सोच कीजो मतो, मोने तो डर नहीं है रती ॥ ४ ॥
हाँरेक, राजा कहे कन्या परणीजिये, हाँरेक, म्हारी विनती या मानीजिये।
हाल ठहरो, पाछो आऊँ जब लगे, देखणदो विषमो जगे ॥
हाँरेक, कैसो राजा वो बलधारो, हाँरे सात कोटों री दृढ़ता री।
मालुम थांने हो जासी, आयां दीजो स्याबासी ॥ ५ ॥

— दोहा —

धारन वक्तर टोप करि, धरी सकल सिरपाव।
झुरती जनता छोड़ के, चट चाल्यो चित चाव ॥ १ ॥

ये दोनों निज रूप फेरियो, पहुँची वाग मझार ॥लो०॥५॥
दोनों किसान करें यों बात, एक आयो सरदार ॥लो०॥६॥
राजाजी रा छक्का छुड़ाया, तोड़या कोट किवाड़ ॥लो०॥७॥

० दोहा ०

वे केड़ा है आदमी, कठै ठहरिया आज ।
मनड़ो च्हावे मिलणकूँ, किसड़ो तास मिजाज ॥१॥

ढाल ८० मी ॥ तर्ज–संतो ! ऐसी दुनियां भोली, संतों ! ऐसी दुनियां भोली।

धरम करंतां लाज मरे ने, परगट खेले होलो ॥ संतों० ॥
कपट नर निर्बल करता है, कपट नर निर्बल करता है ।
सरल पुरुष पुनवान होत, वह निडर विचरता है ॥ टेर ॥
वातों सुणतां कुँवर बोलियो, कांई देखण जावो ।
मिनखों जैसो वो ही मिनख है, व्यर्थ अचंभो लावो ॥ क० ॥ १ ॥
कहे किसान विसान मानवी, धरती ऊपर थोड़ा ।
सप्त कोट तोड़ी राजा ने, देवे पूरण फोड़ा ॥ क० ॥ २ ॥
म्हारा राजा आज तलक तो, आज्ञा निज वर्ताई ।
पिण दूजारी आज्ञा में वे, हर्गिज चाल्या नांही ॥ क० ॥ ३ ॥
अब तो व्याह करणो ही पड़सी, माथा उपरला आया ।
इता दिनों में कोइयन आकर, चमत्कार दिखलाया ॥ क० ॥ ४ ॥
कुँवर कहे इत उत मत भटको, मैं हिज कोट हटाया ।
नहिं परणन की भूख हमारे, यह तो खेल दिखाया ॥ क० ॥ ५ ॥
घणी-खमा अंदाता थांने, म्हाँ भी दर्शन पाया ।
व्याह तणी रंग-रलियों देखण, मनड़ा भी ललचाया ॥ क० ॥ ६ ॥
दिनभर वातों में यूँ वीतो, कुँवर-सहाव निद्राया ।
लकुट, पावड़ियों कंथा, खटोली, कन्या ने उचकाया ॥ क० ॥ ७ ॥

ढाल ७० मी ।। तर्ज–नमूँ अनन्त चौवीसी० ।।

ाहस उर भरियो वयरसीह पुनशाली, मन मोद लहंतो वाट घाट रयो भाली ।
' वासर वहतों आयो शैल उतंग, है भाड़ी उगी चढ़यो रूपर रंग
मणीक स्थान है,जलसूँ भरया निवाण, वृच्छ नाना भाँती औषध रूप महान ।
'र स्नान सुधोदक रस-पूरित फलाहार,कर सूतो तरु तल चरवा लग्यो तोखार ।२।।

एक खगचर-राजा आयो खेलन हेत ।
कुँवर नें सूतो देख्यो नयन उपेत ।।
पूछै कित रहवो कित आवण उद्देश ।
कुँवरजी दाखे कुणछो आप नरेश ।।३।।

ज्योतिष पुरवर निवसूँ गिरि वैताढ़, इत खेलन आयो राणी संग धर गाढ़ ।
ास्मित भो देखी तुम्हें आज इण ठौर,जिणसूँ पूछयो मैं आवण कारण सौर ।४।।
ार्ङ्ग-नृप बलनो माप करण के काज, आयो छूँ अवनिप सज्यो सजायो साज ।
ाद्याधर भाखे, विगर विचारयो काम, क्यों हाथै लीनो हो जासो बदनाम ।।५।।
ो प्रबल वली है, सात कोट की ओट, है स्वेच्छाचारी कर न सकै रिपु चोट ।
म विद्याधर हैं, तो भी माने शंक, जो कियां सामनो छोड़या करने रंक ।।६।।
नड़ी रा वनड़ा वणावा आप उमाया, म्हांने नहीं भाषै भूल करी ने आया ।
ह ढाल सितरमी,कहे 'मिश्रो' अणगार, जो साहस राखै, ताको कौन विचार।।७।।

० दोहा ०

हँसकर दाखे वयरसी, हे विद्याधर - राज !
भली वात भगवन् ! भणो, हो क्षत्रिय-सरताज ।।१।।
मदत न देवो मूलथी, करो कायर मो सेण ।
जची नहीं म्हारे जिगर, वरणो इसड़ा वेण ।।२।।

ढाल ७१ मी ।। तर्ज–म्हांने मुगतपुरी रो मारगियो बताय दीजो रे० ।।

म्हांने शार्ङ्ग-गढ़ में जावारो उपाय वताय दोनी रे ।

सूतोड़ा ने अधर उठाकर, जंगल में धर आई।
शार्ङ्गगढ़ परणीजण वेगा,आइजो जान सजाई ॥क०॥ ८॥
इसड़ो कागद लिखी पास धर, छिटक गई निज घर में।
ढाल असी में कुंवर जागियो, होवत बड़ी फजर में ॥क०॥९॥

— दोहा —

वाग नहीं, कंथा नहीं, पावडियों पिण नांय।
लकुट, खटोला बिन तिहां, कुंवर गयो घबराय ॥१॥
खैर, वणी सो भाग की, हिम्मत हारूं नांय।
पत्र वाँचतां प्रकट ही, कन्या कृत दर्शाय ॥२॥

ढाल ८१ मी ॥ तर्ज– आखिर नार पराई है० ॥

कन्या कौतुक गजब कियो, पाछो बदलो लेय लियो ॥ टेर ॥
फिरे जगल में गोता खातो, नहीं ठण्डो जल, भोजन तातो।
चार चीजों बिन छोजरियो ॥ क० ॥ १ ॥
एक कन्या उत ढोर चरावे, फाटा वसन पिण रूप दृढावे।
कुंवर पूछतां जवाब दियो ॥ क० ॥ २ ॥
मैं ढाणां में रहवण-वारी, पिता नहीं, घर पर महतारी।
शिर पर कर्जो वेहगियो ॥ क० ॥ ३ ॥
भाई शार्ङ्गपुर करे नौकरी, खेती को है जमो मोकरी।
वर्षा विन यो ढंग वियो ॥ क० ॥ ४ ॥
मैं पशुओं का पालन करती, मातृ - आज्ञा में अनुसरती।
धन्य मानती जन्म जियो ॥ क० ॥ ५ ॥

० दोहा ०

घरे पधारो पाहुणा, असन अरोगण आप।

उपाय बताई सुगणा थे तो यो जस लोनी रे ॥ टेर ॥
घणी दूर से चल कर आयो, गढ़ देखण ऊमायो रे ।
जणां-जणां भय खूब बतायो, तो भी नहीं घबरायो रे ॥
होवेला जो भी होनी रे ॥म्हा० ॥१॥
इण भूमी रा आप भोमीया, जाणो जुगती सारी रे।
किण दिन काम आवोला केदो, सूज बूझ व्है थांरी रे ॥
बीज भलपन रा बोनी रे ॥ म्हा० ॥२॥
विना गयों पाछो नहिं जावूँ, आयो दृढ़ता धारी रे ।
दूजी बातों छोड़ दिरावो, हिम्मत बँधावो भारी रे ॥
काम दूजारो कोनी रे ॥ म्हा० ॥३॥
विद्याधर सुनकर कुँवर री, दिवी पूठ फटकारी रे ।
हो हिम्मत रा सागर जबरा, मैं जावूँ बलिहारी रे ॥
वीर, नहीं सूरत रोनी रे ॥ म्हा० ॥४॥
एक उपाव बतावूँ थांने, करलो कर हुँशियारी रे ।
विजय नगर रो विजय सेण नृप, रति रंभा पटनारी रे ॥
कन्या तस विद्या-वोनी रे ॥ म्हा० ॥५॥
शार्ङ्ग-गढ़ रे राज-सुता री, सा साथिन बचपन री रे ।
उणने जो वशवर्ती करलो, वनसी काम मजारो रे ।
वा भी जाहिर नाहर-नारी, उणरो काम निरारो रे ॥
सरल नहीं मानो मोनी रे ॥ म्हा० । ६॥
कर मुजरो, मग पूछ कुँवरजी, आगे सटके हाल्यो रे ।
अश्व नचातो निडर विद्याधर, नोके नयन निहाल्यो रे ॥
'मिश्री' सम लहरों सो-नी रे ॥म्हा०॥७॥

— ढाल - मूलगी —

निकट विजयपुर निरखियो सरे, सरिता भरी सनीर ।

सूखा लूखा सोगरा, रावड़ पीजो धाप ॥ १ ॥

— ढाल - मूलगी —

ढांढा छोड़ जंगल में बाई, आई कुँवर रे साथ ।
मुजरो करतों मंद हास्य सूँ, मीठी बोली मात जी ॥ श्री० ॥ १३१ ॥
अरे बाया ! अे मोटा पाहुणा, कीकर संग ले आई ।
शार्ङ्गगढ़ रा राज-जँवाई, आया जान सजाई जी ॥ श्री० ॥ १३२ ॥
घर रो सार गमायो सारो, इसड़ा है निद्रालू ।
हाथ धुलाओ थे जल्दी सूँ, मैं बाजोटचो ढालूं जो ॥ श्री० ॥ १३३ ॥
कुँवर चमकियो या किम जाणे, मीठी करी मजाक ।
इणरो उत्तर देय जीमसूँ, कारज बणे कदाक जी । श्री० ॥ १३४ ॥

ढाल ८२ मी ॥ तर्ज— लूँगों री लकड़ी हो रसिया गांठ गँठीली० ॥

इसड़ा क्यों आडा बोलो, गुण्डी तो खोलो, तो चूक म्हारो कांई थोड़ो हिवड़ा में तोलो।
मतना डोडा जी बोलो, मत व्यंग सूँ बोलो ॥ टेर ॥

कपट करी ने चीजों चुराई, तो,
इण में वीरता कासूँ करो बड़ाई ॥म०॥
फ़ेर भी थे रखजो खातिर करके गुजरूँला,
तो, पीली पाटी तो म्हे तो साफ उतरूँला ॥म०॥ १ ॥
लीलावती री माता पड़िया लचकाणा,
तो, प्रेम सहित व्हांरे पुरस्या जी भाणा ॥म०॥
कुँवर कहे नहीं भोजन रो भूखो,
तो, घोखो हुवो है जिणसूँ चाली जी चूको ॥म०॥२॥
मारग वतलावो कोई जाणो थे सारा,
तो, कार्य वतलाओ करके दिखलादूँ सारा ॥म०॥

पहले अरोगो फिर मैं युक्ति दर्शावूं,
तो, अन्तर नहीं राखूं सुन्दर कार्य बनावूं ॥म०॥३॥
भोजन कर उठ्या बोली लीलावती री माता,
तो, राज्य दिरादो म्हारो पावों म्हां शाता ॥म०॥
नगर भोजपुर कच्छ रे कांठे,
तो, राजा जयमंगल जीते दंगल रे साटे ॥म०॥४॥
हुवो रवाने सुणतों मारगल्यो पूछी,
तो, जाणी वी राज्ञी यांरी जाति तो ऊँची ॥म०॥
लीलावती एक खड्ग ले आई,
तो, राख्यो जंगल में वा तो खूब छिपाई ॥म०॥५॥
लड़जो खुशी से आप विजनस जोतोला,
तो, मतना गमाइजो होकर निद्रा में भोला ॥म०॥
बार बार कांई मोसो सुणावो,
तो, नाहक म्हारी थें तो रोल उडावो ॥म०॥६॥
आगे संचरियो आयो मोटो सरवरियो,
तो, कमलों सूं पूर्ण पाणी निर्मल भरियो ॥म०॥
स्नान करण हित मांहि जो वरियो,
तो यक्ष सुरसुन्दर नामी बाहिर नीसरियो ॥म०॥७॥

※ दोहा ※

विविधाभूषण वदन पर, चन्दन चर्चित [illegible]
कुँवर-भणी काठो ग्रह्यो, हर्षित [illegible]

— कवित्त —

उत्तम तिहारो वंश हंस-[illegible]

अमरसिंह आफरणतो आयो, लश्कर लेकर लारी रे,–
एड़ो केड़ो है बाबो बावनो।
वयरसीह भाइडो भाल्यो आनंद उर में पायो रे,–
मिलियो रे मा-जायो म्हारो सावनो ॥ ६ ॥
रूप बदलियो मिलवा धायो अमरसिंह तिणवारी रे,–
ओलखतो हाथी सूँ नीचो आवियो।
दुनियों दाखे यो कांइ होग्यो आयो अचंभो भारी रे,–
छोटो तो भाईने शिर न्हावियो ॥ ७ ॥

० दोहा ०

मिलिया हिलिया हृदय हद,– खिल्या कमल युग नेण।
ढलिया प्रेमाश्रू प्रकट, रलियो आयो सेण ॥ १ ॥

– ढाल–मूलगी –

कई दिनों रो विरह उमड़ियो, गले लिपट गया भाई।
दौड़ दौड़ राजा सब आया, दोनों ओलख-ताई जी ॥ श्री० ॥ १३९ ॥
सभी कहे कहाँ गयो बावनो, आया कठा सूँ आप।
वयरसिंह हँसकर कहे मैं हो, सुनलीजो थें साफ जी ॥ श्री० ॥ १४० ॥

ढाल ६१ मी ॥ तर्ज–ए मोती समदरियों में नींपजे० ॥

अपनी अपनो सब वीतक वार्ता, जाजम बिछाई बैठा दाखो।
अचंभो सब ने आवियो ॥
दंग हो गया दलपति सुन करी, धन्य है कैसी प्रीती राखी ॥ अ० ॥ १ ॥
श्रीपुर, मनिकपुर री बालिका, विजयपुर - वारी पांचमी जाणो।
शार्ङ्गपुर, भुजपुर, काशी कन्यका, आठोंनो मिलियो साथे टाणो ॥ अ० ॥ २ ॥

मर्यादा में चालनारो शील में सुमेर है।
भ्रात हेतु सहै दुक्ख सुखों को ठोकर मार,-
करे उपकार नित करुणा को केर है॥
धर्म में धुरीण धीर निर्मल गंगा रो नीर,-
वीर नर वाँकड़ो तूँ शोधना रो वैर है।
भूल करी पूछै बिना स्नान करी मोरे सर,-
कैसे गम खावें इत इतो ना अँधेर है॥१॥

ढाल ८३ मी ॥ तर्ज—सोहन! आज़ो मन्दरिये म्हारे प्राहुणा रे० ॥

बयरीसिंह वदे जल कारणे रे, मत खीजो अमर अवतारणे रे॥
मैं तो आयो हूं थांरे बारणे रे॥भ०॥ १॥
भक्ती करो आयो हूं प्राहुणो रे,म्हांने मोद-धरी ने वधावणो रे॥टेर॥
इतरी ओछाई नहीं है कामरी रे, झूठी ममता है धन अरु धामरी रे।
म्हारे आतुरता है काम री रे॥भ०॥ २॥
वरदान इसो दिरवाइये रे, सहायक संकट में बनजाइये रे।
प्यारो अपनो थें विरुद निभाइये रे॥भ०॥३॥
जो मोटा-पन थें छोड़सो रे, अन्याय मार्ग में दौड़सो रे।
कांई मजो मिलेला शिर-तोड़सो रे॥भ०॥४॥
कहे यक्ष डरे मत मायरो रे, सारो काज सुधारू थाँयरो रे।
अब चाल्यो मलया-चल वायरो रे॥भ०॥५॥
निज भवन ले-गयो करी खातरी रे,विद्या दे दीनी केइ जात री रे।
सुधा पाय वढाई शक्ति साँतरी रे॥भ०॥६॥
कोई जीत सकै ना तो-भणी रे, आन शान रहै आखी अणी रे।
"मिश्री" ढाल तैंयासीमी वणी रे॥भ०॥७॥

व्याह रचायो गहरा रंग सूं, घणा राजवी मिलिया आई ।
कांसूं वखाणे कवि मुख वारता, ठाठ अणूतो उमंग अथाई ॥ अ० ॥३॥
श्रीपुर, शार्ङ्गपुर नो राज ही, तीजो विजयगढ़ केरो सागे ।
तीनों ही राजा राज दिरावियो , पूर्व पुण्यों सूं व्हाला लागे ॥अ०॥४॥
दोनों भायों रा राज ज जुजुआ, जुजुआ प्राण रु भाग्य पिछानो ।
किन्तु हृदय दोनों रो एक है , विद्या बल वधियो है असमानो ॥अ०॥५॥

* दोहा *

अमर प्रशंसे लघु अधिक, वयरसिंह बड़-भ्रात ।
वस्तू सब भेली करी , सब राण्यों रो साथ ॥ १ ॥
रहै एकठा भ्रात दुहुं , संभाले सब राज ।
दिन-दिन वाधे दश गुणो, सुख संतति नो साज ॥ २ ॥

ढाल ६२ मी ॥ तर्ज– करने भारत का कल्याण० ॥

करने जग में पर-उपकार , जन्मे दोनों राजकुमार ॥ टेर ॥
श्रीपुर-सेठ-सहाब की प्रीती, दोनों भायों से वर नीती ।
अमरसी माने है अनपार ॥ जन्मे० ॥
श्रीपुर आदी के महाराजा , बर्ते आज्ञा में हित साजा,
बजाया अमर पड़ह सुखकार ॥जन्मे०॥२॥
राण्यों एक-एक से आली , विद्या बुद्धी में बलशाली ,
कला में सरस्वती अवतार ॥जन्मे०॥३॥
धर्म में दृढ कुंवर करडारी, अब तो डरे पाप से सारी ,–
धारे व्रत्त नियम हरवार ॥जन्मे०॥४॥
अढलक दानशालायें चलती, करते देव गुरू की भगती ,–
निश-दिन दीन हीन की सार ॥जन्मे०॥५॥

— चन्द्रायणा —

पुण्य तणां अंकूर पेखलो प्राणियां, सहायक-पग पग होय जिके अणजाणिया।
कृपा करो कहो आप भ्रात मुझ कद मिले, विरह तणो संताप सकल दूरो टले ॥१॥

* दोहा *

मिलसी इक मासान्तरे, फलसी मन री आस।
काशी देश बनारसी, खरी ठौर है खास ॥ १ ॥
अब विपदा आसी नहीं, अगर भूल आजाय !
याद कियों आसूं सही, संशय इसमें नांय ॥ २ ॥

ढाल ८४ मी ॥ तर्ज— शाहजादी रा बाग में दोय नारंग पाकी रे लो० ॥

कर प्रणाम प्रमुदित पणे, गग-नांगण चाल्यो रे लो, अहो गगनांगण० ।
नगर भोजपुर दूर थीं, सो नयन निहाल्यो रे लो, अहो निज नयन० ॥ १ ॥
पुर उपकण्ठे ऊतर्यो, एक अश्व बनायो रे लो, अहो एक अश्व० ।
मध्य बजारों होय ने, नृप भवने आयो रे लो, अहो नृप० ॥ २ ॥
देख शिकल सरदार री, नृप आदर दीनो रे लो, अहो नृप आदर० ।
केम पधार्या, किहाँ थकी, कहे कुँवर प्रवीनो रे लो, अहो कहे० ॥ ३ ॥
आप पास में आवियो, कुछ केवण सारू रे, अहो कुछ केवण० ।
जब अवकाश मिले जनो, या भाखू अवारू रे, अहो या भाखूँ० ॥ ४ ॥
अब ही मुझे कह दीजिये, मैं सुननो च्हावूँ रे, अहो मैं सुननो० ।
पतो पड़े क्या बात है, पीछो ज्वाब दिरावूँ रे, अहो पीछो० ॥ ५ ॥

— छप्पय - छन्द —

सुनो बात नरनाथ ! माल निज हक को लीजे।
निवलों पर कर घात भूल कर ना छीनी जे॥

धूजे नाम लियों आतंकी, कबहू नेड़ा नहीं कलंकी,–
वर्ते नीती - मय व्यवहार ॥ जन्मे० ॥ ६ ॥
पग-पग आनन्द मंगल-माला, जिनवर आज्ञा पालन वाला,–
'मिश्री' बराणूमी ढाल ॥ जन्मे० ॥ ७ ॥

※ दोहा ※

वासर वीते सुखमयी, इक दिन सभा मजार ।
विनजारो कर भेंट भल, बैठो करी जुहार ॥ १ ॥

ढाल ९३ मी ॥ तर्ज– नवकारज मंत्र बड़ा है० ॥

भाग्योदय नर का सार है, तब साज बने मन च्हाया ॥ टेर ॥
वसुनाथ कहे बिनजारा, किन - किन देशों में थांरा ।
चलता यह व्योपार है, अब किधर घूम के आया ॥ भा० ॥ १ ॥
वो केई मुलक बताया, नाम शोरीपुर का आया ।
जब कहे अमर जनपार है, कहो कैसे वहाँ का राया ॥ भा० ॥ २ ॥
नायक कहे स्वामी वहाँ का, था सूरसेन अति बाँका ।
उसका सब राज भंडार है, वो वैराट नराधिप पाया ॥ भा० ॥ ३ ॥
सूरसेन गया मुँह टारी, नहीं उसकी खबर लिराारी ।
पटराणी तस बदकार है, राजा मान गिराया ॥ भा० ॥ ४ ॥
थे नृप के सुत बल-धारी, राणी ने बात विगारी ।
गये दोनों विदेश मँजार है, बस, हाथों हीरा गमाया ॥ भा० ॥ ५ ॥
झुरते हैं पुरजन सारे, सब सुखो भये दुखियारे ।
नहीं कोई पूछनहार हैं, भये अस्त व्यस्त महाराया ॥ भा० ॥ ६ ॥
विन धणी सार कुण पूछै, रक्षक भी पूरे लूचे ।
यह तेराणूँमी ढाल है, पूछ्यांतर हाल सुनाया ॥ भा० ॥ ७ ॥

निज भुज को वल जोर वरावर से तोली जे।
दुष्ट अन्यायी होय दण्ड उनको ही दीजे॥
क्षात्र रीत परसिद्ध है, नीति वाक्य सुनलीजिये।
जो उसके होवे विरुध, शीघ्र आप तजदीजिये॥१॥

— ढाल - मूलगी —

भूप कहे समज्यो नहीं सरे, आप बात को सार।
साफ कहो जाणू तिका स कांइ, उत्तर दूं इणवार जी ॥श्री०॥१३५॥
साफ आप या सांभलो सरे, राज आपरो नीय।
मालिक वन में रड़वड़े सरे, खावण साधन नांय जी॥ श्री० ॥१३६॥

ढाल ८५ मी ॥ तर्ज— जावो जावो हो मेरे साधू० ॥

बोलो बोलो हो वचन विचारी, राज्य-सभा के मांय ॥ टेर॥
किसका राज्य कौन है मालिक, पता आपको नांय।
जिसकी भुजा में ताकत उसका, राज्य रहा जग-मांय ॥ बोलो० ॥ १ ॥
उलट पुलट चलती है दुनियाँ, कौन न्याय अन्याय।
सुख दुख कर्मों का ही फल है, कौन छुडावे आय ॥ बोलो० ॥ २ ॥
लगे कौन से चाले महाशय!, कौन भिड़ाई बात।
लाठी जिसकी भैंस कहे जग, ओखीणो अखियात॥ बोलो० ॥ ३ ॥
यही वात है श्री हजूर! जब, न्यायालय दफनाओ।
अपराधी को कुछ नहिं कहना, क्यों राजा कहलाओ॥ वोलो० ॥ ४ ॥
यों सुन कर हो कुपित भूपती, वोला वचन कठोर।
ज्यादह वोलन का हक नांही, चलो हटो तज ठौर॥ बोलो० ॥ ५ ॥
यह व्यवहार ठीक नहिं राजन्!, नहीं अदव का ज्ञान।
मैं न हटूं, हटजा गादी से, नर नहीं पशू-समान॥ वोलो० ॥ ६ ॥

– ढाल - मूलगी –

विणजारा से सुणी वार्ता , आदर मान दिरायो।
दोनों भाई महलों मांही, मनशोभो करवायो जी ॥श्री०॥१४१॥
पूतों छतों राज्य ले वैरी , बड़ी शर्म की बात।
जल्दी चलो मातृ-भूमो का , दर्शन करलो भ्रात जी ॥श्री०॥१४२॥

ढाल ६४ मी ॥ तर्ज- शोभवियों भक्ते चोखे चित्ते, नित जपिये नवकार० ॥

षटदेशों को लश्कर लाठों, लेकर चढिया वीर।
विध-विध रा राजा, शूर स-काजा , चमके कर समशीर।
केशरिया - बाना रहे न छाना, जोशीला सरदार ॥ १ ॥
भवि सुनजो भावे; आनन्द आवे; आगलड़ो अधिकार ॥ टेर ॥
फोजों री मांजो फबे करारी , राजा केई ढहजावे।
लेइ भेटणा आवे सन्मुख , सादर शीश झुकावे।
देवे तस आदर, लेवे साथे, खुश होवे जनपार ॥ भवि० ॥ २ ॥
यों जावे बढ़ता दल संचरता , विकट पहाड़ों बीच।
सरिता रे कांठे ठहरण माटे, जल निर्मल नहिं कीच।
डेरा दे दीना उत रंग-भीना, सरस अरोगे अहार ॥ भवि० ॥ ३ ॥
दोनों भाईड़ा पट कसियोड़ा, जावे परली तीर।
दास्यों री टोली ऊमर भोली , भरे कुंभ में नीर।
वृद्धा एक दासी हुई उदासी, निरखो दोय कुमार ॥ भवि० ॥ ४ ॥
शिर-पर नीर , नीर नयनों में , देखी नृप दलगीर।
पूछे किण करन ढलकत वारन , भींज रह्यो है चीर।
शंका मत राखो सारो भाखो, बात तणो व्यवहार ॥ भवि० ॥ ५ ॥
नहीं नगर गाम ढाणी इक दीसे, कित ले जावो पाणी।

भिड़क उठे सरदार सभा के, लो तलवारों सूंत।
मूंछ मरोड़ी कहे कुंवर जी, अब रहना मजबूत ॥ बोलो० ॥ ७ ॥
बातों का नहिं काम रहा है, आयुध का अब काम।
मर्जी हो सो आप करावो, डरता नहीं छदाम ॥ बोलो० ॥ ८ ॥
लड़लो भिड़लो कुछ भी करलो, राज्य करणदूं नांय।
"मिश्री मुनि" कहे पर-दुख हर्ता, ढाल पिच्यासी मांय ॥ बोलो० ॥ ९ ॥

– दोहा –

जय हर हर महादेव की, गूंज उठी आवाज।
घेरलियो कुंवर गिरद, मिलियो मरद समाज ॥१॥
उन मर्दों रो माजनो, दीनो डबल उडाय।
चोटी पकड़ी भूप की, लीनो अधर उठाय ॥२॥

ढाल ८६ मी ॥ तर्ज– लावणी० ॥

ह लाठी जिसकी भैंस देख सेलानी, देख०, नहिं मानो मेरी बात अरे अभिमानी ॥टेर॥
थररर धूजे गात लोग सारों रा२, पड़े रहे सब शस्त्र वांस भारों रा।
कुंवर घुमाई भूप गगन में फेंक्यो२, पीछो पड़तों तेह पशूवत केंक्यो ॥
मरजासूं महाभाग, बचा सुलतानी ॥यह०॥१॥
झेललियो महा जोध खड़ो करडारयो२, कहोमर्जी अब बोल कि वचन उचार्यो।
जयमंगल कर जोड़ कहे फुरमावो२, ज्यों मर्जी त्यों करो नहीं मुझ दावो।
वुला प्रथम नृप-पूत दीवी रजधानी ॥यह०॥२॥
जयमंगल तुम जाय राज निज केरो२, सुखे संभालो तेह नेह नहिं गेरो।
कीनो मोटो काम लालच नहिं लायो२, चारों कानी देख सुजस ही छायो ॥
धन्य कुंवर ने करली अमर कहानी ॥यह०॥३॥
लीलावति की मात आशीषों दीनी२, लीनो पति को वैर वीरता चीनी।

इणी देश को वेष नहीं है, नहीं राणी सेठाणी।
दास्यों हो किणरी मालिक जिणरी, तेन दशा अवार ।। भवि० ।। ६ ।।
जीर्णी सुण पूछै आप कौन हो ? किण गढ़ रा सिरदार।
उणियारा सेंदा लगे आपरा, ओजल - पड़ी अपार।
जिणसूं दुख आयो, हियो भरायो, चौराणूं मी ढार ।। भवि० ।। ७ ।।

० दोहा ०

जिसो रूप है राज रो, विसड़ा राजकुमार।
हाय गया छिटकाय के, वीता वर्ष-ज बार ।। १ ।।

— कवित्त —

ज्यांको भुज जोर तोल-सक्या ना अवनी भूप,–
रूप तो हरीन्द सागे लागे मन-मोहना।
मात के दीपानहार भूमी - भार झेलनारे,–
शत्रु-मद भंजवे को छिन-भर छोह ना।
बाल घुंघराले आले हंस - चाल चाल नारे,–
दुक्खी दुख टारनारे किया है विछोहना।
म्हांके मिले बिनों म्हाको दरद सुणेला कौन,–
इसीलिये सूनो राज आया मुझे रोवना ।। १ ।।

ढाल ९५ मी ।। तर्ज– पंथीड़ा ! बात कहो धुर छेहथी रे०

माता रे माता थी वडभागनी रे, शिक्षा, शील सु-भौन रे।
जिणरा रे जिणरा जाया जाणजो रे, गंज सकै जग कौन रे ।।१।।
भाखो हो जो कित देख्या भूपती रे, सूरत अनोखी जास रे।
अमर रे अमर वयरसी नाम है रे, कल्प वृक्ष-सा खास रे ।। टेर ।।

लीला को बड़ भ्रात शार्ङ्ग-गढ़ आयो२, मिलगयो मेरो राजकुंवर दिलवायो॥
कौन कुंवर है तेह कैसा लासानी ॥यह०॥४॥
सप्त कोट महा विकट तोड़ वो डारा२, जयमंगल का मान मूल से मारा।
यक्षराज हो प्रसन्न सुधा सन पाया२, मेरे झौंपड़े आय भोजन करवाया॥
चीजों लीवी चुराय बाई अगवानी ॥यह०॥५॥

० दोहा ०

सावधान हो जाइये, अथवा मेल कराय।
विजनस बदलो लेवसी, अब चूकेला नांय ॥१॥
इतने में ही आवियो, हाको हद्द विनाय।
बाई को सिहनि-बना, नर इक ताहि लिजाय ॥२॥

ढाल ८७ मी ॥ तर्ज- क्या रामचन्द्र से मेरा भी बल कम है० ॥

यह शार्ङ्ग गढ़ की शान देखलो प्यारे, लेजाता हूं पकड़ आन नहीं वारे ॥टेर॥
चारों चीजें कब्ज प्रथम करडारी, फिर बना सिहनी चला लेय के लारी।
राजादिक उत आय अर्ज की भारी, सब माफ करो महाराज आप बलधारी॥
तुम विद्या में भरपूर नहीं हो सारे ॥वह०॥१॥
वदे वयरसी ताम काम क्या कीना, दे मुझको विश्वास माल ले लीना।
यह फल उसका आज अरोगो भाई, क्या समजे मन मांय, नानी घर नांही॥
विजयसिरी आ पास के अर्ज गुजारे ॥यह०॥२॥
मैं समझाई, किन्तु वात नहि मानी, अपने बल में तनी, करी नादानी।
'पर' आप क्षमा के पुंज,भूल सब जावो,है सविनय यह ही विनय,हमें अपनावो॥
करो मूल गे रूप भूपती भारे ॥यह०॥३॥
विजय, शार्ङ्ग, जयमंगल तीनों राया, करो कन्या से व्याह विनय सुनवाया।
भ्रात मिले बिन मैं नहि व्याह करूंगा, बड़ भ्राता की आज्ञा शीश धरूंगा॥

किण पुर रे किण पुर कुण राजा तणां रे,लाल महा-सुखमाल रे।
पूरो रे पूरो परिचय दीजिये रे, मालुम होवे हाल रे ॥ भा० ॥ २ ॥
शोरी रे शोरी पुरना ऊपना रे, सूरसिंह नृप - नन्द रे।
छाना रे छाना वे रहवे नहीं रे, जिमि सूरज वा चन्द रे ॥ भा० ॥ ३ ॥
सूरज रे सूरसिंह नी दासियों रे, इत जल भरवा आय रे।
मानो रे मानो या मैं किणतरे रे, हृदये नहीं समाय रे ॥ भा० ॥ ४ ॥
जोंलो रे जोंलो परिचय आपरो रे, पूरो पामू नांय रे।
तोलों रे तोलों आगे किम कहूं रे, आलोचो महाराय रे ॥ भा० ॥ ५ ॥
म्हारे रे परिचय री नहीं चाहना रे, मिल्यो बात रो मर्म रे।
विखमो रे विखमी ठौर विखा-विखे रे, भामण नहीं दे भर्म रे ॥भा०॥६॥
परिचय रे परिचय म्हारो एतलो रे, शोरोपुर रो राज रे।
वैरो रे वैरो थकी छुड़ायने रे, देसों थांरे काज रे ॥ भा० ॥ ७ ॥
मिलवा रे मिलवारो मन में हुवे रे, उरहा आजो तेथ रे।
ठहरण रे ठहरण री फुरसत नहीं रे, सत्य बात हम केत रे ॥भा०॥८॥
दीनो रे सवा क्रोड़नो सोहनो रे, वर रत्नों नो हार रे।
नेऊ रे नेऊ पाँचमी यह सही रे, 'मिश्री' भाखी ढार रे ॥ भा० ॥ ९ ॥

※ दोहा ※

देय दमामा चढ़ गया, दासो जा नृप पास।
वीतक सर्व सुणावियो, बँधी जरासी जास ॥ १ ॥
कुणहा, ओलखिया नहीं, सा कहे राजकुमार।
घवरावो मत गढपती !, अब शुभ दिन सरकार ॥ २ ॥

ढाल ९६ मीं ॥ तर्ज- सखियां ! पनिया भरन कैसे जाना० ॥

था ठाट सराहें जैसा, नहीं आया देखण में ऐसा ॥ टेर ॥
संग में केई महिपाला, हय, गय, रथ, पायक आला जी।

बैठा सभा में सबै कि सत्ता निहारे ॥ महु० ॥ ४ ॥
दूत एक तिनवेर सभा में आयो, दे पत्र भूप के हाथ कि शीश झुकायो ।
काशी-नृप की कन्या-हित उपकारो, रचा स्वयंवर खास निमंत्रण म्हारो ॥
आयो देवण काज हजूर पधारे ॥ महु० ॥ ५ ॥

— ढाल–मूलगी —

तीनों नृप कहे कुँवर-साब , क्या से मरजी फरमावो ।
सभी चलें या दें नाकारो, पहले सोच लिरावो जी ॥श्री०॥१३७॥
मैं न चलूँ संग , आप पधारो, मेरे जरूरी काम ।
सह परिकर तीनों नृप जावे, दूत संघाते ताम जी ॥श्री०॥१३८॥

ढाल ८८ मी ॥ तर्ज–करुणालय श्री कुंथु जिनेश्वर, करे भक्त कल्याण० ॥

कई कमनीय कौतुक दिखलावे, जो नर हो पुनवान ।
श्रोताजन सुनिये धर कर ध्यान ॥टेर॥
बनकर योगी कुँवर सिधाया, गगन गती से काशी आया ।
राज-कन्या ढिग पत्र गिराया,उसमें यह वृत्तांत लिखाया ॥
करे समस्या पूरण उसको पति लेना तुम मान ॥ श्रो० ॥ १ ॥
ईश्वर रंग धरे तन केते, कौन स्थान पे बुद्धी रहते ।
विशुद्धात्मा क्या खाते हैं, चार छोर के कहाँ जाते हैं ॥
इसका उत्तर देने वाला स्याद्वाद का जान ॥ श्रो० ॥ २ ॥
कन्या पत्र पढी म्ही राजी, चारों समस्या है अति ताजी ।
तात मात से वा दर्शाई, करे पूरती जो गननाई ॥
मैं वरमाला फिर पहनासूँ, ये ही शुभ वरदान ॥ श्रो० ॥ ३ ॥
राज्यकुँवर राजा जे आया, यथायोग्य आदर वे पाया ।
रंग मंडप में आसन ठाया, मुहुरत पै शृंगार सजाया ॥

(

दिखते थे इन्द्र के तैसा ॥ था० ॥ १ ॥
वांकड़ली फौजों-वाला, दुश्मन दहलाने-वाला जी ।
बलवान भले हो कैसा ॥ था० ॥ २ ॥
दल चला सिन्धु-सा गाजे, वाजित्र वीर-रस वाजे जी ।
वैराट नगर नरेशा ॥ था० ॥ ३ ॥
यह कौन भूप चढ़ आया, नहीं प्रथम संदेश पठाया जी ।
क्या चाहत करन कलेशा ॥ था० ॥ ४ ॥
कोट, किला समराया, दलपति पै हुकम लगाया जी ।
रहो त्यार युद्ध अंदेशा ॥ था० ॥ ५ ॥
इत अमरसिंह महिराना, फौजों का कैम्प लगाना जी ।
भेजा दूत साथ सन्देशा ॥ था० ॥ ६ ॥
वैराट-नाथ पै आया, श्री अमर कथन सुनवाया जी ।
छिन्नूमी ढाल सुरेशा ॥ था० ॥ ७ ॥

॰ दोहा ॰

रे नृप चाहत जीव जस, रजवट अरु रजथान ।
आन दिखा पौरष अठै, जहाँ जुड़े मैदान ॥ १ ॥
अगर किया आलस जरा, गढ़ करसू ढमढेर ।
वैर वसायो सबल से, फैर चहत क्या खेर ॥ २ ॥

ढाल ६७ मी ॥ तर्ज– चित्तौड़ा राजा रे० ॥

नृप सुन परजलियो रे, बोले हलफलियो रे ।
कुंण आयो अलियो मरवा कारणे रे ॥ १ ॥
नहीं भिलियो रे, मर्दानो न मिलियो रे ।
लियो निकल्यो वारणे रे ॥ २ ॥

राज-सुता दासी के झुण्ड से, आई रती समान ॥ श्रो० ॥ ४ ॥
रूप चूप तन की पुनवानी, कन्या की लख सभो वखानी।
रंग-मण्डप के बीच सयानी, खड़ी दिखे मानो इन्द्रानी ॥
राज-कन्या के बड-भ्राता ने, कथन किया उत आन ॥ श्रो० ॥ ५ ॥
वचन यही सरदारो ! सुनलो,सत्य बात है उर में ठनलो।
बाई समस्या चार विचारो, करो पूरती शीघ्र उचारो ॥
'मिश्री' इठचासीमी ढाल वरेंगे, जो हो बुद्धि निधान ॥श्रो०॥ ६ ॥

* दोहा *

वाक्य श्रवण वसुधाधिपति, करके कीनो गौर।
जमो नहीं झांका पड़या, मचग्यो है झकझोर ॥ १ ॥
वयरिसीह बन बावनो, वीणा करके माँय।
मँडप - द्वार पै आवियो, गाणो मधुर सुणाय ॥ २ ॥

ढाल ८९ मी ॥ तर्ज—हो सरदार थांरो पँचरँग लहर्यो भींजे म्हांका० ।

बोल्यो बन्धव बहन रो रे, मौन धरी क्यों राय,–
हो सरदारों ! इणमें गौरब थाँरो घटसो म्हांका राज ॥
माला ले बाई खड़ी रे, समय निकलतो जाय,–
हो सरदारों ! यों तो कन्या नांही मिलसी म्हांका राज ॥ १ ॥
वड़ा-वड़ा उमराव हो रे, तुम भुज भूमी भार,–
हो सरदारों सारी मतना बात गमावो म्हांका राज ॥
थांरी कानी देखी रह्या रे, करो क्यों न विचार,–
हो सरदारो ! न्यात रा मुखिया थे कहलावो म्हांका राज ॥ २ ॥
वुद्धि-वल विन ना वणे रे, हिम्मत पड़ न कोय,–
हो सरदारो ! नाँही वोझ उठाणो इण में म्हांका राज ॥

बोले दूत सनूरो रे, ऊकलता ना ऊरो रे।
नहीं दूरो करो आ जुहारड़ा रे ॥ ३ ॥
मालुम पड़जासी रे, फिर राज्य दबासी रे।
नहीं आसी आडो आनड़ा रे ॥ ४ ॥
जलदी सूँ जकड़ो रे, इण दूत ने पकड़ो रे।
कर कालो मूँडो काढदो रे ॥ ५ ॥
चंचलता-वारो रे, दूत कीनो किनारो रे।
फौजी अफसर फौजों चाढ़ दो रे ॥ ६ ॥
दूत दीनी सिलामी रे, वाँको वछ नो स्वामी रे।
वो तो युद्धनो कामी आवसी रे ॥ ७ ॥
वयरीसिंह बोले रे, आवणदे ओले रे।
ज्यों तोले जेम तुलावसी रे ॥ ८ ॥
फौजों चढ़ चंगी रे, आई नवरंगी रे।
सत्ताणूंमी संगी ढाल सुहावसी रे ॥ ९ ॥

— ढाल-मूलगी —

झण्डा रुपिया जंगरा सरे, डेरा दीना डाल।
बूच्छीं, भाला, तीर, तमंचा, खड्गों साथे ढाल जी ॥ श्री० ॥ १४३ ॥
आँटीला अलवेला अड़िया, भरिया क्रोध कराल।
भिड़िया पिण डरिया नहीं सरे, जड़िया शस्त्र जमाल जी ॥ श्री० ॥ १४४ ॥

ढाल ९८ मी ॥ तर्ज— आसावरी० ॥

मान मतकर रे मूढ अनारी, सब इसने बात बिगारी ॥ टेर ॥
दोनों फौजों घर मन मोजों, खोज गमावण खारी।
लड़े लड़ाई पौरष-लाई, कुभियन रखत लिगारी ॥ मान० ॥ १ ॥

जो जिन मत रा जाण व्है रे, उत्तर देवे सोय ,–
हो सरदारो वे तो सोच लेवे इक छिन में म्हांका राज ॥ ३ ॥
बावन बाबो आवियो रे, बोल्यो है ललकार ,–
हो सरदारो ! यों कांई ढीला ढाला ढीजो म्हांका राज ॥
मैं करदूं अब पूरती रे, मत कीजो तकरार –
हो सरदारो ! थें तो रीस रसायण पीजो म्हांका राज ॥ ४ ॥
दो धोला, दो लाल है रे, दो हरिया, दो श्याम ,–
हो सरदारो ! सोला सोवन वर्ण विराजे म्हांका राज ॥
पाँचों रंग जिनराज रा रे, भजियों व्है सुख धाम ,–
हो सरदारो ! पहली यही समस्या छाजे म्हांका राज ॥ ५ ॥
बुद्धि स्थान दिमाग है रे, गम खावे मुनिराज ,–
हो चारों गति छोड़्या मुगती-गढ को पावे म्हांका राज ॥
चारों उत्तर लीजिये रे, फर्क होय जो आज ,–
हो सुनवादो म्हांने उत्तर आछो आवे म्हांका राज ॥ ६ ॥
कन्या सुण राजी हुई रे, दीसे परतिख रूप ,–
हो माला पहनादी बड़े मोदसूं वांही म्हांका राज ॥
इसो ढंग देखी तदा रे, रीस भराणा भूप ,–
हो कुण आयो इणने माला क्यों पहनाई म्हांका राज ॥ ७ ॥

– चन्द्रायणा –

हुई अपार कन्या बे-भान है, परणीजे यो मूढ रहै किम मान है ॥
ऊठो जल्दी जोध, माला को छीनलो, बाबा रा शिर-केश जूतों सूं बोनलो ॥१॥

– कवित्त –

इन्द्र के अखाड़े आय प्रेत जो फितूर करे ,–

क्रोधारुण गोधा ज्यों चवड़े, आहुड़िया अधिकारी ।
लाशों पै लाशों कर डारी, खलक्यो खून अपारी ॥ मान० ॥ २ ॥
वयरसोह तो वीच में आयो, नाहक हिंसा ज्हारो,
अव मेटूं मैं सारो झमेलो, देखो कैसो बलधारी ॥ मान० ॥ ३ ॥
ले धनु-बान सुलतान वकार्यो, वच्छ नृप ने तिणवारी ।
क्यों नाहक में मनुष्य मरावो, द्वन्द युद्ध मनसारी ॥ मान० ॥ ४ ॥
तुम हम वल की होय परीक्षा, निरख लेवे सरदारी ।
आजाओ अव देर करोना, हूंस निकालो सारी ॥ मान० ॥ ५ ॥
अखे आखतो वच्छ-नराधिप, मुझको मूढ़ वकारी ।
क्यों मरवा ने त्यार हुवो है, जान वूझ मतिहारी ॥ मान० ॥ ६ ॥
रे मतिहीन ! बोल नहीं जाणे, लच्छन क्षत्री विसारी ।
तुच्छ शब्द निकसे मुख तोरे, जैसे फूहड़ नारी ॥ मान० ॥ ७ ॥
नीच ! निलज्ज ! राज ले पर को, छकियो राज्य-सता री ।
एक मिनट में सर्व भुला दूं, तो जीणियो महतारी ॥मान०॥ ८ ॥
ढाल अठाणूं में दोनों अड़िया, निज निज वल विस्तारी ।
'मिश्री मुनि' कहे विजय उन्हीं की, पुण्य-प्रबलता ज्यांरी ॥ ९ ॥

* दोहा *

घमासान युद्ध मचगयो, शस्त्र वहै जल-धार ।
निज, पर की मालुम नहीं, उडे झोंक अनपार ॥ १ ॥
देखे जे दाखे इसो, किसा वीर बलवान ।
जिन जननी ने धन्य है, पय पायो विरियान ॥ २ ॥

ढाल ९९ मी ॥ तर्ज– तेरी फूल-सी देह पलक में पलटे० ॥

प्रबल लड़े है प्राक्रम पूरो, वयरसोह बड़भागी ।

वीरों के अगाड़ी हींज खेंचे तरवार जो।
शाहों के समाज बीच कंगला किलोल करे,–
परियों के पास नाचे जैसे फूड़ नार जो॥
कमनीय पुष्प-क्यारी-मध्य जो बंबूल ऊगे,–
पण्डितों से वाद करे आन के गिंवार जो।
ऐसे नरराज जहाँ बावनो प्रणीत करे,–
सहन कैसे होवे जरा सोचो सरदार जो॥ १॥

— दोहा —

टारो मत मारो जरद, धारो सारो साज।
वारो कहा न्यारो करो, आरो कारो काज॥ १॥
भिड़क ऊठिया भूत ज्यों, बावन से कहे वेन।
माला तज भागो सतत, चवो मरण रा चैन॥ २॥

ढाल ६० मी॥ तर्ज तेजा जी री०॥

आवो आवो सूर सुलतानों!, भल आया रे, स्वागत करे रे थाँरो बावनो।
ताजी ताजी तरवारों चमकावो म्हांरा भाया रे, मोखो तो आयो रे मनभावनो॥१॥
सोरी देदूं वरमाला थे इसड़ी मतना जाणो रे,मतिड़ा माथे रे साटे खावणा।
सधवा रा जायोड़ा व्हो तो सामी छाती आजो रे,नांतर तो चूंनड़ ने लेंगो धारना॥२॥
बोलड़ा बावनिया केरा आक सरीसा लागा रे, रीस तो छूटी है अति आकरी।
वर्षे वर्षे बाण त्रिशूल भाला भारी रे, झोंक बाजी रे सूरिया वाक री॥३॥
बावनियो घोटो ले नाचे वीणा वजावे न्यारी रे,फोजों तो ढले रे जूनी भीत ज्यों।
[जा]वे सोही लांबो होवे पाछो तो नहिं जावे रे,मिलणी तो करे रे व्हाला मित ज्यों॥४॥
आयो हाको बावो बांको, ओ नहीं किणरे सारे रे,–
स्यान तो विगाड़ी सारा साथ री।
वड़ वड़ राजा वद-वद चढ़िया, पड़िया धूल ही चाटे रे,–
वात तो रही है नहीं

नगर वैराट तणो वो राजा, चित में चिन्ता जागी ॥१॥
अब क्या करणो - श्रो जीत्यो नहीं जावे ॥ टेर ॥
शक्ति - बाण फेंकियो फटके, वयरसिंह शंकायो।
बाण बण्यो विकराल गगन में, ज्वालो ज्वाल मचायो ॥ अब० ॥ २ ॥
शार्ङ्गढ री राज - दुलारी, अमरसिंह ने आखी।
शीघ्र करो उपचार अन्यथा, नहीं राखेला बाकी ॥ अब० ॥ ३ ॥
नर, सुर अरु सरदार शंकिया, काम बण्यो है अबको।
ए मरणांसूं जुल्म हुवेला, दुनियों देसी ठबको ॥ अब० ॥ ४ ॥
अमरसिंह कहे जो तुम जाणो, वही उपाय बताओ।
सो करले सूं सुण हे लाडी !, म्हारो वीर बचाओ ॥ अब० ॥ ५ ॥
शक्ति ज्यों ज्यों नेड़ी आवे, मचरह्यो हाहाकारो।
वअरसीह तब यक्ष सुमरियो, सो आयो ततकारो ॥ अब० ॥ ६ ॥
वज्र मार शक्ति ने तोड़ी, भूतण भंजवारो।
कर न्हाक्यो राख्यो वन स्हायक, परचो है पुन्ना रो ॥ अब० ॥ ७ ॥
कुंवर कोपियो अब कित जासी, इष्ट याद कर थारो।
तीन लोक में नहीं कोइ मिलसी, रक्षण होय तिहारो ॥ अ० ॥ ८ ॥
मुदगर मार कियो भखभूरो, जीत दुंदुभी बाजी।
निन्नाणूं मी ढाल मांयने, कुंवर बात की ताजी ॥ अ० ॥ ९ ॥

– दोहा –

॥ कच्छ देश वैराट ले, दीपायो निज वंश।
धन्य धन्य जनता कहे, करे घणी परशंस ॥१॥
तन साजो औषध करी, शोरीपुर आवंत।
सूरसेण महाराय को, लाया वठै तुरन्त ॥२॥

ढाल १०० मी ॥ तर्ज- अे मोती समदरिया में नीपजे० ॥

सारो परिवार ज भेलो करलियो, दियो तात भरणी तब राजो ॥
मोत्यां सूं मूंघो लाडलो, वंश - उजागर लागे आछो ॥ टेर ॥
वैर लियो है अपरणा बाप रो, हाथों सुधारयो सारो काजो ॥मो०॥१॥
पण्डित, मंत्री दोनों मानिया, भूल्या नहीं म्हांरो वे उपकारो ॥मो०॥
भेद खुलतों ही दासी भूप ने, दीधी वधाई राजकुमारो ॥मो०॥२॥
सुणतों ही राजा दोनों नंद ने, कण्ठ लगाया पोख्यो प्यारो ॥मो०॥
पूरा पुनवन्ता घर में जनमिया, मैं तो अपराधी पुत्रो ! थांरो ॥मो० ।३॥
राणी जाणी ने वाणी ऊचरी, पुत्रो ! थें म्हारो माथो तोड़ो ॥मो०॥
कुंवर दाखे हो भोला मातजो !,ओ तो कर्मों रो चालो जोड़ो ॥मो०॥४॥
म्हारे नहीं द्वेष किणी रे ऊपरे,म्हारो तो कर्त्तव्य आन बजायो ॥मो०॥
कांई किरियावर इण में मोटको,राजा तो मन में घणो लजायो ।मो ॥५॥
सभा भराणी घणा ठाठ सूं, कीधा सो कार्य सकल सुणाया ॥मो०॥
इचरज आया, पाया सुख घणा, भेंट घर-घर रंग वधाया ॥मो०॥६॥
सारा पुर-जन ने कुंवर जीमाविया, सारों ने सीख समर्पी सागे ॥मो०॥
शोरीपुर राज - तिलक रे कारणे, तात पुत्रों से वाचा माँगे ॥मो०॥७॥
कुंवर कहे नहीं म्हारे चाहना, राज्य आठों हो आगे म्हारे ॥मो०॥
मर्जी व्हे जिणने आप दिरायदो, सेवा में हाजिर रहसों थांरे ॥मो०॥८॥
राजधानी तो पुर वैराट में, दोनों ही बन्धव रहवे साथे ॥मो०॥
धर्म - दृढ़ायो, न्याय दिखावियो, दान अदलख देवे हाथे ॥मो०॥९॥

० दोहा ०

पुत्र हुवा पुन्यातमा, चार चार घर नंद ।
विगत काल जाणे नहीं, चहुं पावे आनन्द ॥१॥

'मिश्री' कहे तस धन्य घड़ी ॥ श्रावक० ॥ ५ ॥

— दोहा —

मुखड़ा पै मुसकान है, दुखड़ा पै ना ध्यान ।
दृढ़ता तास निहार के, मिल दे सारा मान ॥ १ ॥

ढाल ५ मी ॥ तर्ज– वन्हा उमराव० ॥

पिया म्हारा, अर्ज करूँ कर-जोड़, जिण पै ध्यान दिरावो हो, म्होरा भरतार ।
पिया म्हारा, साधन नहि कोई ओर, कीकर गुजर चलावों हो, म्हो० ॥ १ ॥
पिया म्हारा, बिक गयो साज समान, गेहणा गांठा सारा हो ॥ म्हो० ॥
पिया म्हारा, आप पूरा परेशान, भूखों मर हुवा कारा हो, ॥ म्हो० ॥ २ ॥
पिया म्हारा, लूगो पड़ियो शरीर, धीरज किण-विध धारू हो, म्हो० ॥
पिया म्हारा, अतिथि देखि दिलगीर; व्हांने किम जिमाडू हो, म्हो० ॥ ३ ॥
पिया म्हारा, आप पधारो म्हारे पीर, मैं छूँ सबने व्हाली हो, म्हो० ॥
पिया म्हारा, देसी धन, कन, चीर, मेलेला नहीं खाली हो, म्हो० ॥ ४ ॥
पिया म्हारा, इतरो कांई आलोच, व्हांने आप पिण साज्या हो, म्हो० ॥
पिया म्हारा, बनो उद्योगी, तज सोच, सहाय लेवे वड़ राज्या हो, म्हो० ॥ ५ ॥
गोरी म्हारी, ओछी बुधो करी आज, वेण इसा वयों आले है, म्होरो घर नार ॥
गोरी म्हारी, घर री खोवे लाज, लागी किणरे चाले है ॥ म्हो० ॥ ६ ॥
गोरी म्हारी, वणी वणी रा सब लोग, विगड़चो आंख चुरावे है, म्हो० ॥
गोरी म्हारी, देवे ना एक छदाम, ताना और सुनावे है, म्हो० ॥ ७ ॥
गोरी म्हारी, दुख में धोरज धार, ए दिन पिण वह जासी है, म्हो० ॥
गोरी म्हारी, स्वारथियो संसार, मेणियों पछै तुणासो है, म्हो० ॥ ८ ॥
गोरी म्हारी, मतना मुझे डिगाव, लाभ नाही सुणलीजे है, म्हो० ॥
गोरी म्हारी, कर्मो रो है स्वभाव, ध्यान उणी पै दीजे है, म्हो० ॥ ९ ॥

एक दिवश उद्यान में, पहुधारे मुनिराज।
खबर सुणत सह-साथसूं, जावे वन्दन काज ॥२॥

ढाल १०१ मी ॥ तर्ज- आज आनंद घन योगीश्वर आया० ।

सुद्गुरु वन्दी अधिक आनन्दी, सुणी देशना भारी रे लो ॥
रोम-रोम में रुचगी सारो, उमंग लगी तिरवारी रे लो ॥ १ ॥
शुभोदय सूं संगति मिलती, झिलती दशा जयकारी रे लो ॥ टेर ॥
पद प्रणमो पूछै है स्वामी, सुख दुख किण विध लाधा रे लो ॥
उन्नति होगी, विपदा खोगी, आइ घणे री बाधा रे लो ॥शु०॥२॥
मुनिवर भाखे सुणो नराधिप, पूरब भव के मांही रे लो ॥
चार प्रकारे धर्म अराध्यो, उत्कृष्ट भावों ने लाई रे लो ॥शु०॥३॥
पिण मिथ्यात्वी मित्र-योग थो, बिच बिच शंका आणी रे लो ॥
विगर आलोयों बन्ध पड़्यो थो, सो होगइ भुगतानी रे लो ॥शु०॥४॥
कर वन्दन आ राज-भवन में, आठों पुत्रों तांई रे लो ॥
अलग अलग दे राज्य सम्पदा, पति पत्नी हुलसाई रे लो ॥शु०॥५॥
संयम ले दुर्धर तप कीधो, शिव सुख पायो सीधो रे लो ॥
दोनों भव वे सफल करीने, मनवांछित सुख लीधो रे लो ॥शु०॥६॥
कथा रसाली चित उजवाली, भ्रातृ-भाव दर्शाई रे लो ॥
नव निर्मित की विविध तर्ज में, नव रस सुन्दरताई रे लो ॥शु०॥७॥
आचार्य श्री रघुनाथ जो, टोडर, इन्द्रसी आला रे लो ॥
भोमत, गिरधर, धर्म, मान, वुध, कृपा करी सुविशाला रे लो ॥शु०॥८॥
चरणाम्बुज-पट्पद "मुनि मिश्री", गुरु कृपा अनुसारे रे लो ॥
अमरसीह अरु वयरिसीह रो, रचियो ओ अधिकारो रे लो ॥शु०॥९॥
न्यूनाधिक कविता में आयो, मिथ्यादुष्कृत मम होवो रे लो ॥

— दोहा वाजिंद री राग में —

हाँ रे सुन बोली, हे नाथ ! बात क्या कर रहै।
हां रे सगो सगों रो साथ सदा ही दे रहै॥
हां रे करो परीक्षा राज ताज शिर माहरा।
पीयर केरो प्रेम होवेगा साहरा॥ १॥
हां रे मत कर जिद हकन्हाक माजनो जावसी।
हां रे तूँ गिण दे - दे गाँठ कोड़ी नहीं पावसी॥
हां रे तुज मन राखण हेतु जावूँ मैं सासरे।
हां रे फिर दीजे मत दोष रहै धन आसरे॥ २॥

ढाल ६ ठी ॥ तर्ज– लावणी० ॥

जब सेठ चल्यो ससुराल आप उपवासी २।
वनिता मोदक च्यार बनाया खासो।
होसी पारणो पंथ कंथ परकासी २,
क्यों करे प्रिया तूँ फिकर होनी हो जासी॥ १॥
टार सके कुण ओर गौर तूं कर रे २,
ओ धन्य धन्य है सेठ धीरज को घर रे॥ टेर॥
पाणी पात्र पिण साथ कोथलो साथे २,
ओ पैदल चाल्यो जाय इशारे माथे।
जीवन में यो जोग प्रथम दिखलाते २,
पिण अंजस रत्ती मात्र नहीं वे लाते॥
कांटे भागे रेत लगे ठोकर रे॥ ओ० ॥ २॥
दिन-भर चाल्यो खूब थक्यो अनपारी २,
भूखो प्यासो साथ नहीं असवारी।

भाव सुणो ने अयि भवि-जीवो !,शुद्ध स्वरूप संजोवो रे लो ।गु०॥१०॥

७ २ ० २
द्वीप, नयन, नभ, कर शुभ वर्षे, माधव कृष्ण पख आयो रे.लो ॥
भद्रा तिथि सुरगुरु शुभ वेला, ग्रंथ पूर्ण सुखदायो रे लो ।।गु०॥११।

— कलश —

विनय - भक्ती ज्ञान-शक्ती साधना में लीजिये ।
आत्म-रूप विचार निश दिन शान्ति सुधा-रस पीजिये ॥
गुरुदेव श्री बुधमल कृपा से सदा मंगल-माल है ।
मिश्रि मुनि के सदा वर्ते जय विजय सु- विशाल है ॥
देश मरुधर नगर वेनातट महा-रमणीक है ।
"शुकन मुनि" कथनाते जोड़ी चौपई स-श्रीक है ।। १ ॥
इति श्री अमरसेण वयरसेण चरित्र समाप्त ॥ शुभं भवतु ॥

अस्त होत दिन - नाथ रात अँधियारी २,
...षो दीनो ठाय भाव शुध धारी ।
भूले सम्यक् ज्ञान शान्त - रस सर रे ॥ ओ० ॥ ३ ॥
...दिय के होत पौषध-व्रत पारी २,
कीवी समायिक शुद्ध दोष सब टारी ।
...ोकारसि उपरान्त धोवन कर त्यारी २,
करण पारणो, मोदक काढे व्हारी ।
दान दियों बिन करू ँ असन कीकर रे ॥ ओ० ॥ ४ ॥
हे प्रभो ! दास का नियम आजलो रक्खा २,
मैं सत्य धर्म का मजा खूब ही चक्खा ।
हे कृपानाथ ! इण टेम देवो मत धक्का २,
कृपा आपकी होत नियम रहे पक्का ।
'मिश्री' सम या टेर सुनी जिनवर रे ॥ ओ० ॥ ५ ॥

ढाल ७ मी ॥ तर्ज– जी रे गाडी खड़ो रे गुजरात री० ॥

जी रे जितरे तो जंघा-चारण मुनिवरू,
जी रे मास खमण तप वारू हो ।
अभिग्रह दिल धारियो, तपस्या को पौषो करियो,
सामायिक करने आवे सामने ॥ १ ॥
जी रे च्यार मोदक व्है पल्ले वाँधिया,
जी रे च्यारों स्कंध पालन - वारो हो ।
इमरत-सी वोली प्रतिज्ञा पूरण हो-ली,
तो ले गोचरिया करसूँ पारणो ॥ २ ॥
जी रे गगन - गति सूँ हेठा आविया,
जी रे चाली जतनों री ज्यांरो हो ।

एक दिवश उद्यान में , पहुधारे मुनिराज ।
खबर सुणत सह-साथसूँ ,जावे वन्दन काज ॥२॥

ढाल १०१ मी ॥ तर्ज- आज आनंद घन योगीश्वर आया० ।

सुद्‌गुरु वन्दी अधिक आनन्दीं, सुणी देशना भारी रे लो ॥
रोम-रोम में रुचगी सारो, उमंग लगी तिरवारी रे लो ॥ १ ॥
शुभोदय सूँ संगति मिलती, झिलती दशा जयकारी रे लो ॥ टेर ॥
पद प्रणमो पूछै है स्वामी, सुख दुख किण विध लाधा रे लो ॥
उन्नति होगी, विपदा खोगी, आइ घणे री बाधा रे लो ॥शु०॥२॥
मुनिवर भाखे सुणो नराधिप, पूरब भव के मांही रे लो ॥
चार प्रकारे धर्म अराध्यो, उत्कृष्ट भावों ने लाई रे लो ॥शु०॥३॥
पिण मिथ्यात्वी मित्र-योग थो, बिच बिच शंका आणी रे लो ॥
विगर आलोयों बन्ध पड़्यो थो, सो होगइ भुगतानी रे लो ॥शु०॥४॥
कर वन्दन आ राज - भवन में, आठों पुत्रों तांई रे लो ॥
अलग अलग दे राज्य सम्पदा, पति पत्नी हुलसाई रे लो ॥शु०॥५॥
संयम ले दुर्धर तप कीधो, शिव सुख पायो सीधो रे लो ॥
दोनों भव वे सफल करीने, मनवांछित सुख लीधो रे लो ॥शु०॥६॥
कथा रसाली चित उजवाली, भ्रातृ - भाव दर्शाई रे लो ॥
नव निर्मित की विविध तर्ज में, नव रस सुन्दरताई रे लो ॥शु०॥७॥
आचार्य श्री रघुनाथ जो, टोडर, इन्द्रसी आला रे लो ॥
भोरत, गिरधर, धर्म, मान, वुध, कृपा करी सुविशाला रे लो ॥शु०॥८॥
चरणाम्वुज - षट्पद "मुनि मिश्री", गुरु कृपा अनुसारे रे लो ॥
अमरसोह अरु वयरिसीह रो, रचियो ओ अधिकारो रे लो ॥शु०॥९॥
न्यूनाधिक कविता में आयो , मिथ्यादुष्कृत मम होवो रे लो ॥

धर्मों रा धोरी, मोह ममता ने मोड़ी,
गयवर-सा मलपत श्रावक भालिया ॥ ३ ॥
जी रे हर्ष्यों हियड़ा में हद-बिन सेठियो,
जी रे सनमुख दौड़ी ने आयो हो ।
स्तवना कर भारी, लायो निज स्थान तिवारी,
अभिग्रहधारी मुनि कियो पारणो ॥ ४ ॥

* दोहा *

चारों मोदक दान में, दिये सेठ गुणवंत ।
संत संचरचा व्योम में, सेठ लियो निज पंथ ॥ १ ॥
आयो उत्सुक होय ने, निज सासर की पोल ।
धुर मिलिया धण रा पिता, ओलख लिया अडोल ॥ २ ॥

ढाल ८ मी ॥ तर्ज– दादरा ॥

धन रो मिजाज मत राखो रे जिगर में,
राखा रे जिगर में, पड़ोला डगर में ॥ धन रो० ॥ टेर ॥
धन तो बनावे गेला साथ नहीं देला,
भेला भा कमाया तो भी देवे ना जगर ने ॥ १ ॥
धनवानों ने लागे नहीं शिक्षा,
कौन जगावे कोइ सूतोड़ा मगर ने ॥ २ ॥
दान पुन सामायिक पौषा नहिं होवे,
सुगुरु दर्शन नहीं करे रे फजर में ॥ ३ ॥
मात, तात, भ्रात, वेटा, भानजो ने भायला,
लोभोड़ा रे एक नहीं आवे रे नजर में ॥ ४ ॥
गरीबों सूं जोड़े माया खून व्हांरो चूंसकर,

भाव सुणो ने अयि भवि-जीवो !, शुद्ध स्वरूप संजोवो रे लो ।शु०॥१०॥

७ २ ० २
द्वीप, नयन, नभ, कर शुभ वर्ष, माधव कृष्ण पख आयो रे.लो ॥
भद्रा तिथि सुरगुरु शुभ वेला, ग्रंथ पूर्ण सुखदायो रे लो ।।शु०॥११॥

— कलश —

विनय - भक्ती ज्ञान-शक्ती साधना में लीजिये ।
आत्म-रूप विचार निश दिन शान्ति सुधा-रस पीजिये ॥
गुरुदेव श्री बुधमल कृपा से सदा मंगल-माल है ।
मिश्रि मुनि के सदा वर्ते जय विजय सु- विशाल है ॥
देश मरुधर नगर वेनातट महा-रमणीक है ।
"शुकन मुनि" कथनाते जोड़ी चौपई स-श्रीक है ॥ १ ॥
इति श्री अमरसेण वयरसेण चरित्र समाप्त ॥ शुभं भवतु ॥

तो भी व्हाँ सूँ डोडा चाले गेंद री गजर में ॥ ५ ॥
धन रा नशां में सेठ जमाइ न जाणियो,
वाणियो वण्यो है पक्को छातीरो वजर में ॥ ६ ॥
मुजरो जमाई कियो हाथ दोनों जोड़कर,
सेठ ने मालुम जद हुइ रे हजर में ॥ ७ ॥

ढाल ९ मी ॥ तर्ज-हां सगीजी ने पेड़ा भावे० ॥

हाँ सेठ बोल्यो है तड़की, भूत खईश जिसो वो भिड़की।
विन जोगी वो बात कही, बिजलो-सो कड़को रे ॥ सेठ० ॥ टेर ॥
भला जनमिया थे निर्भागो, पूंजी सारी मारग लागी।
दाग दियो थे सात पीढ़ी ने, वण्या निरागो रे ॥ सेठ० ॥ १ ॥
बुरा दिखावण क्यों इत आया, आछा सारा लोग हँसाया।
दान पुन्न ए कीधोड़ा, कांइ आडा आया रे ॥ सेठ० ॥ २ ॥
कहे जमाई मैं नहिं खाई, किणरी पूंजो मैं न डुबाई,
मेणी री कांइ बात, रहै किम एह रखाई रे ॥ सेठ० ॥ ३ ॥
मैं नहीं आतो लाखों वातों, काम चलाऊँ मैं खुद हाथों।
तो भी तनया तोरी भेज्यो, आधी राती रे ॥ सेठ० ॥ ४ ॥
रकम उधार सहायता कारण, मैं आयो छूं सुनिये वारण।
चारण-सी नहीं चाह, खुशामद करूँ न धारण रे ॥ ५ ॥

– दोहा –

जावो आप दुकान पे, मैं आवूं वन जाय।
म्हो सूं जो भी वनसक्यो (तो) देनूं काम बनाय। १ ॥

ढाल १० मी ॥ तर्ज- छिपपे तूं गुमरापा रे० ॥

स्वारथियो संसार, भरोसो क्या भाई।

गर नहिं हो इतवार, देखलो अजमाई ॥ टेर ॥
चलकर आया खास दुकाने, आदर कुछ भी मिला न व्हाँने,
विन पैसे किसको पहिचाने,
कुन करे सार सँभार, भले हो जमाई ॥ स्वा० ॥ १ ॥
नींब-तरू-तल बैठक खाना, व्हाँ पै श्रावक आसन ठाना।
नहीं कोई उसको बतलाना,
है पैसे का प्यार अरे दुनियों मांई ॥ स्वा० । २ ॥
इतै सेठजी स्वयं पधारे, लड़कों से वो सलाह विचारे।
आया जमाई घरे अपोरे,
पूँजी दिवी विगार, भेजा है यहाँ बाई ॥ स्वा० ॥ ३ ॥
मदत इसे देनी या नांही, जो इच्छा सो दो बतलाई।
सुन लड़कों ने कीवी मनाई,
नहीं देने में सार, कहे च्यारों भाई ॥ स्वा० ॥ ४ ॥
जार, जमाई, जाट, भानजा, रेबारी, सोनार, नागजा।
नट, भट, जूवावाज, झूठजा,
नहिं माने उपकार, कहा नीती मांही ॥ स्वा० ॥ ५ ॥
घर का धन सब हाथों खोया, आघा पोछा कुछ नहिं जोया।
यहाँ पै अब आकर के रोया,
देंगे सो कर छार, माँगेगा फिर आई ॥ स्वा० ॥ ६ ॥
सेठ कहे सच्चा है कहना, देने से उलटा दुख लेना।
चुप चाप होकर के रहना,
चला जासी निज द्वार, ढाल मिश्री गाई ॥ स्वा० ॥ ७ ॥

– दोहा –

तात, जात की वारता, सुनकर खास मुनीम।

सुश्रावक जिनदास-चरित्र

हृदय वेदनः अनुभवी, हहो ! स्वार्थ निस्सीम ॥ १ ॥
पटक्या कूँची चौपड़ा, लो संभालो सेठ ।
अहल गमाया हूं दिवश, करके तोरी वेठ ॥ २ ॥
गंजा शीश सँवारना, करे क्लीब का व्याह ।
वैसे शाहा पद आपको, टुक शोभे है नांह ॥ ३ ॥

ढाल ११ वीं ॥ तर्ज- घुड़ला री० ॥

सेठों !, तजो मिजाज, ओ नहीं रेवेला जी २ ॥टेर॥
लाखीणो लायक नर आयो, बड़ो पावणो मन में भायो ।
जिसकी रखो न लाज, जगत कहीं केवेला जी २ ॥ १ ॥
थाँ सरखा नौकर था म्हाँरे, केइ पेट भरता घर लारे ।
आज न रह्यो अनाज, खर्च किम स्हेवेला जी २ ॥ २ ॥
साज देवणो वाजब थाँने, जटे न भोजन पुरस्यो भाणे ।
निंदेला सब लोक, धिकारा देवेला जी २ ॥ ३ ॥
कुलदेवी ने पूछ लिरावो, वा केवे उतनो ही दिरावो ।
बाँधो प्रेम की पाज, नाम जग रेवेला जी २ ॥ ४ ॥
बड़ो गिनायत घरे पधारे, बात समय की हृदय विचारे ।
यह है पहिला काज, बुद्धि से वेवेला जी २ ॥ ५ ॥

- दोहा -

जची बात मन सेठ के, वैठो जा सुरी थान ।
ओखे चित सूं पारियो, एकासण तस ध्यान ॥ १ ॥

ढाल १२ वीं ॥ तर्ज- पनजी मूंढे बोल० ॥

अम्बा आई रे २, मा आवो - रात रा सेठ बुलाई रे० ॥ टेर ॥

॥ श्री वीराय नमः ॥

मरुधर - केशरी, पण्डित-रत्न, प्रवर्त्तक मुनि श्री
मिश्रीमलजी महाराज विरचित
सुश्रावक जिनदास-चरित्र ।

– दोहा –

पार्श्व-पदाम्बुज-मन-मधुप,–सौरभ लीन सदाय ।
मगन निरन्तर भ्रमत है, दुविधा दूर हटाय ॥ १ ॥
ज्यां के शुभ उपदेश से, तिरण भवोदधि तीर ।
त्याग और वैराग को, पभरणे धारण धीर ॥ २ ॥

ढाल १ ली ॥ तर्ज– शिक्षा दे रही जी, हमको रामायण० ॥

श्रावण करलीजिये जो, प्यारे आगम ज्ञान प्रवीन ॥ टेर ॥
आगम ज्ञान अथाग अनूपम, अक्षय आनन्द रूप ।
अतीत, अनागत, वर्त्तमान में, वर्ते एक अनूप ॥श्रवण०॥१॥
नहीं आस्था उन पै उसका, है पूरण दुर्भाग ।
ऐसा है दुर्मतिनर उसका, संगत देना त्याग ॥श्रवण०॥२॥
जो सूरज पै धूल उछाले, पड़ै उसी पै आय ।
इसी भाँति जिन-वचन उथापक, रुले चतुर्गति मांय ॥श्रवण०॥३॥
जिन-वाणी का जो श्रद्धालू, धारे नियम उदार ।
कैसा भी संकट सहलेता, डिगता नहीं लिगार ॥श्रवण०॥४॥
श्री जिनदास विवेकी श्रावक, सुन्दर तस आख्यान ।
'मिश्री मुनि' कहे श्रोताजन तुम,सुन लेना धर ध्यान ॥श्रवण०॥५॥

ढाल २ जी ॥ तर्ज–धर्म पै डट जाना० ॥

धर्म से रँग जाना, छोटी बात नहीं है ॥ टेर ॥

हुयो चाँदणो, गयो अँधारो, दिव्य रूप दरशाई रे।
सेठ ऊठ कर पाँवों पड़ियो, शीश झुकाई रे ॥ अम्बा० ॥ १ ॥
सुरी कहे क्यों याद करो मुज, अड़चो काम कंइ आई रे।
पिण सुणले पुनवानी थारी, गई विलाई रे ॥ अम्बा० ॥ २ ॥
पूँजी पेला विले लागसी, इज्जत रेगी नांही रे।
सेठ सुणी थर थर तब धूज्यो, (आ) कंई फुरमाई रे ॥अम्बा०॥३॥
मैं तो आप - भरोसे झूँ झूँ, सदा रह्या वरदाई रे।
कोप करो मत, झिल्यो न जावे, सेवक तांई रे ॥ अम्बा० ॥ ४ ॥
माता मो - पर महर राखिये, बालक जाण सदाई रे।
"मिश्री" कहे दिन नहिं तेरा, – कौन सहाई रे ॥ अम्बा० ॥ ५ ॥

* दोहा *

कर न सकूँ मैं मदद कुछ, पुन्य गया परवार।
तो भी एक उपाय है, करले धर कर प्यार ॥ १ ॥

ढाल १३ मी ॥ तर्ज– अस्सी रुपैया ले कलदार० ॥

आयो जमाई करले सार, तो बना रहेगा कारोबार ॥ टेर ॥
चार व्रत मारग में देखो, निपजाया सेणो सरदार ॥आ०॥१॥
सामायिक, उपवास और सुन, कर पौषध दियो दान उदार ॥अ०॥२॥
अशुभ दिहाड़ा पूरा होग्या, अब हो जासी जय जयकार ॥आ०॥३॥
याते चौथो हिस्सो उससे, कर नरमाई ले ले सार ॥आ०॥४॥
जो दे देवे सो भाग्य योग से, तो सुधरे थारो जमवार ॥आ०॥५॥
इतनी कहि देवी गइ पाछी, रात गई ऊगो दिनकार ॥आ०॥६॥
ध्यान पार 'मिश्री' घर आयो, भेलो हुवो सभी परिवार ॥आ०॥७॥

शहर शौरिपुर था सुखकारी, जिसकी रौनक अहा! निरारी।
बसते बड़े बड़े व्यौपारी, न्याय से धन पाना ॥छोटी०॥१॥
राजा दिल का बड़ा दिलाला, उसकी शोभा जग में आला।
करते परजा की प्रतिपाला, मन्त्रीश्वर गुन वाना ॥छोटी०॥२॥
श्रावक श्री जिनदास सयाना, उसका कहाँलो करें वखाना।
जिसने जीवा - जीव को जाना, दयालू है स्याना ॥छोटी०॥३॥
सहायक दुखियों का है पूरा, वो तो सत्य शील में सूरा।
सारे दुर्व्यसनों से दूरा, आन पै मरजाना ॥छोटी०॥४॥
सुन्दर शीलवंती सेठानी, भक्ता थी वा सिया समानी।
निर्मल, जरा नहीं अभिमानी, विविध देती दाना ॥छोटी०॥५॥
दम्पति एकान्तर तप करते, द्वादश श्रावक के व्रत धरते।
गहरे गुन चुन-चुन के भरते, खजाने धन नाना ॥छोटी०॥६॥
सारा शहर, देश गुन गाते, खाली आते पै नहि जाते।
सगरे सज्जन जिसे सराते, मुख्य सबने माना ॥छोटी०॥७॥

*** दोहा ***

धन, तन, जन पुनि धर्म-युत, आन मान अ-समान।
उन सम उनविरिया उठै, अवर सेठ नहि आन ॥ १ ॥
त्यागी बड़ भागी तपी, रागी धर्म - रसाल।
आदर दे अवनीश अति, न्यायी निपुण निहाल ॥ २ ॥

ढाल ३ जी ॥ तर्ज— काच की किंवाड़ी मांये लोह खट को० ॥

आँखड़ल्यों रो तारो व्हालो सब जन को।
दान में लुटाते खुले - हाथों धन को ॥ टेर ॥
सेठ सादगी को शहरो, गुणी गमखाऊ गहरो,

(

० दोहा ०

कही सेठ पुत्रों - प्रते, देवी हुंदी वाय।
सब कहे दे दो तातजी !, भय मोटो दरशाय ॥ १ ॥

ढाल १४ मी ॥ तर्ज- म्हारे घरे पधारो जी २, ॥

श्रावक जी बेला को पौषो, पाल समायिक ठाई।
वेनोई बोलावण सारू, आया च्यारों भाई ॥ १ ॥
जल्दी घरे पधारो जी क, जल्दी घरे पधारो जी क।
भाभोसा जोवे वाटड़ली, म्हाँ, अर्ज गुजारों जी ॥ टेर ॥
सामायिक आणे सूं कपड़ा, - पहिन साथ में जावे।
सुसराजी सूं करके मुजरो, ऊभोड़ा फुरमावे ॥ जल्दी० ॥ २ ॥
क्या आज्ञा है राज प्रकाशो, श्वसुर कहे तिणवारी।
जितरी रकम आनरे च्हावे, ले जावो इणवारी ॥ जल्दी० ॥ ३ ॥
मूंगा मोला आप पाहुणा, बाई लाडकी म्हारे।
इण घर मे है सीर ठेठरो, दूजा थांरे लारे ॥ जल्दी० ॥ ४ ॥
एक अर्ज है म्हारी छांने, मन्जूरी कर लीजो।
लाभ लियो मारग में उणरो, चौथो हिस्सो दीजो ॥ जल्दी० ॥ ५ ॥
श्रवण करत जिनदास नयन में, इकदम लाली छाई।
नहि बोलण रो फेम सेठजी! . आ कांई फुरमाई ॥ जल्दी० ॥ ६ ॥
भोजन भक्ती करी न तिल भर, नहि दीधो सम्मान।
उणरो अमरप में नहि आण्यो, सूंप्यो नहीं मकान ॥जल्दी०॥ ७ ॥
हद करदोनी धर्म - वेचणो, मुजने करो तैयार।
रंग ! रहाओ म्हारो माजनो, है थांने धिक्कार ॥ जल्दी० ॥ ८ ॥
म्हारे धन री नहीं चाहना, गाढ़ो करने राखो।

लेवे गुरू-भक्ति लहरों, वश राखे मन को ॥आँ०॥१॥
ज्यों लो दान नहीं देवे, तो लो कण नहीं लेवे,
बिना नियम न रेवे, तन नहीं तन को ॥ आँ०॥२॥
लायक छोटो-सो है लालो, बच्चो हंस-सो दयालो,
हाथो हाथ ही हुलरालो, पक्ष प्यार-पन को ॥आं०॥३॥
देव गुरू की है महर, वहै आनन्द की लहर,
सारो सरावे है शहर, कल्पवृच्छ वन को ॥आँ०॥४॥
करे धर्म की दलाली, सब जीवों को रुखाली,
मन रहे खुशियाली, रंग नाना रन को ॥ आँ० ॥ ५ ॥

० दोहा ०

कहो कर्म-गति गहन जिन, पलटत जैसे पौन ।
प्रबल जु वेग-प्रवाह को, रोक सकै कहो कौन ॥ १ ॥

ढाल ४ थी ॥ तर्ज– अस्ताना से उतरी परी० ॥

श्रावकजी की दशा फिरी, आय अचानक विपद परी । टेर॥
ज्हाजों डूबी सिन्धु मजार, आग लगी जहाँ थे कोठार,
देनेवालों की नियत गिरी ॥श्रावक०॥१॥
चारों ओर से हो रहि हानी, सेठ अशुभ दिन लिया पिछानो,
तंग दस्ति आ ज़बर भिरी ॥श्रावक०॥२॥
कारोबार बंध जब करियो,–कर्जो नहिं किनको शिर धरियो,
केई मित्र आ अर्ज करी ॥श्रावक०॥३॥
म्हां सब थांरा शंक न लावो, लेलो रकम रु विणज बढ़ावो,
कहे सेठ नहिं लूं दमड़ी ॥श्रावक० ।४॥
एकान्तर उपवास करावे, नियम लिया सो पूर्ण निभावे,

श्रा नहीं ह्वै, कंगाल हो जावो, बोया रा फल चाखो ॥जल्दी०॥९॥
'मिश्री' कहे यो मोटो मानव, इतनी कह कर चाल्यो।
धर्मवीर धीरज मन धारो, रह्यो न किनको पाल्यो। जल्दी०॥१०॥

— दोहा —

तीखे मन तेलो करी, जाय जमाई जाम।
आडो फिरियो आयके, वह मुनीम तिण ठाम ॥ १ ॥

ढाल १५ मी ॥ तर्ज– मत भूलो कदा रे, मत भूलो कदा० ॥

म्हां पै महर करो २, रुको थोड़ासा हूंकारो भरो ॥ टेर ॥
घरे पधारो दास विछान, पारणो कर, करजो प्रस्थान ॥म्हाँ०॥१॥
आप लायक तो छूँ नहीं सेठ, तदपि भोजन की लेवो भेंट ॥म्हां०॥२॥
करे जिनदास अर्ज मतिमान, तेला रा कीना है पचखान ॥म्हां०॥३॥
जिणसूँ माफी दो बगशाय, धर्म - राग भरियो मन-मांय। म्हां०॥४॥
हुई मुनीम री आली आँख, जावतड़ो ने न सकियो भाँक ॥म्हाँ०॥५॥
तज मुनिमायत स्वयं दुकान, खोल लिवो इसड़ो गुणवान ॥म्हां०॥६॥
चल्यो जिनदास निजी गृह ओर, साँझ समै आयो उण ठौर ॥म्हां०॥७॥
पौषो कर सूतो जिनदास, 'मिश्री' धर्म सब पूरे आस ॥म्हां०॥८॥

– दोहा –

पौषध पारो सरस-मन, दी सामायिक ठाय।
शक्राधिप निज ज्ञान से, देख्यो श्रावक तांय ॥१॥

ढाल १६ मी ॥ तर्ज– थ्हाँरो ने लागे वचनों रो ताजणो० ॥

सुरपति अवलोक्यो दृढ़ श्रावक भणी, देव सभा में दाख्यो हाल।

कठिन करणी नें रहणी एकसी, दानी निर्मानी परम कृपाल ॥१॥
धन धन धन जीवन, विरला वसुधा में श्रावक एहला ॥ टेर ॥
विकट स्थिति में अधुना आगयो, तदपि व्रत पाले निरतीचार।
हिरणगमेषी जावो शीघ्र ही, सेवा बजावो धर कर प्यार ॥२॥
अवसर मत चूको, इसड़ी सेवा तो मुश्किल सूँ मिले ॥ टेर ॥
वचन स्वीकारी सुर उत पौंचियो, आई सामायिक पैरचा वसन्न।
खाली हाथों सूँ जो घर जावसूँ, विलखो हुयजासी वनिता मन्न ॥अ०॥३॥

— कवित्त —

घर से रवाने जब हुवो थो सासर ओर,—
नारी को कथन धार करी नहीं देर मै।
पौंच्यो उत, करतूत देखली उठारो सब,
मान नहीं दियो पिन छाय रयो जैर मैं॥
खाली हाथ जासूँ घर बालक निरास होंगे,
कामनी करेजे दुख होसी हिये हेर मै।
अशुभ करम जोर तापै नहीं चाले म्हारो,
एक ना उपाय सूझै अहो! इण वेर में॥ १ ॥

— ढाल—चालू —

कंकर री ग्रंथी बांधो सेठजी, चालत सुर शक्ती कर के ताम।
अधर पहुँचायो घर रे सन्मुखे, इतनो कर सुरवर जावे ठाम ॥अ०॥४॥
वनिता विलोकी आई साम्हने, सेठ झेलाई ग्रंथी हाथ।
भोजन पेली ग्रन्थी मत खोलजो, दूजी मंजिल में मूतो साथ ॥अ०॥५॥
वनिता विचारी ग्रन्थी देखली, रत्न पचरंगा सब अनमोल।
सारो घर लूँटी लाया सेठजो, दया आणी नहीं हिवड़े तोल ॥अ०॥६॥

डोडी बन तब ड्योढ़ी बाहिर, दिया निकाल न रखा वहीं ॥११॥
होकर के कंगाल भटकता, शीश पटक कर रोता है।
कहे किसे अरु सुने कौन अब, मुख अंसुअन से धोता है॥
भूखा प्यासा और रखड़ता, उसी सन्त पै है पौंचा।
है धिक्कार, रत्न तूं खोया, निर्लज पहले नहि सोचा ॥१२॥
खैर, ध्यान आयन्दा रखना, एक उपाय बताता हूं।
फिर रहना हुंशियार सोचले साफ साफ जतलाता हूं॥
दूजा शंख भेलाय दिया अरु, युक्ति उसे कहदी सारी।
वापिस लौट आगया सत्वर, वो वैश्या के आगारी ॥१३॥
सूर्योदय होते ही उसने, दधि-सुत से मुद्रा मांगी।
मांगे जिससे दूनो दे यह, तक वैश्या देखन लागी॥
कितना भाग्यवान नर यह है, वस्तु अनोखी लाता है।
नाहक इस से वैर बसा के, तोड़ा सुन्दर नाता है ॥१४॥
चली महल से पड़ी चरण आ, गदगद होय कहे वानी।
नाश जाय इस दुष्ट नशे का, प्रेमदूध डारी वानी[1]।
सौगन खा, सच्ची कहती हूं, जब से राज पधारे हैं।
अन जल मैंने लिया नहीं, अरु दिल में जले अंगारे हैं॥१५॥
करुणा कर मुझ महल पधारो, जीवनभर की दासी हूं।
और मुझे कुछ भी नहि चाहिये, केवल दर्शन-प्यासी हूं॥
अच्छा अच्छा सुनले प्यारी!, मैं तेरे से दूर नहीं।
क्यों रोकर दुख पाती है, मैं चलता हूं जरूर वहीं ॥१६॥
महल गये, कर भोजन, सूता, कपट नींद की चादर है।
गणिका भी जब [illegible], बिना कपट की चादर है॥
पहुंचा [illegible] में रख कर, [illegible] लिया निकाली है।
[illegible] महल से, नर निकला [illegible] है ॥१७॥

---

१ [illegible]

देणो ओलम्भो भोजन बाद में, रत्न कुँवर ने देकर एक।
बेचण भेज्यो है पास मुनीम रे, देखी मुनीमजी कियो विवेक ॥अ०॥७॥

— दोहा —

किसो कुँवर पुनवान है, जिसो न और जहान।
इसो रत्न घर में मिले, विसो न देख्यो आन ॥ १ ॥

ढाल १७ मी ॥ तर्ज– बीरा! लूम्बा झूम्बा होय आइजो० ॥

कुँवरसा! रत्न ले जावो, पाछो आ अरज करावो जी ॥ टेर ॥
नहीं सौदागर है इसड़ा, यह रत्न खरीदे जिसड़ा जी ॥कुँ०॥१॥
कोई बड़ो सेठियो आसी, वो इणरो मोल चुकासी जी ॥कुँ०॥२॥
कहे लाल रत्न यहीं रखना, है आप जुम्मे ही बिकना जी ॥कुँ०॥३॥
भोजन समान भिजवाना, नहीं देर जरा करवाना जी ॥कुँ०॥४॥
मैं भेजूँ आप पधारो, मूनीम कहे धर प्यारो जी ॥कुँ०॥५॥
सामान आया मन च्हाया, सेठानी भोजन बनाया जी ॥कुँ०॥६॥
जा लाल! तात ले आवो, भोजन ठण्डो न करावो जी ॥कुँ०॥७॥
यह ढाल सतरमी सागे, कहे 'मिश्री' सेठ-सा जागे जी ॥कुँ०॥८॥

— दोहा —

पुत्र, पिता असनालये, आय गये अविलम्ब।
ठाठ देख भोजन तणो, आयो अधिक अचम्ब ॥१॥

ढाल १८ मी ॥ तर्ज– ना छेड़ो गाली दूंगी रे० ॥

आ कर रहो क्या सेठानी रे, इसको नहिं जरा विचार ॥ टेर ॥
ये कर्ज पराया लाती, मुजको यह माल खिलाती,
नहिं वापिस देन सँगवाती रे, कुण कैसी मुज साहुकार ॥ये०॥१॥

सीधा अपने सदन गया आनंद में दिवश बिताता है।
सहायता सबको सादर, जीवन धर्म दृढाता है ।।
अवर शंख से उस वैश्या ने, माँग द्रव्य की करडारी ।
ांगे जिससे दूना कहता, माँग माँग वो गइ हारी ॥१८॥
बस, इतना ही दे दो जरदी, ज्यादा चाहूं मैं नांही ।
ंख कहे मैं कुछ नहिं देता, कहता हूं केवल बाई ! ॥
दोय तरह का शख सयानी !, पहला पदम - शंख मानो ।
ो माँगे वह देता निशदिन, वर्षालू बादर जानो ॥१६॥
दूजा डफोल - शंख कहलाता, कहता पर देता नांही ।
दम - शंख को वो ले भागा, डफोल शंख मैं हूं यांही ॥
सुनकर यों पछताती वैश्या, सब खेल बिगाड़ा हाथों से ।
च्चा माल हाय मैं खोया, विलम व्यर्थ की बातों से ॥२०॥
मतलब इसका समझो मित्रों !, मानवता का पाठ पढ़ो ।
हो उसे करडारो पूरा, उन्नति के तुम शिखर चढ़ो ।।
करना धरना है ना कुछ भी, बढ़ - बढ़ बातें करता है ।
फोल शंख - सा दानव-नर है, पाप पोट शिर धरता है ॥२१॥
सुन्दर समय मिला है मित्रों !, देव गुरू को अपनाओ ।
उनकी शिक्षा पर चल करके, सत्य धर्म में रंग जाओ ।।
तन धन यौवन की आँधी में, अयि पंछी मतना भटको ।
ान शील तप भाव प्रभावे, भरलो भव्यों ! निज घट को ॥२२॥
मानो मत दुनियाँ है अपनी, यह तो रैन बसेरा है ।
जगो, भगो निज पंथ सँभालो, हो गया खास सवेरा है ॥
गया वक्त नहिं मिलने का है, जिसका चिन्तन क्यों न करो ।
सफल करो नर तन सुकरत कर, भव-सागर से शीघ्र तरो ॥२३॥
दो हजार-छव्वीस अब्द का, द्वितीयाषाढ कृष्ण जानो ।
ग्यारस गुरु शुभ योग जवालो, यह अधिकार बना मानो ॥
श्री बुधमल गुरुदेव हमारे, इष्ट देव हैं श्रेष्ट वही ।
'मुनि मिश्रीमल' कहे धर्म से, आनन्द मंगल होय सही ॥२४॥

भोजन कर देना ठपका, यह सहूर सीखा है कब का,
है देना पराया अबका रे, मुझे बचा बचा किरतार ।।ये०।।२।।
भोजन के बाद भवानी, वा पूछ रहो मृदु-वानी,
पीहर से क्या सहनानो रे, मुज लाये हो भरतार ।।ये०।।३।।
गठरी में माल घना है, वो दोना प्रेम सना है,
सव चाहू जना जना है रे, तुम्हें माने हिय के हार ।।ये०।।४।।
सुन बोला सेठ सुज्ञानी, नादान बनी सेठानी,
गठरी पै यह इठलानी रे, इसमें है कंकर भार ।।ये०।।५।।
इसके जु भरोसे कर्जा, करके क्यों चाहती हर्जा,
मैं कई दफे तुझे वर्जा रे, नहीं रखती ख्याल लिगार ।।ये०।।६।।
नहीं सुना आजलो ताना, निज गौरव रखा सयाना,
क्या दिल में तैने ठाना रे, हो पति - भक्ता तूं नार ।।ये०।।७।।

— दोहा —

प्यारी पटकी पोटली, प्राणेश्वर लो पेख।
तात दियो धन एतलो, ओलम्बो नहीं एक ।। १ ।।
जीवन में जाणी नहीं, कपट भरी तव प्रीत।
विस्मय है इण वात रो, आज अनोखी रीत ।। २ ।।

ढाल १९ मी ।। तर्ज- गिणगोर री० ।।

प्यारी म्हारी, पीहर क्यरे इतना मतना पसरो जी।
इतना मतना पसरो म्हारी करी फजीती मुसरो जी ।। टेर ।।
टको एक दीयो नहीं लाडो !, आडो वातां काडी जी।
सूवण ने नहीं जगा समर्पी, आंखों दूणो चाडी जी ।।प्या०।।१।।
लोटो भर पाणी नहीं पायो, भोजन री काई आशा जी।

स्त्री कपट की खान है

म्हारो धर्म खरीदण च्हायो, इसड़ा किया तमाशा जी ॥प्या०॥२
हाथों थारे भोजन जाम्यो, तेलो कर मैं आयो जी।
पाछो पारणो अठे आयने, थारे आँगण पायो जी ॥प्या०॥३
थांने राजो राखण खातिर, कंकर बाँधी लायो जी।
धर्म प्रतापे रत्न बण्या है, वीतक तुम्हें सुणायो जी ॥प्या०॥४
साची मान अथवा तूँ झूठो, मैं मिथ्या नहीं भाखी जी।
शासन - रक्षक देख देवता, वात अपोंरी राखी जी ॥प्या०॥५
सत्य मान सुन्दर कर - जोड़ी, माफी पियु से मांगी जी।
धन्य धन्य है धर्म आपरो, धन्य धर्म रा रागी जी ॥प्या०॥६
विन आज्ञा मैं गठरी खोली, एक रत्न ले लीनो जी।
लाल सँगाते मुनीमजो को, रत्न अमोलख दीनो जी ॥प्या०॥७
सभी बात का आनन्द होग्या, कारोबार बढ़ायो जी।
दान प्रतापे सेठ स्हाब रो, सुयश सूर्य सम छायो जी ॥प्या०॥८॥
सारो देश नगर गुण गावे, मिश्री मुनि दर्शावे जी।
आखिर धर्म का फल है मीठा, आगम स्पष्ट सुनावे जी ॥प्या०॥९॥

* दोहा *

दिन पलटत देर न लगे, निश्चय लीजो मान।
तीन दशा इक दिवस में, सूरज तणी सु-जान ॥ १ ॥
विद्या तन धन जन पुनी,—होय राज्य को जोर।
टरे न रेखा कर्म को, करलो युक्ति करोड़ ॥ २ ॥

ढाल २० मी ॥ तर्ज— ख्याल की० ॥

कर्मों रो झालो, इकदम आवे है टाल्यो ना टले ॥कर्मों०॥टेर॥
श्रावकजी रे सासरे स - रे, बनी अनोखी बात।
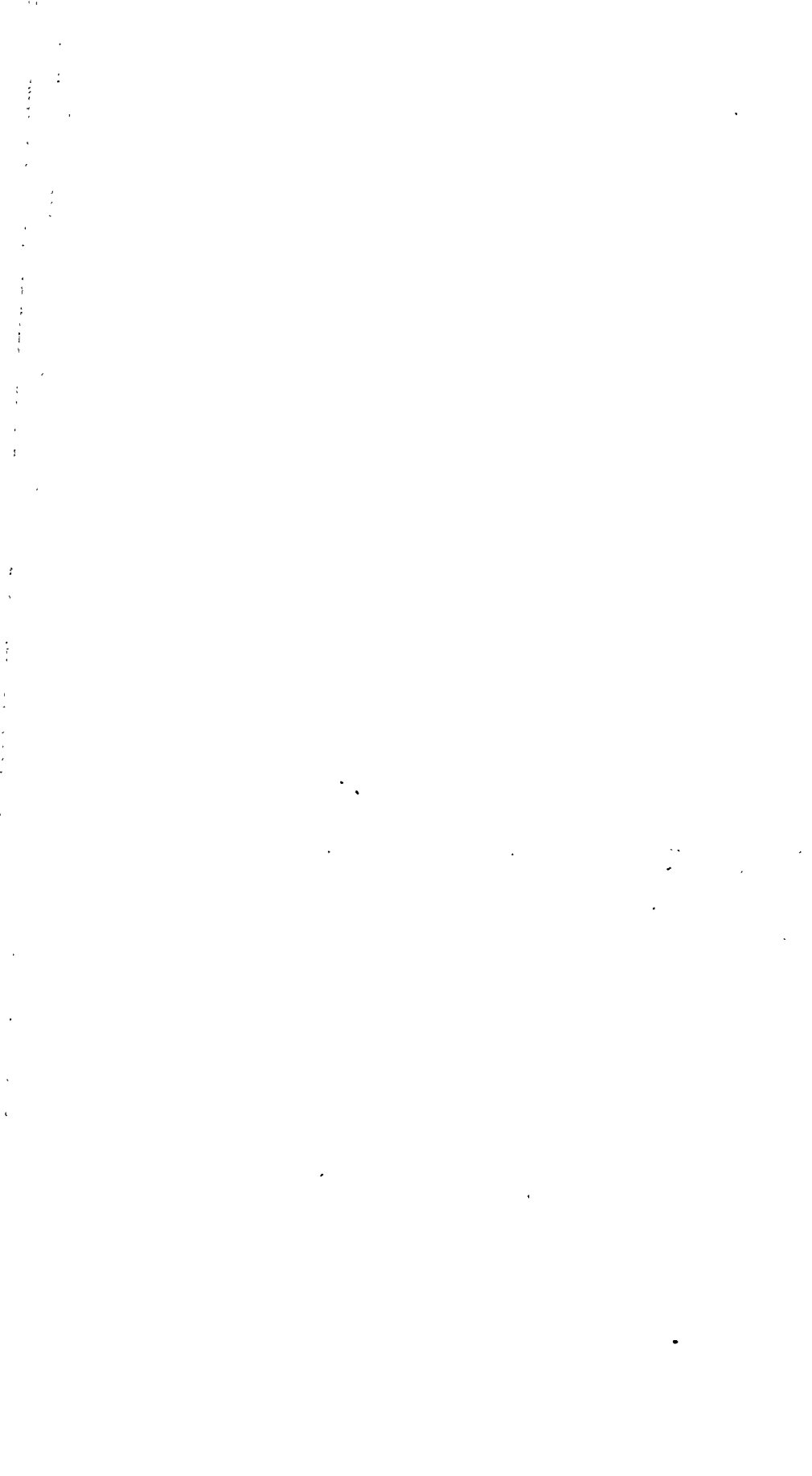
चोर खजानो नृपतो चोरयो, आकर आधी रात जी ॥क०॥१॥
वो धन सूंप्यो सेठ ने सरे, चौड़े हुआ दिन चार।
राजा, घर धन जब्त कियो अरु, दीना बार निकार जी ॥क०॥२॥
तस्ती दीनी आकरी सरै, गहणा, कपड़ा खोस।
हुकम नहीं कोई भी रखणे रो, नृपनो पूरण रोष जी ॥क०॥३॥
अन्न रो आखो नहीं आसनो, कित वाहन री बात।
भूखा प्यासा घणा उदासी, बारे जावे साथ जी ॥क०॥४॥
सोचे सभी कठीने जावां, सहारो रह्यो न एक।
बाई सूं मिल आघा जासों, शल्ला करी सब छेक जी ॥क०॥५॥
शहर व्हार श्रावक नी कोठी, सन्मुख मारग चाले।
हीनावस्था सासरियों की, नयनों सेठ निहाले जी ॥क०॥६॥
महदाश्चर्य? अहो! मन सोची, दौड़ अगाड़ी आया।
आवो, पधारो, मत शर्मावो, थें म्हारे मन भाया जी ॥क०॥७॥
देख लायकी जामाता की, लाज्यो सब परिवार।
शाले समय हृदय में 'मिश्री', एह वीसमो ढार जी ॥क०॥८॥

— दोहा —

फर खातर, बहु मान दे, अपर हवेली मांय।
डेरा सर्व दिरावियां, वस्त्राभूषण तांय ॥ १ ॥
भोजन भक्ती करण हित, भामिन से कहि भौन।
सा कहे है किण काम का, दो दाधा पर लौन ॥ २ ॥

ढाल २१ मी ॥ तर्ज— मास खमण रो मुनि रे पारणो० ॥

पागलपनो प्यारो तूं कर रही रे, थारो तो नियम रह्यो है भूल रे।
बातों छोटी तो मन सूं वीसरो रे, भूलों पर मूब बिछावो फूल रे ॥१॥
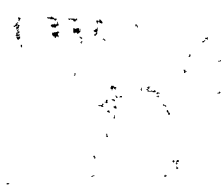
स्त्री-कपट की खान है

— तर्ज-राधेश्याम की —

मंगल मयी जिनेश्वर वाणी सदा हृदय में स्थान करे,
होय तत्व का निर्णय जिससे भव सागर से शीघ्र तिरे।
नारी नहीं प्यारी है किसको नाघिन कारो कपट भरी,
कथा सुनाउं सुनलो सारे निद्रा विकथा दूर हरी ॥ १ ॥
अंग देश में चम्पा नगरी अमरा पुरी ओपम छाजे।
महासेण नृप न्याय निपुण है अरि-करिहित हरि ज्यों गाजे,
एक दिवस गये वन खेलन को सुन्दर घोडे चढ़करके
काष्ठ काटता इक कठियारा राजा उसे देख करके ॥ २ ॥
सोचे बड़ा परिश्रम करता यह उद्योगी जीवन है।
दम्पति धूप छाय की परवा करते नहीं सुदृढ़ मन है।
सदा सादगी वन ही इसका सच्चा महल अटारी है।
गाना बजाना रंग राग तज रहते इच्छा चारी है ॥ ३ ॥
राजा पूछे अयि कठियारा! कहो गुजर कैसे चलता।
बड़े मजे से चलता स्वामिन् रामत में पासा ढलता।
कुछ तो अधिक कमाता होगा बाल बच्चा के लिये कभी।
हां भगवन् हैं कथन सत्य यह कुछ बचता कर खर्च सभी। ॥ ४ ॥
किन्तु उसका चार हिस्से में बटवारा कर देता हूं।
रखूं न एक धेला निशि में सुख से निद्रा लेता हूं।
सबब यही कहीं धन के नशे, मैं पागल नहीं बन जाऊं।
और मालिक की भूल नरक में नर तन खोवी दुख पाऊं ॥ ५ ॥
कैसे हिस्से चार बनाता, मैं भी सुनना चाहता हूं।
देख लिया हूं जबर सबर की आश्चर्य मन लाता हूं।

उत्तम मानव रो उत्तम भावना रे, ओछापन दिल में आणे नायरे ।। टेर ।।
बाई जीमायो सारा साथने रे, आखिर सुणायो यो सन्देश रे ।
दिन ओ सुपना में थाँ जाणियो रे, पिण पायो है कर्मो कर पेस रे ।।उ०।।२।।
मान अणू ँतो कांइ कामरो रे, सोचोनी हृदय बीच,खचोत रे ।
खावो खर्चो ने नीती न्याय सूँ रे, धन्धो करोनी होय न चीत रे ।।उ०।।३।।
सारा सज्जन तो माफो माँगलीरे,नवलो तिण पुर ही कियो निवासरे ।
धर्म ओलखियो बाई - योगथी रे, सारों रे वर्ते लील विलास रे ।।उ०।।४।।
भार सम्भलायो श्रावक पुत्रने रे, दम्पति आतम-ध्यान रमाय रे ।
सुर पद पाया परम प्रमोद सूँ रे, मुक्ति महाविदेह में जाय रे ।।उ०।।५।।
कथा सुरंगी श्रावक धर्म पै रे, निर्मित कीनी तर्ज इकीश रे ।
लेश्या राशो ने नभ दृग वर्ष में, अगहन तेरस शुकल रवोश रे ।।उ०।।६।।
सुगुरु श्री बुधमल कृपया लही रे, ठीकर वास देश मेवाड़ रे ।
शुकन कथन सूँ 'मिश्रीमल मुनी' रे, जिनवर आज्ञा शिर पै चाड रे ।।उ०।।७।।

– कलश –

वीर आज्ञा युक्त करणी किया ह्वै कल्यान ए ।
तजो आलस उद्यमी बन धरो आतम ध्यान ए ।।
पूज्य श्री रघुनाथ जी के गच्छ में मणि माल ए ।
सुगुरु श्री बुधमाल मेरे परम पूज्य दयाल ए ।।१।।
शांति, कांति रु जय विजय सुख वर्त्तते सौभाग ए ।
देव, गुरु पुनि धर्म ऊपर रखो सुन्दर राग ए ।।
मेदपाट विख्यात भूमी वीर - रस से है भरी ।
'मिश्रिमल मुनि' निर्भयो यह चौपई है ऊचरी ।।२।।

तेरे जैसी होय प्रवृत्ति दुनियों का जीवन सुधरे।
सत्य अहिंसा को अपना के सदानन्दो भण्डार भरे ॥ ६ ॥
एक हिस्सा तो जमा कराता कर्जदार को दूं दूजा।
तीजा हिस्सा पानी में बहादूं चौथा शत्रु को सूजा।
कठियारे का वाक्य सुना नृप पहेली पै सुविचार किया।
अर्थ जचा नहीं राजाजी के वऊत मगज पै जोर दिया ॥ ७ ॥
हो हैरान कहै नृप उनसे सही अर्थ मुज समझादो।
और कोई भी नहीं सुन पावे ऐसे कान में सुनवादो।
क्या हजूर तमाशा करते मैं तो केवल जंगली हूं।
आप बड़े श्रीमान् नराधिप! क्या बताउं वंगली हूं ॥ ८ ॥
राजा कहे वक्त पै प्यारे अकल काम आ जाती है।
छोटे बड़े की पूछ नहीं यहां उदज काम ही आती है।
लपक आय के लकड़हारा कानों में सुनवाता है।
सुन कर के मतलब राजा को बड़ा अचम्भा आता है ॥ ९ ॥
पहिला हिस्सा देता दान में परभव में वो पावेगा।
नहीं देने से हे स्वामी! कंगाल फक्त रह जावेगा।
दूजा हिस्सा है माता का जिसका है ऐसान बड़ा।
उस कर्जे में देता हूं जो पालन पोषण किया कड़ा ॥ १० ॥
तीजा हिस्सा मोज शोक में व्यय कर व्यर्थ गमाता हूं।
इसलिये पानी में डाला सही सत्य सुनवाता हूं।
शत्रु को चौथा हिस्सा दूं वह शत्रु कौन है आप सुनो!
है खड़ी सामने औरत मेरी मानो मतना रोश धुनो ॥ ११ ॥
भूप कहै हैं तीन सत्य पर चौथी बिलकुल झूठी है।
मेरी समझ में कुछ नहीं आती तेरी अकल अनूठी है।
महा महिम मैं सच कहता हूं नार किसी की बनी नहीं।

कहो सो करो

राजा पूछे कौन वहिन तू कहां की रहने वाली है।
प्राप्त अर्थ किया तू किससे कौन ऐसा पुन्य शाली है।
मैं कठियारन हूं महाराजा मम पति तुम से दाखी थी।
कानों में छाने सुनवाते मैं निगराणी राखी थो ॥ १६ ॥
क्यों वकती है झूठ सरासर क्या मंशा है मरणे की।
सच्चा हाल सुनाती है या आदत टेढी चलने की।
माफ करो अन्नदाता मैं तो तृष्णा वस मिथ्या बोली।
मेरे पति ने मुझे बताया सत्य बात अब मैं खोली ॥ २० ॥
श्रवण करत वन क्रोधित राजा कठियारे को बुलवाया।
हाजिर हूवा हुकम के साथे लेकिन मन में घबराया।
क्यों वे तेने अर्थ वताया जब कि मैंने किया मना।
आगया खंडित करी उसी का मजा देख अब करूं फना ॥ २१ ॥
हाथ जोड़ वोला कठियारा नाथ ! मेरी भी सुन लीजे।
अनुचित अगर होय तो मुझको बड़ी खुशी से दण्ड दीजे।
षट मासों तक चली लड़ाई मैं ने भेद नहीं भाखा।
आखिर मरणे पै वह उतरी फिर कुछ छांने नहीं राखा ॥ २२ ॥
स्त्री, हठ की परवाह रखती है औरों को वह नहीं करती।
मूल लड़ाई को है वनिता वे मतलब घर घर लड़ती।
चौथा हिस्सा देन शत्रु को मैंने अर्ज गुजारी थी।
राज वात वो नहीं मानी थी उल्टी हँसी उडारी थी ॥ २३ ॥
प्रत्यक्ष देखलो पृथो नाथ ! मेरे को संकट में डाला।
स्वारथ विचारी नारी सारी अजव इन्हों का है चाला।
लेती हृदय किन्तु देती ना पूरित कपट ठिगोरी है।
चंचल महा चालाक साफ करूं प्रवल पाप की पोरी है ॥ २४ ॥
जन्म केद मुझ को करवा के धन से आनन्द माना है।

– कहो सो करो –

– दोहा –

वीर प्रभु के चरण में - वन्दन हों शतवार।
पद्म शंख परिचय रचूं - सुनिये! धर कर प्यार ॥१॥

– तर्ज– राधेश्याम –

विश्व - विजेता वही पुरुष , जो कह के कर-दिखलाता है।
सुख, दुख, संपद, विपद अनेकों, सह कर नियम निभाता है ॥
धन्य वही इस धरा धाम पर, जन्म सफल कर जाता है।
समय समय पर लोगों को , वह सदा याद ही आता है ॥ १ ॥
एक, कहे पर करे न कुछ भी , बक बक थूक उडाता है।
औरों का अपवाद करे , नहिं भला किसी का चहाता है ॥
अजा-गल-स्थन-सम वह तो हा ! नर-तन वृथा गंवाता है।
तदपि मूढ ! अपने हि आपके , मुख से गुन को गाता है ॥ २ ॥
इस पर एक कथा सुनलीजे , आलस नींद उडाकर के।
सार बात को हृदयंगम कर, मन को वश में लाकर के ॥
वणिक एक था मोहनपुर का , दुखं दरिद्र से घबराया।
भटका देश विदेश बहुत पै पैसा एक नहीं पाया ॥ ३ ॥
हीन दीन दुख क्लीन म्लान मुख हुआ रु हिम्मत टूट गई।
चारों ओर निराशा छाई, पुण्य - दशा सब खूट गई ॥
फांसी खा मरना चाहा जब, सन्त एक गहर - वासी।
कहे मूढ ! इस आतम - घात से, मरकर तूं नरकों जासी । ४ ॥
भगवन् ! मैं तो दुखागार हूं, नहीं किसी का प्यारा हूं ॥
पशुवत् जीवन बीत रहा है, घर से हीन, अवारा हूं ॥

(

वीतक सभी बताया स्वामिन् । नहीं रखा आपसे छाना है ।
राजा हर्षानन्द होयकर उसको गले लगाया है ।
धन्यवाद है कोटि - कोटि तुज मेरा हृदय जगाया है ।। २५ ।।
कनक कामिनी का इस जग में सबसे भारी फन्दा है ।
उपर की लाली पै लाखों लोक हो रहे अन्धा है ।
अच्छा दिया इनाम उसीको राजा जोग रमाया है ।
दे धन स्त्री को कठियारा भी संयम को अपनाया है ।। २६ ।।
कठिन तपस्या करते दोनों आत्म ध्यान में लीन भये ।
मन को जिसने मारलिया फिर वैरी उसके कौन रहे ।
अक्लवन्दि का यही मजा जो अंतर की आंखें खोले ।
कर्म भर्म को मेट विश्व में समता का शर्बत घोले ।। २७ ।।
भेद विज्ञान जिन्होंने पाया परम धाम का राही है ।
मोक्षालय की मूल्यवान जग अमर जड़ी भी याही है ।
सतगुरु चरण शरण को पाके सदा नन्दी बन जाता है ।
भौतिकता का भूत भयानक कभी न आन सताता है ।। २८ ।।
केवल ढौंग काम नहीं आता यह तो ठिगाई ठाली है ।
स्वोदर पूरण को है वृत्ति हुंडो साफ हो जाली है ।
याते भव्यों भलो भावना भावो अवसर आला है ।
परमानन्द परम उपयोगी सम्यक् ज्ञान मतवाला है ।। २९ ।।
ऐसी अनूपम कथा श्रवण कर चेतो जल्दी से प्यारे ।
वार वार यह ऐसा मोखा मिले न गुरु यों ललकारे ।
देव गुरु सुध धर्म तत्व पर श्रद्धा पक्की बनवालो ।
जैनधर्म का मूल आज्ञामय वीर प्रभू के पथ चालो ।। ३० ।।
बडे वैरागी महा तपो धन श्री बुधमल गुरु गुण ग्राही ।
तासु चरण-रज मुनि मिश्रीमल कथा सरस यह है गाई ।
द्वीप नयन नभरासी वर्षे मधु शुकला नवमी आई ।
चारठाणे से आये विचरते हेमावास में सुखदाइ ।। ३१ ।।

इत्यलम्

सन्त कहे मैं सुखी बनादूँ, ज्योति जगाले जीवन की।
देव गुरु पै श्रद्धा दृढ़ कर, जिन-वानी रस पीवन को॥ ५॥
दिया हाथ में शंख उसी को, माँगेगा सो पावेगा।
देश, जाति अरु धर्म कार्य में, गर तूँ हाथ बढ़ावेगा॥
खाना पीना मौज उडाना, किन्तु पाप से बच जाना।
कभी न टोटा आयेगा जो सदुपयोग में लगवाना॥ ६॥
लेकर चला शहर इक आया, द्रव्य शंख से माँगा है।
धन का ढेर देख कर राजी-मन हो मारग लागा है॥
दर्जी से कपड़ा, सोनी से-जेवर सुन्दर बनवाया।
बन मद मस्त चढ़ा घोड़े पै, शहर देखना मनभाया॥ ७॥
बड़ी ठिगोरी, औगुन-ओरी, वैश्या ने ललचाया है।
दासी भेज उसे अपने ढिग, आदर से बुलवाया है।
हाव भाव अरु नृत्य गीत से, विषय फाँस में फाँसा है।
उसकी संगत करने से फिर, बचने की क्या आशा है॥ ८॥
दे मुद्रा नित शंख पाँच-सौ, भोगों में मसगूस बना।
मात तात स्त्री धर्म जाति को, भूल आक का फूल बना॥
मासान्तर वैश्या ने सोचा, द्रव्य कहाँ से लाता है।
इधर उधर नहिं जाता तोभी, धन का ढेर लगाता है॥ ९॥
एक रोज मन मोज खोज कर, बड़े प्रेम से पूछ लिया।
कामान्धी पागल बन उसने सच्चा भेद बताय दिया॥
अधिक नशा में फँसा देखि, वह सच्चा शंख चुरायलिया।
नकली रखा जेब में दुष्टा, पातर-प्रेम दिखाय दिया॥ १०॥
एक नहीं, लाखों इस फन्दे, फँस नर निज घर नष्ट किया।
रंग पतंग समान जान फिर, कैसे जुड़ता सभ्य जिया॥
प्रात शंख से मुद्रा माँगे, किन्तु कोडी मिली नहीं।
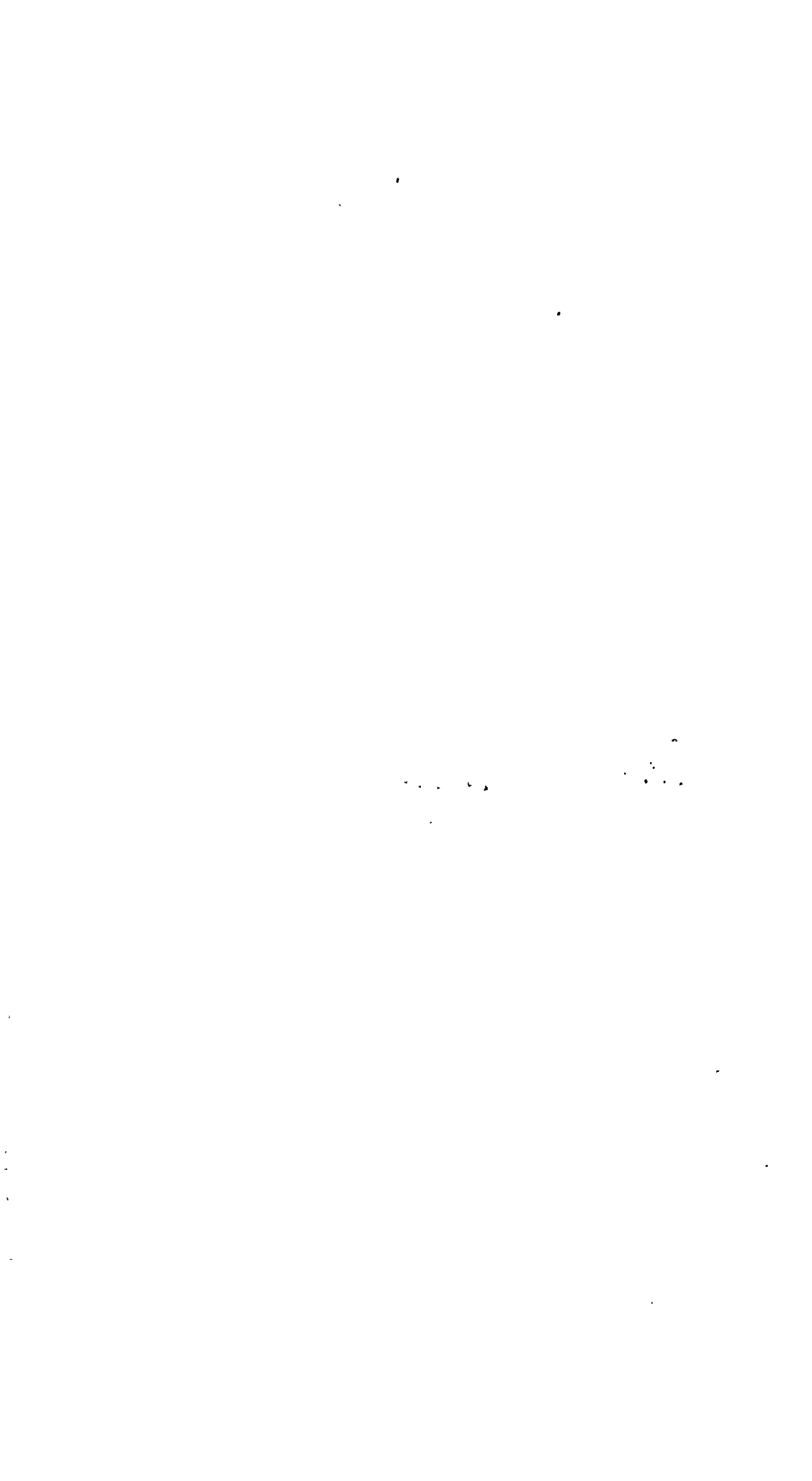
सत्य से संपत

— दोहा —

रघुपति टोडर इन्द्र पुनि, गिरि घर धर्म दयाल।
मान बुद्ध गुरु देव मम, आपो वचन रसाल ॥ १ ॥

ढाल १ ली ॥ तर्ज- ख्याल की० ॥

नहिं डिगे डिगायां ॥ टेर ॥

स्वर्गों रो मारग साचो बोलणो,
सत्य बोलणो है शिव, सुन्दर, नीती शास्त्र सुनाता।
कोटिक पाप धुलाता जी ॥ नहिं० ॥१॥
सत्य-नारायण चवड़े वाजे, नर, सुर, सुरपति, नरपति आदे, सादर शीश झुकावे।
मन धारचो सारो बन जावे, जन्म मरण मिट जावे जी ॥ नहिं० ॥२॥
सत्यवान के लीला लक्ष्मी, छप्पर फाड़ के आवे।
सातों भय को नाश करत है, आत्म-धर्म प्रकटावे जी ॥ नहिं० ॥३॥
वर्षा-योग से छोटे ग्राम में, मुनि द्वय कियो चौमासो।
निर्धन किन्तू धर्म-परायण, सेठ सोमचन्द खासो जी ॥ नहिं० ॥४॥
घर-नारी सुत तीनों प्राणी, एकान्तर तप धारी।
करे न्याय-युत स्वोदर पूरण, स्वावलम्बि, व्यवहारी जी ॥ नहिं० ॥५॥
सेवा भक्ती करे प्रेम से, पुनि करे धर्म-दलाली।
धर्म-रंग घर-घर में छायो, आत्म रहा उजवाली जी ॥ नहिं० ॥६॥
महा पापी, मिथ्या मति धारी, लोभीचन्द इक सेठ।
धूर्त-शिरोमणि, पर-धन-वंचक, पूंजी रयो समेट जी ॥ नहिं० ॥७॥
सोमचन्द को मग में मिलियो, लुच्चो लोभीचन्द।
धर्म, देव, गुरु की वो निन्दा,—करन लग्यो मतिमन्द जी ॥ नहिं० ॥८॥

(३

॥ वन्दा वन्दी का चरित्र ॥

– दोहा –

आदिनाथ को आदि कर, – वन्दन बारंबार।
उक्ति अहो ! उत्पातिका – पर विरचूं अधिकार ॥१॥
चारों वुद्धि में प्रबल, प्रथम इसी का स्थान।
चमत्कार पावे चतुर, वरणो श्री वृधमान ॥२॥

ढाल १ ली ॥ तर्ज– जगत गुरु तृशला - नन्दन वीर ॥

मगध देश-मांहे भलो जी, नन्दी - गाम उदार।
ठाकुर धीरजसेन है जी, चन्द्रावती भरतार ॥ १ ॥
मनुष्यनो है बुद्धी - बल सार ॥ टेर ॥
वसे तिहाँ गाथापती जी, लोभानन्दी एक।
मीठो बोलो ढोंग सूं जी, राखे धर्म री टेक ॥ म० ॥ २ ॥
ठाकुर आदे गाम में जी, मुखियो दियो बनाय।
सत्ता आई हाथ में जी, गुप्त करे अन्याय ॥ म० ॥ ३ ॥
पासो पड़तो देखने जी, लोगों से कहे एम।
यह देखो वन्दा किया जी, तुम में नहिं है फेम ॥ म० ॥ ४ ॥
निवल डरे, सब हाँ भरे जी, सबलों साथे नेह।
वन्दा रा डंका-वजे जी, जनता जाणे जेह ॥ म० ॥ ५ ॥
घोचा घाले न्यात में जी, खासो करे विगार।
पिण कोई बोले नहीं जी, पावे दुक्ख अपार ॥ म० ॥ ६ ॥
इक दिन जैनी श्राविका जी, वन्दी इसड़े नाम।
वन्दा ने वुलवायने जी, पाड़न लागो माम ॥ म० ॥ ७ ॥

सतवादी श्री सोमचन्द ने, धीरप सूँ समझाया।
क्यों करते हो कर्म - बन्ध यह, कित भुगतेला भाया जी ।। नहिं० ।।९।।
मुझे आप कुछ भी कह देवे, जिसकी नहिं दरकार।
धर्म, देव, गुरु की निन्दा को, सहन न करूँ लिमार जी ।। नहिं० १०।।
कर अन्याय द्रव्य तुम जोड़ा, फोड़ा सबने घालो।
ऐसे धन पै धोबा भर - भर, रेगू क्यों ना रालो जी ।। नहिं० ।।११।।
मुँह मच कोड़ गया लोभोचन्द, सोमचन्द घर आया।
भक्ति भाव युत ठाठ पाट से, चौमासा वीताया जी ।। नहिं० ।।१२।।
सारो गाँव हुवो है भेलो, पहुँचावन के तांई।
यथा शक्ति पचखाण किया है, 'मिश्री' सम सुखदाई जी ।। नहिं० ।।१३।।

– दोहा –

धन बिन जन धुतकार दे, मिले न मान छदाम।
धन बिन जन-जन दौड के, पग पग करे प्रणाम ।। १ ।।

ढाल २ जी ।। तर्ज– मून्दड़ी० ।।

वेगा आइजो हो वैरागी - पुरुषों ! तारवा रे।
म्हारा काम, क्रोध, मद, लोभ, ममत ने मारवा रे ।। टेर ।।
मीठो ज्ञानामृत नित पायो, सुन्दर शिव-मारग वतलायो,
साचो आतम रूप दिखायो, मिथ्या टारवा रे ।। वेगा० ।। १ ।।
करणी करड़ी ढोंग विनोरी, कहो कुण करसी होड इणोरी,
आशा सफल हुई है मनों री, जन्म सुधारवा रे ।। वेगा० ।। २ ।।
थांरे पक्षपात नहिं पेख्यो, सब पै एक भाव ही देख्यो,
ऐसो प्रेम-धर्म को पेंक्यो, विषय-वन वारवा रे ।। वेगा० ।। ३ ।।
हो निर्मोही मोहनगारा, निष्कामी 'पिन' कामनगारा,

कितो करो अन्याय थें जी, पर-भव को डर नांय।
प्रथमा ढ़ाले चेतजो जी, भलपन भजिये भाय ! ॥ म० ॥८॥

– दोहा –

बन्दो कहे इण गांम में, है किसकी मगदूर।
करे सामनो ताहि को, धसक मिलादूँ धूर ॥१॥

ढाल २ जी ॥ तर्ज–मोहनगारो रे० ॥

मत कर बन्दा रे, तूँ मिजाज इतना खोटा धन्धा रे ॥ मत० ॥टेर॥
केई होग्या ने केई हो-जासी, बन जोबन धन अन्धा रे।
पतो न लागो, गया कठीने, खाया गफन्दा रे ॥ मत० ॥ १ ॥
धीमो रह, धोरी क्यों भिड़के, खायो घणी वरिन्दा रे।
विना पाँख क्यों उड़े, उड़े है, खास परिन्दा रे ॥ मत० ॥ २ ॥
जो अब थारे मन में ह्वै तो, करजे मित्र ! चुरिन्दा रे।
कर-गुजरूँगी तेरे साथ में, नहीं टरिन्दा रे ॥ मत० ॥ ३ ॥
कहा करेगी, बोले बन्दो, मुझे करे शरमिन्दा रे।
मैं किसके नहीं सारे डरे-खुद सूरज चन्दा रे ॥ मत० ॥ ४ ॥
देख लेना डरने का दादा, अवसर आय लगन्दा रे।
डाकण ने दरियो नहि आडो, 'मिश्री' कहन्दा रे ॥ मत० ॥ ५ ॥

– दोहा –

तूँ जो नाव डुबोवसी, मैं देऊँगो तार।
ऐ घोड़ा मैदान है, लाखों रहूं न लार ॥ १ ॥

ढाल ३ जी ॥ तर्ज– म्हाने दोरो लागे जी० ॥

लाल पीलो ह्वै वन्दो जावे, घाट घणेरो घड़ता।

थांरा ख्याल जगत सूं न्यारा, दंभ विदारवा रे ॥ वेगा० ॥ ४ ॥
अमर शक्ति म्हांने बगशादो, आसूं, कहि मनड़ो विकशादो,
शान्ती को सन्देश सुनादो, मोद वधारवा रे ॥ वेगा० ॥ ५ ॥

– दोहा –

मुनिवर से मंगलीक सुन, जनता फिरी जिवार ।
सेठ सेठानी अरु तनय, व्रत धारयो चौहार ॥ १ ॥

ढाल ३ जी ॥ तर्ज– म्हांने दोरो लागे जी० ॥

गुरुजी आगे जावे जी क, गुरुजी आगे जावे जी क,
सेठ अकेलो साथे देखी, यूं फरमावे जी ॥ टेर ॥
दया पालो, अब सुनलो श्रावक, आगे नहीं लिजासों ।
हम तो रमते-राम कहीं पर, आसन जाय जमासों ॥ गु० ॥ १ ॥
सुण मंगलीक बैठो तरु छाया, आंसूं नयनों आया ।
भू खोदत वहां चरू धन पूरित, सोमचन्द लख पाया ॥ गु० ॥ २ ॥
होगा किसी का धन यहां डाटा, मुझे न इस से काम ।
धूल डाल, वहां से चल जल्दी, आया अपने धाम ॥ गु० ॥ ३ ॥
दिनभर ज्ञान ध्यान में तीनों, रहे खूब गलतान ।
संध्या को पौषध त्रय करके, भज रहे मन भगवान ॥ गु० ॥ ४ ॥
लोभीचंद की पास हवेली, सेठानी तस डाढे ।
पहर रात-गई तो भी जक ना, धन भरिया के खाडे ॥ गु० ॥ ५ ॥
फिरो भटकता रात दिवस ही, दुखी सभी परिवार ।
रात पड़ी तो भी विश्रान्ती, लेते नहीं लगार ॥ गु० ॥ ६ ॥
यो धन कोई साथ चलेगो, मन में टुक न विचार ।
कहे 'मिश्री' पापी नहिं माने, लाख करो उपचार ॥ गु० ॥ ७ ॥

पिण वन्दी रे अकल अगाड़ी, जरा हाल नहिं हिलता ॥ १ ॥
चतुरो ! चितसूं सुणलो रे, चतुरो ! चितसूं सुणलो रे।
बुद्धी को है चमत्कार, निज उर में धरलो रे ॥ टेर ॥
विणजारा रो हार हीरों रो, वन्दो गयो डकारी।
वो मांगे पिण वो नहिं देवे, थाक्यो कर लाचारी ॥ च० ॥ २ ॥
वन्दी विलखो लखि नायक ने, सारी बात ली पूछी।
अकल बताई विणजारा ने, दीवी कुबुध री कूंची ॥ च० ॥ ३ ॥
विणजारो ठाकुर पै पोंच्यो, सारी बात सुणाई।
वन्दो माल खावे परवारा, आप सुणो हो नांही ॥ च० ॥ ४ ॥
इण सूं गरीब मारिया जावे, बदनामी व्है थांरी।
है वन्दी री इण में गवाही, साच सुणाई सारी ॥ च० ॥ ५ ॥
वन्दो को ठकुराणी पासे, शिविका भेज बुलाई।
आई सा युक्ती बतला के, निज घर वापिस आई ॥ च० ॥ ६ ॥
प्रात-होत ठाकुर वन्दे को, बुलवायो हुलसाई।
खुश-कर लीनो ठाकुर उसको, वातों में बिलमाई ॥ च० ॥ ७ ॥
बिच में ठाकुर कहे लाडीजी, हठ लीनो है भारी।
हीरां-हन्दो हार घड़ादो, वन्दा कहो विचारी ॥ च० ॥ ८ ॥
ताजो हार दिखा कोइ लाई, व्हेड़ो लेऊं घड़ाई।
वन्दो री आंटी में वन्दो, टुक समज्यो है नांही ॥ च० ॥ ९ ॥

— दोहा —

काल दिखासूं ठाकुरो ! ,हीरों-हन्दो हार।
परे गयो होते फजर, आयो सभा मझार ॥ १ ॥

ढाल ४ थी ॥ तर्ज— नवीन रसिया० ॥

दीनो ठाकुरसा रे हाथ, अनोखो हीरों-हंदो हार ॥ टेर ॥

– दोहा –

पड़्यो सेठ तब पिलँग पर, करवट लेत अथाय ।
तदपि नींद आवे नहिं, तृष्णा वश दुखियाय ।। १ ।।

ढाल ४ थी ।। तर्ज– जिनवर वांदूला० ।।

सोमचन्द तिन ही समय, कही प्रात की बात, सुत अरु नारी ने।
मैं नहीं लायो जान अन्य की, रज डाली निज हाथ, आयो चाली ने ।।१।।
भलो कियो भाभोसा ! भोले, जो ले आता साथ, झोलो भर कर के।
मैं नहिं राखण देतो थांने, यही राय मुज मात, कहूं कर[१] जोरी[२] के ।। २ ।।
लोभी सुण ललचावियो, कांई लेय पुत्र ने लेर, आयो वन मांही।
दोय दोइ शिर तोक ने, लाया अपने घेर, मन में हर्षाई ।। ३ ।।
कमर, शीश, गर्दन बोझा सूं, वे दोनों दुख-पात, पसीनो टपकाई।
कांइ लाया, बोली सेठानी, डाल्यो चरू में हाथ, उत सुत-वधु आई ।। ४ ।।
पनड़्यो वाला चिप्या चपाचप, दुहुं मेल्यो बोबाड़, सेठ सुत दुहुं त्यांई।
जोवतड़ो रे पिण चपिया, वेदन थई बखाड़, चारों तन तांई ।। ५ ।।

– दोहा –

हाय हाय हाको हुवो, चारों रो चौफेर।
कंई हुओ कहि ना सके, फस्यो निनाणूं-फेर ।। १ ।।

ढाल ५ मी ।। तर्ज– बगशी जी रा गीत री० ।।

भाग्य विन कोइ नहिं पावे रे, भाग्य विन कोइ नहीं पावे,
भाग्योदय होने पर लक्ष्मी छपर-फाड़ आवे ।। टेर ।।
हाय सोमलो कैसी कुवद की, बड़ो धर्म-ढोंगी । अरे वो०।
पाछो इणसूं लेलूं बदलो, कर जुगती जोगी ।।भाग्य०।।१।।

उसी समय विणजारो बोल्यो, छिपियो सो व्है चौड़े ।
ओ तो हार हमारो स्वामी !, नहीं देवे,धन बोरे ॥ दी० ॥१॥
ठाकुर कहे ठहरजा भाई !, बन्दी को बुलवाऊँ ।
साच झूठ का आज फैसला, जाहिर में करवाऊँ ॥ दी० ॥२॥
बन्दी आय कहे ठाकुरसा ! , बन्दो करे सो थोड़ी ।
रोड़ी रो तो बाग बनादे , बाग बनादे रोड़ी ॥ दी० ॥३॥
एक आप पै आकर रोयो , छांने रोवे हजार ।
'पिण' सुणे कौन? अरु कौन सुणावे,इणरो शहर बजार ।दी.॥४॥
कहो बन्दा! क्यों गोल-माल है,नहीं हथखण्डा चलसी ।
सत्य सुनादो, देख, अन्यथा, गंगाराम शिर-पडसी ॥ दी० ॥५॥
म्हारो हार खावणो च्हावो, जिणसूँ गूँथ्यो जाल ।
मैं भी बन्दो नहि चूकुला, बोलूँ हेलो पार ॥ दी० ॥६॥
जेल बन्द उडतों सच बोल्यो, ठाकुर गो रीसाय ।
लिजा राजगृह धरो जेल में, बन्दी बोली आय ॥ दी० ॥७॥
कहो बन्दा ! अब कैसे करना, सो कहे मात! बचाय ।
सीधो बना, सूंस दिलवा के, दीनो तुरत छुडाय ॥ दी० ॥८॥
सारा सराही बुद्धि उणरी , विणजारो सुख पायो ।
यो बुद्धि रो चमत्कार है, मिश्रीमल मुनि गायो ॥ दी० ॥९॥
बुद्धि सूँ सब सुद्धि आवे , जाणे तन्त की बात ।
गाँव पिच्याक घड़ी में जोड़्यो, ले बुध-गुरु शिर हाथ ।।दी०॥१०॥
संवत दोय - सहस सत्ताइस, तिमिर पक्ष आषाढ़ ।
भृगु अष्टमि 'मिश्री' कहे मित्रो! ,रखो धर्म को गाढ़ ।.दी॥११॥

इति वन्दा वन्दी का चरित्र संपूर्ण ॥ शुभं भवतु ॥

इसी सोच के सोमचन्द की, रातों छत तोड़ी, अरे उण रातों० ।
दोनों चरू उडेल दिया है, कर माथा-फोड़ो ॥ भाग्य० ॥ २ ॥
कान लगाकर सूतो लोभी, रोनो नहि सुणियो,अरे उण रोनो० ।
प्रात होत धन देख सोमजी,अपणो सिर धुणियों ॥ भाग्य० ॥ ३ ॥
देखो छप्पर-फाड़ आयगो, धन घर के मांही, अरे ओ धन० ।
अब इसमें गलती क्या अपनी, सोच लेवो भाई ॥ भाग्य० ॥ ४ ॥
सीधो सदन सेठजी लेकर,कियो निवास निरुप, वहाँ पै कियो० ।
सारा गांव वो सेवा सारे, आदर देवे भूप ॥ भाग्य० ॥ ५ ॥
विणज बढ्यो अरु नेप वढ़गो, हुन्नर वढ्यो अपार,देश में हुन्नर० ।
सब को देवे सेठ सहायता, दानी वड़ो दयाल ॥ भाग्य० ॥ ६ ॥
कल्प वृक्ष यह धर्म देखलो, फल्यो सेठ रे खूब, देखलो फल्यो० ।
ज्यूं खरचे त्यूं वढ़े सवायो, लक्ष्मी लूंवा-लूंव ॥ भाग्य० ॥ ७ ॥
जलधर वर्षत यथा जवासो, कालो पड़े कमाल,अरे वो कालो० ।
लोभीचंद त्यूं विलखो होवे, सोमचन्द को न्हाल ॥ भाग्य. ॥ ८ ॥
धर्म-ध्वजा लहरावे पुर में, पापी को नहि चैन,अरे उण पापी० ।
'मिश्री मुनि' कहे जो सुख च्हावो, शुद्ध मन पालो जैन ॥भा० ॥९॥

— दोहा —

छोटो मोटो पाप को, लोभी रे लागो ।
लागो रह्यो न सांतरो, छोटो दिन आ-गो ॥१॥

ढाल ६ ठी ॥ तर्ज– जो आनन्द मंगल चावो रे० ॥

जब घड़ा पाप का फूटे रे, तब देवे कौन सहाय ॥ टेर ॥
चोरी का माल चुराया, जो लोभीचन्द घर पाया ।
कस्टम भी नहीं चुकाया रे, पकड़ा [illegible] ॥जब०॥१॥

॥ आज्ञाकारी पुत्र ॥

कथा सुनाई तर्ज अनेकों, देश मेवाड़ के मांही है लो।
राजाजी को आयो करेड़ो, जासों रायपुर भाई है लो ॥तज०॥३॥
संवत दोय-हजार छाइसा, नवमी पौष अंधियारो है लो।
वार भृगु दिनमान सु-योगे, धर्म-कथा विस्तारी है लो ॥तज०॥४॥
गच्छाधिप श्री रघुपति-स्वामी, पाट परम्परा चाले है लो।
सद्गुरु श्री बुधमल महाराजा, परचा पूरण वाले है लो ॥तज०॥५॥
विनयी तस 'मुनि मिश्रि' पयं पै, धर्म कियां जय थावे है लो।
रूप, सुकन कथनाते जोड़ी, भव्य जनों रे मन-भावे है लो ॥तज०॥६॥
धर्म-रयण है चिन्तामणि-सो, कामदुगा पिण जानो है लो।
आगम-वाणी के अनुसारे, श्रद्धा पक्को आनो है लो ॥तज०॥७॥

॥ श्री ॥

॥ आज्ञाकारी पुत्र ॥

तर्ज— ख्याल की……

गणपति गौतम प्रथम समरि के, विरचूं सरस व्याख्यान ।
पिता भक्त होते हैं कैसे ? सुनो ! सभी धर ध्यान जी ॥ १ ॥
वह पुत्र भला है, आज्ञा पाले जो अपने बाप की ॥ टेर ॥
मौर्य वंश का प्रसिद्ध राजा, था अशोक सम्राट ।
जिसके प्यारी थी दो राणी, प्रेम भरी गह घाट जी ॥वह०॥२॥
बड़ी राणी का सुन्दर बेटा, था कुणाल गुनवान ।
भव्य ललाट सौम्य अति मुखड़ा, पूरण चन्द्र समान जी ॥वह०॥३॥
राज्य कार्य में दक्ष वीरवर, धर्म परायण धीर ।
पितृ भक्त रत नियमों पर, पर वनिता का वीर जी ॥वह०॥४॥
छोटी राणी छोनी पत को, तिष्य रक्षिका नाम ।
देखो कुंवर भई विषयातुर, चित्त चंचल नहीं ठाम जी ॥वह०॥५॥
नमन करन लघु माताजी को, आये राज कुमार ।
समय पाय निर्लज बन राणी, बोली धर कर प्यार जी ॥वह०॥६॥
अये मन मोहन राज्य कुंवर तूं, काम देव अवतार ।
अणियाली आंखड़्यों ऊपर, मैं जावूं बलिहार जी ॥वह०॥७॥
विनती मान प्रेम रस प्याला, पिला मुझे धर प्यार ।
प्राणोधन मेरी मैं तेरी, बनी रहूं घरणार जी ॥वह०॥८॥
भाग योग से अवसर पाया, मत कर अब तूं जेज जो ।
विरहानल से जल रही सारे, हद बिन उमट्यो हेज जो ॥वह०॥९॥
राजकुंवर कहे माजीसा! क्या, अनुचित बात निकाली ।

नहीं आदर्श इसमें अपना, सूरत लो सम्भाली जी ।।वह०।।१०।।
दोनों भव दूषित हो जिससे, उस मारग क्यों जाना ।
प्राण आन अरु खानदानी में, वट्टा नहीं लगाना जी ।।वह०।।११।।
मैं संतान आपका सच्चा, आज्ञा पालन वाला ।
यह आसा मुझसे मत रखना, तजो विकल पन ज्वालाजी ।वह०।१२।।
राणी कहे है किसका बैटा, झूंठी छोड़ जिकाल ।
तूठी हूं मैं चित्रावल्ली, रूठी काल कराल जी ।।वह०।।१३।।
शिर धुन के वो राजकुंवर जब, चला ताम ततकाल ।
रीसाणी राणी यों वाणी, मुख से दिवी निकाल जी ।।वह०।।१४।।
रखना याद करूं क्या तुज में, नाही बच्चों का खेल ।
करे प्रतिक्षा अब उस दिन की, मिले कौन सा मेल जी ।।वह०।।१५।।
इतेक तक्षशिला की परजा, कर उठी विद्रोह ।
दमन करन राजाजी चढ़िया, लघु राणी कहे सोह जी ।।वह०।।१६।।
आप अंदाता क्या उत जावे, भेजो कुंवर कुणाल ।
है समर्थ वो सवी कार्य में, समझो मति मृणाल जी ।।वह०।।१७।।
कपट चाल नहीं जानी राजा, भेजा कुंवर को तत्र ।
गया कुंवर करके चतुराई, शांति करी सवत्रं जी ।।वह०।।१८।।
समाचार राजा जो सुनके, हो गये हर्षानन्द ।
तक्षशिला का सभी प्रशासन, करो पुत्र सानन्द जी ।।वह०।।१९।।
इधर भूप को उदर व्यथा ने, पीडित कीना भारी ।
कर उपचार थकित सव हो गये, मिटी न तस वेमारी जी।वह
तिष्य रक्षिका कर उपाय इक, रोग मिटाया सारा ।
जिससे राजा उन राणी पर मुग्ध भये अनपारा जी ।।वह
कर षड़यन्त्र लिखा परवाना, मुद्रा लगादी लाने ।
हस्ताक्षर राजा का लीना, राजा भेद न जाणे जी ।।वह

॥ बन्दा बन्दी का चरित्र ॥

मुख्य सचिव था तक्षशिला का, जिस पर पत्र पठाया।
कुंवर कुणाल की आंखें निकालो, राज्य द्रोही बतलाया जी ॥वह०॥२३॥
तक्षशिला से निष्कासित कर-वापिस शीघ्र जताना।
अगर विलम्ब किया इसमें तो, दंड तुमे भी पाना जी ॥वह०॥२४॥
मन्त्री सोचा यह क्या सच है? बिना मूल की बात।
बिन निर्णय आज्ञा दे देना, जल में आग दिखात जी ॥वह०॥२५॥
कुंवर अगाड़ी मन्त्री सारी, कही हकिकत जाय।
कहे कुणाल स्वीकृत है म्हाने, करिये ज्यों दिल च्हाय जी ॥वह०॥२६॥
सचिव कहे मुज से नहीं होता, इस प्रकार अन्याय।
अपने हाथों आंखों फोड़ो, पितु आज्ञा अपनाय जी ॥वह०॥२७॥
पति व्रता कुंवराणी कंचना, हठकर साथे हाली।
दोनों प्राणी फिरते वन वन, डगर डगर दुःख झाली जी ॥वह०॥२८॥
पीछा पत्र दिया राजा को, राणी बीच में लीना।
राजाजी को पता न किंचित, राणी जुल्म यह कीना जी ॥वह०॥२९॥
इधर गाम पुर नगर शहर में, दंपति भमता जावे।
मंजुल कंठ हृदय हर गायन, सुन जनता हर्षावे जी ॥वह०॥३०॥
[illegible] उसको, फिकर जरा नहीं आणे।
आया घूमता पाटलीपुर में, राजा राग पिछाणे जी ॥वह०॥३१॥
सभा बीच में शीघ्र बुलाया, सुन गावे सुख संगीत।
राजा पूछे नाम बता दे, परिचय [illegible] पुनीत जी ॥वह०॥३२॥
अब कुणाल ने हाल सुनाया, राजा रोयो भारी।
[illegible] ॥वह०॥३३॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]

नहीं आदर्श इसिमें अपना, सूरत लो सम्भाली जी ॥वह०॥१०॥
दोनों भव दूषित हो जिससे, उस मारग क्यों जाना।
प्राण आन अरु खानदानी में, वट्टा नहीं लगाना जी ॥वह०॥११॥
मैं संतान आपका सच्चा, आज्ञा पालन वाला।
यह आसा मुझसे मत रखना, तजो विकल पन ज्वालाजी ।वह०।१२॥
राणी कहे है किसका बैटा, झूंठी छोड़ जिकाल।
तूठी हूं मैं चित्रावल्ली, रूठी काल कराल जी ॥वह०॥१३॥
शिर धुन के वो राजकुँवर जब, चला ताम ततकाल।
रीसाणी राणी यों वाणो, मुख से दिवो निकाल जी ॥वह०॥१४॥
रखना याद करूँ क्या तुज में, नाही बच्चों का खेल।
करे प्रतिक्षा अब उस दिन की, मिले कौन सा मेल जो ॥वह०॥१५॥
इतेक तक्षशिला की परजा, कर उठी विद्रोह।
दमन करन राजाजी चढ़िया, लघु राणी कहे सोह जो ॥वह०॥१६॥
आप अंदाता क्या उत जावे, भेजो कुंवर कुणाल।
है समर्थ वो सबी कार्य में, समझो मति मृणाल जो ॥वह०॥१७॥
कपट चाल नहीं जानी राजा, भेजा कुंवर को तत्र।
गया कुंवर करके चतुराई, शांति करी सवर्त्र जी ॥वह०॥१८॥
समाचार राजा जो सुनके, हो गये हर्षानन्द।
तक्षशिला का सभी प्रशासन, करो पुत्र सानन्द जी ॥वह०॥१९॥
इधर भूप को उदर व्यथा ने, पीडित कीना भारी।
कर उपचार थक्ति सब हो गये, मिटी न तस वेमारी जी॥वह०।२०॥
तिष्य रक्षिका कर उपाय इक, रोग मिटाया सारा।
जिससे राजा उन राणी पर मुग्ध भये अनपारा जी ॥वह०॥२१॥
कर षड़यन्त्र लिखा परवाना, मुद्रा लगादी लाने।
हस्ताक्षर राजा का लीना, राजा भेद न जाणे जी ॥वह०॥२२॥

मुख्य सचिव था तक्षशिला का, जिस पर पत्र पठाया ।
कुंवर कुणाल की आंखें निकालो, राज्य द्रोही बतलाया जी ॥वह.॥२३॥
तक्षशिला से निष्कासित कर-वापिस शीघ्र जताना ।
अगर विलम्ब किया इसमें तो, दंड तुमे भी पाना जी ॥वह०॥२४॥
मन्त्री शोचा यह क्या सच है ? बिना मूल की वात ।
विन निर्णय आज्ञा दे देना, जल में आग दिखात जी ॥वह०॥२५॥
कुवंर अगाड़ी मन्त्री सारी, कहो हकिकत जाय ।
कहे कुणाल स्वीकृत है म्हाने, करिये ज्यों दिल च्हाय जी ॥वह०॥२६॥
सचिव कहै मुज से नहीं होता, इस प्रकार अन्याय ।
अपने हाथों आंखों फोड़ी, पितु आज्ञा अपनाय जी ॥वह०॥२७॥
पति व्रता कुंवराणी कंचना, हठकर साथे हाली ।
दोनों प्राणी फिरते वन वन, डगर डगर दुःख झाली जी ॥वह०॥२८॥
पीछा पत्र दिया राजा को, राणी बीच में लीना ।
राजाजी को पता न किंचित, राणी जुलम यह कीना जी ॥वह०॥२९॥
इधर गाम पुर नगर शहर में, दंपति भमता जावे ।
मंजुल कंठ हृदय हर गायन, सुन जनता हर्षावे जी ॥वह०॥३०॥
अंदर आंख उघडगी उसको, फिकर जरा नहीं आणे ।
आया घूमता पाटलीपुर में, राजा राग पिछाणे जी ॥वह०॥३१॥
सभा बीच में शीघ्र बुलाया, खुश भये सुण संगीत ।
राजा पूछे नाम बता दे, परिचय खास पुनीत जी ॥वह०॥३२॥
जब कुणाल ने हाल सुनाया, राजा कोप्यो भारी ।
तिष्य रक्षिका की हग काढ़ी - करदो देश के बारी जी ॥वह०॥३३॥
सुण कुणाल कहे मेरी माता, भूल करो अज्ञात ।
ऐसा दंड उसे ना दीजे, मानो मेरे नाथ जी ॥वह०॥३४॥
सभी जनों ने करी प्रशंसा, कैसा उत्तम प्राणी ।

खातर कीनी खूब राजवी, तूं प्यारी पट नार।
आज परीक्षा हो गई सरे, पंडित रो उपकार जी ।।नृप०।।३६।।
राज करे सुख से रढ़ियालो, एक दिन चढ़ तोखार।
वन खेलत इक अजब तमासो, नरपति लियो निहार जी ।।नृप०।।३७।।
वासग, नाग री नागणी सरे, गून्द लीया अहि संग।
भोग भोगवे वड़ तले सरे, नृप ने छायो रंग जी ।।नृप०।।३८।।
हण्टर दो नागण रे मारो, भूप महल में आयो।
नागण प्रजली जाय वासग को, सारो हाल सुनायो जी ।।नृप०।।३६।
अति क्रोध में आयो वासग, कहे तज फिकर तमाम।
आज रात राजा को मारूँ, छेड़्यो मुझे अलाम जी ।।नृप०।।४०।
नृप राणी सूती दिन महलां, सुपनें बीतक सारो।
जाय कह्यो राजा ने झटपट, सुण नृप कियो बिचारो जी ।।नृप०।।४१।
वासग नाग आप पर कोप्यो, आसी मारन अध रात।
नागण के कथनान्तर ऐसा, बन गया है जगनाथ जी ।।नृप०।।४२।
सुण राजा मन सोचियो सरे, भलो कियो व्है भूण्डो।
वासग नाग अकल को आंधो, आलोच्यो नहीं ऊण्डो जी ।।नृप०।।४३।
राजा मन में सोचियो सरे, पण्डित हुंदी वाय।
दो, तो सांचो निवड़गो सरे, तोजी लूं अजमाय जी ।।नृप०।।४४।
तीजी बात वैरी ने आदर, सार देवणी दाखी।
काम पड़्यो अजमावण को अब, मैं क्यूं राखूं बाकी जी ।।नृप०।।४५।
वासग की वंबी से लेकर, अपना ढ़ोल्या तांई।
फूल बिछाया अन्तर छिड़क्या, गायक दिया विठाई जी ।।नृप०।।४६।
दूध ओटायो मिष्ट पदारथ, केशर, एलची वारो।
भर-भर स्वर्ण कटोरा धरिया, स्वागत रच्यो उणारो जी ।।नृप०।।४७।
संध्या होत नृप पटराणी संग, ढ़ोल्ये वैठ्यो जाय।
इत वासग निकल्यो वंबी से, आई सुगन्ध सवाय जी ।।नृप०।।४८।

नहीं आदर्श इसिमें अपना, सूरत लो सम्भाली जी ।।वह०।।१०।।
दोनों भव दूषित हो जिससे, उस मारग क्यों जाना ।
प्राण आन अरु खानदानी में, वट्टा नहीं लगाना जी ।।वह०।।११।।
मैं संतान आपका सच्चा, आज्ञा पालन वाला ।
यह आसा मुझसे मत रखना, तजो विकल पन ज्वालाजी ।वह०।१२।।
राणी कहे है किसका बैटा, झूंठी छोड़ जिकाल ।
तूठी हूं मैं चित्रावल्ली, रूठी काल कराल जी ।।वह०।।१३।।
शिर धुन के वो राजकुँवर जब, चला ताम ततकाल ।
रीसाणी राणी यों वाणो, मुख से दिवी निकाल जी ।।वह०।।१४।।
रखना याद करूँ क्या तुज में, नाही बच्चों का खेल ।
करे प्रतिक्षा अब उस दिन की, मिले कौन सा मेल जी ।।वह०।।१५।।
इतेक तक्षशिला की परजा, कर उठी विद्रोह ।
दमन करन राजाजी चढ़िया, लघु राणी कहे सोह जी ।।वह०।।१६।।
आप अंदाता क्या उत जावे, भेजो कुँवर कुणाल ।
है समर्थ वो सबी कार्य में, समझो मति मृणाल जी ।।वह०।।१७।।
कपट चाल नहीं जानी राजा, भेजा कुँवर को तत्र ।
गया कुँवर करके चतुराई, शांति करी सवत्रं जी ।।वह०।।१८।।
समाचार राजा जो सुनके, हो गये हर्षानन्द ।
तक्षशिला का सभी प्रशासन, करो पुत्र सानन्द जी ।।वह०।।१६।।
इधर भूप को उदर व्यथा ने, पीडित कीना भारी ।
कर उपचार थकित सव हो गये, मिटी न तस वेमारी जी।वह०।२०।।
तिष्य रक्षिका कर उपाय इक, रोग मिटाया सारा ।
जिससे राजा उन राणी पर मुग्ध भये अनपारा जी ।।वह०।।२१।।
कर षड़यन्त्र लिखा परवाना, मुद्रा लगादी लाने ।
हस्ताक्षर राजा का लीना, राजा भेद न जाणे जी ।।वह०।।२२।।

दूध पियो है मधुर गंध से, मस्त भयो अहि राज।
पिनिहारी पूँगी पर सुनतो, क्रोध गयो सब भाज जी ॥ नृप० ॥ ४९ ॥
मन्थर चाल मगन पय पीतो, ठेट ढोलिया पास।
आवो वासग राज भूपती, स्वागत - स्वागत खास जी ॥ नृप० ॥ ५० ॥
क्यों नृप नागण को संताई, नृप वा बात सुनाई।
खुश होकर मणि दे महिपत को, गो निज स्थान सिधाई ॥ नृप०॥ ५१ ॥
तीन शिखामण साँची निवड़ी, अब चौथी रो सार।
सुन लेना भव्यों भल भावे, है सुन्दर अधिकार जी ॥ नृप० ॥ ५२ ॥
एक दिन राज्य - सभा में राजा, न्याय चुकावे सागे।
आयो एक पथिक उत चाली, नृप के चरणे लागे जी ॥ नृप० ॥ ५३ ॥
आय गई है अब नृप तेरो, कही इतनी वो चाले।
बोलायो पाछो नहीं आयो, राजा के उर शाले जी ॥ नृप० ॥५४ ॥
दिन भर बीत गयो चित वंतो, राते सूतो महेल।
अर्ध-रयण नृप अर्ध नींद में, परचो पायो पहेल जी ॥ नृप० ॥ ५५ ॥
वर्षा वर्ष्यों बाद में सरे, सरिता पूर सवाई।
फेंकारो फटके सा बोली, राणी सा सुण पाई जी ॥ नृप० ॥ ५६ ॥
उठ गई राणी सरिता पे, फेंकारी स्वर साथ।
छाने सेक चल्यो छलकर के, अहिपुर केरो नाथ जी ॥ नृप० ॥ ५७ ॥
फेंकारी को कथन प्रयोजन ; शव, तिरतो यो जावे।
वाम जंघ से रत्न चार लो, फिर हम उनको खावे जी ॥ नृप० ॥ ५८ ॥
जन्म जात राणी भई सरे, दीना वस्त्र उतार।
जल तिर, शव ला वाहिर डारचो, रत्न निकालन बार जी ॥ नृप०५९ ॥
दांतों से वा जंघ चीर कर, रत्न निकाल्या सागी।
सोचे भूप जीवती डाकिन, भय लाई गयो भागो जी ॥ नृप० ॥ ६० ॥
राणी स्नान कर कपड़ा पहरी, शव फेंक्यो स्यारी पै।
आय गई निज महल में सरे, रत्न बांध्या सारी पै जो ॥ नृप० ॥ ६१ ॥

मूलदेव - चरित्र

सभा, प्रातः सब जन के सन्मुख, नरपति यों फरमाई।
राणी जीवती डाकिनी सरे, दो शूली पधराई जी ॥ नृप० ॥ ६२ ॥
हक्का, बक्का सब होगया सरे, अन होनी नृप करता।
है निर्दोषण महाराणी जो, व्यर्थ व्हेम क्यों धरता जी ॥ नृप० ॥ ६३ ॥
माफ करो मोटा महाराजा, आ कुण बात जिलाई।
खाजा-सम राणी सा उज्वल, दोष रती भर नाई जी ॥ नृप० ॥ ६४ ॥
अरे मूर्खों कोण सिखावे, निजरों रात निहाली।
और कोई पड़पंच करो मत, बला, देवो झट टालो जी ॥ नृप० ॥ ६५ ॥
हाको होगयो शहर में सरे, दास्यां सुनकर आई।
अरे बाईसा जुलम हो गयो, रोवतड़ी सुनवाई जी ॥ नृप० ॥ ६६ ॥
मतना रोवो छोरियां सरे, हुई-हुई सब देखो।
फिकर नहीं इण बातरो सरे, इण घर ओहिज लेखो जी ॥ नृप० ॥ ६७ ॥
खलक, मुलक सब देखण आयो, हस्त वदन वा राणी।
शूलो कानी जाय रया है, जनता मन में जाणी जो ॥ नृप० ॥ ६८ ॥
मरणा रो डर है न रती भर, कितनी करड़ी छाती।
डाकण, भूतण है न शिकोतर, उत्तम इणरी जाती जी ॥ नृप० ॥ ६९ ॥
राजा, राज्य मुसद्दी साथे, शूली पासे आया।
इतने में इक काग बोलियो, राणी हास्य न माया जी ॥ नृप० ॥ ७० ॥
हंसती देख राणी ने मंत्री, नृप को सेण कराई।
इण हंसना में भेद अवश्य है, सांच कहूं निर नाई जी ॥ नृप० ॥ ७१ ॥
चौथी शिक्षा भूप ध्यान में, आय गई तिणवार।
अजमालों अब बात माय ने, एक विचार ही सार जी ॥ नृप० ॥ ७२ ॥
क्यों हंसी मंत्री जा पूछो, पास पहुंच परधान।
महाराणी सा किण विध हंसिया, पूछे है राजान जी ॥ नृप० ॥ ७३ ॥
राणी कहे सुणो मंत्रीश्वर, बोली स्यालनी राते।
तस कथनानुसार करन थी, शूली मिल रही ताते जी ॥ नृप० ॥ ७४ ॥

हाथ जोड़कर माफी मांगी, पावो पड़ी तब राणी जी ॥वह०॥३५॥
तिष्य रक्षिता कर सुरसा निध, पुनरपि आंख सुधारी।
धर्म प्रभाव प्रजा नें जाना, पितु आज्ञा सुख कारी जी ॥वह०॥३६॥
स्वारथ वस हो अनरथ ऐसे, हो रहे इस संसार।
आज्ञा ले पितु मात से, बोधी वन विहार जी ॥वह०॥३७॥
दंपति मन से तत्व बोध ले, कीना उग्र प्रचार।
परम बोध में लीन हो गये, आतम रूप निहार जी ॥वह०॥३८॥
बोध ग्रंथ में कथा पढी सो, निर्मित एक ही राग।
कुणाल कुवर आख्यान बनाया, सुनत लहै सौभाग जी ॥वह०॥३९॥
ऐसा भक्त पुत्र हो जिसके, पिता परम पुनवान।
जिसके अधम संतति होती, लेवो पाप फल मान जी ॥वह०॥४०॥
पुन्य कार्य में पाप बताकर, जो पुन में दे रोडा।
वह अज्ञानी जीव है सरे, भव २ पावे फोडा जी ॥वह०॥४१॥
त्रयोदश गुणस्थानक तांइ, पुन्य सहायता देता।
साधू केवली चक्री जिनपद, पुनवानी से लेता जी ॥वह०॥४२॥
चैत्र शुक्ल प्रतिपद मंगल दिन, दो हजार सतवीश।
एक घड़ी में निर्मित्त कीनो, सांडेराव जगीश जी ॥वह०॥४३॥
मिकरू सु मवि खट ठाणेसु, कर रहे धर्म प्रचार।
मरुधर मुनि मण्डल नित विचरे, मरुधर में जयकार जी ॥वह०॥४४॥
श्री रघुपति गच्छानुयायी, बुध शिष मिश्री माल।
सुकन कथन सु एक राग में, जोडो ढाल टकशाल जी ॥वह०॥४५॥

॥ इत्यलम् ॥

अब बोल्यो है काग आन के, इण सु ँ आगई हाँसी ।
अरे वीरा फिर क्या करासी, नृप ने सचिव प्रकाशो जो ।। नृप० ।। ७५ ।।
नृप पूछे कांई कह्यौ स्यालनी, मैं कुछ समझा नाई ।
मूर्दो खाती देख तेरे को, डाकिन मैं ठहराई जो ।। नृप० ।। ७६ ।।
ऐसी बात नहीं अलवेश्वर, रत्न, चोर मैं काढचा ।
पल्ला से खोली दिखलाया, आप कलंक यह चाढ़चा जो ।। नृप० ।। ७७ ।।
वे विश्वास और बतलाऊँ, वायस, वाणी और
सात कड़ाव भरा है धन से, इन शूलो को ठौर जो ।। नृप० ।। ७८ ।।
हुकम लगा नृप भू, खोदाई, प्रत्यक्ष लिया निधान ।
धन का पार रहा नहीं उनके, राणी पुण्य प्रमाण जो ।। नृप० ।। ७९ ।।
राजा माफो मांगला सरे, राणी से धर राग ।
ठाट-पाट सु ँ लाया महलां, बधियो जग सौभाग जो ।। नृप० ।। ८० ।।
क्षीर, नीर - वत प्रीत बढ़ी है, बढ़ियों धर्म प्रचार ।
आय गई पुण्यवानी चढ़ती, पंथो बात विचार जो ।। नृप० ।। ८१ ।।
चारों शिखामण कागज केरी, राजा रे गुण आई ।
भगवत शिक्षा सुणो भाव सु ँ, कूमी रहे तस कांई जो ।। नृप० ।। ८२ ।।
मिथ्या भ्रम मिटे नहीं जो लो, तो लो समकित नाई ।
होय यथारथ शर्दना सरे, आतम - भान सुझाई जो ।। नृप० ।। ८३ ।।
राजा, राणी प्रभु बचनों पे, पूर्ण आस्था लाया ।
कालान्ते संयम ले अनशन, करके स्वर्ग सिधाया जो ।। नृप० ।। ८४ ।।
कथा पुराणी सुणो सुणाई, मैंने रची यह ढाल ।
रूप, सुकन कथना सु ँ भाई, ख्याल राग टकसाल जो ।। नृप० ।। ८५ ।।
संवत-रस-कर युग्म-सहस पर, द्वितीयाषाढ़ तम पाख ।
ग्यारस, सुर गुरुवार जवाली, कही संघ नी साख जो ।। नृप० ।। ८६ ।।
महा प्रतापी सूर्य धर्म-ध्वज, आचारज रघुनाथ ।
तास गच्छ अति दच्छ दयालु, बुधमल गुरु गुण गाथ जो ।। नृप ।। ८७ ।।
तस पद-पंकज-चंचरीक यों, कथे मिश्री अणगार ।
देव गरु की रखो आसता, वरते मंगलाचार जो ।। नृप० ।। ८८ ।।

मूलदेव - चरित्र

हाथ जोड़कर माफी मांगी, पावो पड़ी तब रा
तिष्य रक्षिता कर सुरसा निध, पुनरपि आंख सुधा
धर्म प्रभाव प्रजा नें जाना, पितु आज्ञा सुख क
स्वारथ वस हो अनरथ ऐसे, हो रहे इस सं
आज्ञा ले पितु मात से, बोधी वन वि
दंपति मन से तत्व बोध ले, कीना उग्र प्र
परम बोध में लीन हो गये, आतम रूप नि
बोध ग्रंथ में कथा पढो सो, निर्मित एक ही
कुणाल कुवर आख्यान बनाया, सुनत लहै सो
ऐसा भक्त पुत्र हो जिसके, पिता परम पुनव।
जिसके अधम संतति होती, लेवो पाप फल म
पुन्य कार्य में पाप बताकर, जो पुन में दे रोडा
वह अज्ञानी जीव है सरे, भव २ पावे फोडा
त्रयोदश गुणस्थानक तांइ, पुन्य सहायता देता।
साधू केवली चक्री जिनपद, पुनवानी से लेता ज
चैत्र शुक्ल प्रतिपद मंगल दिन, दो हजार सतवीश।
एक घड़ी में निर्मित्त कीनो, सांडेराव जगीश जी।।
मिकरू सु मवि खट ठाणेसु, कर रहे धर्म प्रचार।
मरुधर मुनि मण्डल नित विचरे, मरुधर में जयकार जी ।।
श्री रघुपति गच्छानुयायी, वुध शिष मिश्री माल।
सुकन कथन सु एक राग में, जोडो ढाल टकशाल जी ।।वह

।। इत्यलम् ।।

... कायो।

... अति घबरायो जो ॥नृप०॥१०॥

... म्हारो, राख-राख धणियाप।

नहितर ओ ले, प्राण हमारो, देवूँ निज शिर काप जो ॥नृप०॥११॥

लेई खड्ग निज शोश उतारे, सुर-वनिता तिन-वेर।

आय शीघ्र कहै मत मर, मत मर, विप्र जरा सा ठैर जो ॥नृप०॥१२॥

जो दुःख व्है सो जाहिर करदे, हरूँ एक छिन माय।

ब्रह्म-हत्या मैं किस विध झेलूँ, महा माया कहलाय जी ॥नृप०॥१३॥

धन बिन जन देवे धिक्कारा, म्हा सूँ सही न जाय।

जो किरपा हो आपकी सरे, देवो दरिद्र गवाँय जी ॥नृप०॥१४॥

पूर्जो एक दियो लिख देवी, चार, सार तिन मांय।

लाख मोहराँ में बेच दे सरे, कुमो रहेगी नाय जी ॥नृप०॥१५॥

कागज ले कोविद चल्यो सरे, आयो मध्य बजार।

अयि लोगों यह पूर्जा ले लो, देवो लाख दीनार जी ॥नृप०॥१६॥

हाथी बेच कौन खर लेवे, जहर, सुधा को टार।

मोहराँ देय लेय कुण कागज, इसो न धन, बेकार जी ॥नृप०॥१७॥

हुवो घणो हैरान ब्रह्म-सुत, दिन चढ़ियो दोपार।

इत्तेक राजा मूलदेव ने, द्विज को लिया निहार जी ॥नृप०॥१८॥

क्यों ब्राह्मण! इतना क्यों दुमना, कही विप्र सुन बात।

पूर्जो पढ़ राजा ले लीनो, मोहरां दी तस हाथ जो ॥नृप०॥१९॥

राजी होय विप्र घर पहूंच्यो, सुखी भयो परिवार।

राजा महल में पूर्जो पढ़तों, सार बात चऊँ धार जी ॥नृप०॥२०॥

रात्रि में जागरण सार है, स्त्री को डक्कर सार।

रिपु को आदर देनो सार है, बात को सार विचार जी ॥नृप०॥२१॥

बड़ी अमोलख चारों शिक्षा, अजमा कर लूँ देख।

दिवी रकम उगे या नाहीं, इसड़ो करूँ विवेक जी ॥नृप०॥२२॥

|| ...प्यो पड़ी तब राणी जी ||वह०||२५||
मूलदे... पांख सुधारो।
...जी ||वह०||२६||

– दोहा –

श्रवण करे सन्मति वयण, सयल तरे संसार।
आगम पर श्रद्धा अडिग, धारे हृदय मजार || १ ||

|| तर्ज– ख्याल की० ||

नृप मूलदेव जी, चारों शिक्षायें दिल में धारलो || टेर ||
विमल वाहिनी वर बगसावो, मागूं करदो महर।
हूं बालक चरणों में हाजिर, लहूं ज्ञान की लहर जी ||नृप०||१||
नामो शहर नागपुर नोको, भरत क्षेत्र के माय।
मूलदेव राजा भलो सरे, न्यायवन्त सुखदाय जी ||नृप०||२||
राज्य बड़ो रैयत है राजी, सप्तांगी बल वीर।
दुश्मन ढाह दिया है नामी, हरे प्रजा की पीर जी ||नृप०||३||
रहे शहर में द्विजवर रतिधर, पंडित प्रौढ़ प्रवीन।
सरल महा संतोषी सायर, मगन ज्ञान जल-मीन जी ||नृप०||४||
नागर वेल के फल नहीं सरे, सोने नहीं सुगन्ध।
पंडित पे लक्ष्मी कठे सरे, मन के नहीं है बन्ध जी ||नृप० |५||
नारी मिलगी कर्कशा सरे, दुःख देवे दिन रात।
दूजो दुःख दारिद्र को सरे, अन्न बिन सब बिललात जी ||नृप०||६||
क्यों पढ़िया कांई सार काढ़ियो, दुःख में जन्म वितावो।
पोथी, पाना कूवे न्हाख दो, हल हाको सुख पावो जी ||नृप०||७||
विद्या बुरी नहीं है प्यारो, बुरा समझ तकदीर।
जिण सुं पड़े न पाधरी सरे, जोभी करूं तदवोर जी ||नृप०||८||
धीरज धार आया दिन आछा, भली बनेगी वात।
सुख दुःख सारा सम परिणामें, भोगवियां मिट जात जी ||नृप.||९||

खातर कीनी खूब राजवी, तूं प्यारी पट नार।
आज परीक्षा हो गई सरे, पंडित रो उपकार जी ॥नृप०॥३६॥
राज करे सुख से रढ़ियालो, एक दिन चढ़ तोखार।
वन खेलत इक अजब तमासो, नरपति लियो निहार जी ॥नृप०॥३७॥
वासग, नाग री नागणी सरे, गून्द लीया अहि संग।
भोग भोगवे वड़ तले सरे, नृप ने छायो रंग जी ॥नृप०॥३८॥
हण्टर दो नागण रे मारो, भूप महल में आयो।
नागण प्रजली जाय वासग को, सारो हाल सुनायो जी ॥नृप०॥३९॥
अति क्रोध में आयो वासग, कहे तज फिकर तमाम।
आज रात राजा को मारूं, छेड़्यो मुझे अलाम जी ॥नृप०॥४०॥
नृप राणी सूती दिन महलां, सुपनें बीतक सारो।
जाय कह्यो राजा ने झटपट, सुण नृप कियो बिचारो जी ॥नृप०॥४१॥
वासग नाग आप पर कोप्यो, आसी मारन अध रात।
नागण के कथनान्तर ऐसा, बन गया है जगनाथ जी ॥नृप०॥४२॥
सुण राजा मन सोचियो सरे, भलो कियो व्है भूण्डो।
वासग नाग अकल को आँधो, आलोच्यो नहीं ऊण्डो जी ॥नृप०॥४३॥
राजा मन में सोचियो सरे, पण्डित हुंदी वाय।
दो, तो साँचो निवड़गो सरे, तोजी लूं अजमाय जी ॥नृप०॥४४॥
तीजी बात वैरी ने आदर, सार देवणी दाखी।
काम पड़्यो अजमावण को अब, मैं क्यूं राखूं वाकी जी ॥नृप०॥४५॥
वासग की वंबी से लेकर, अपना ढ़ोल्या ताँई।
फूल विछाया अन्तर छिड़क्या, गायक दिया विठाई जी ॥नृप०॥४६॥
दूध ओटायो मिष्ट पदारथ, केशर, एलची वारो।
भर-भर स्वर्ण कटोरा धरिया, स्वागत रच्यो उणारो जी ॥नृप०॥४७॥
संध्या होत नृप पटराणी संग, ढ़ोल्ये वैठ्यो जाय।
इत वासग निकल्यो वंबी से, आई सुगन्ध सवाय जी ॥नृप०॥४[illegible]

(

सूतो नहीं उण रात राजवी, महल सम्भाले सारा।
पटराणी के महल में सरे, देखा ख्याल निराला जो ॥नृप०॥२३
निश्चित सूती अन्य पुरुष-संग, डर सारो दफनाय।
क्रोधारुण हो भूप दोनो रा, दीना शीश उड़ाय जो ॥नृप०॥२४॥
प्रथम सीख या साँची निवड़ी, अब दूजी सम्भालूँ।
अण मानेतण ऊपर डक्कर, राखी उल्टो चालूँ जो ॥नृप०॥२५।
उन राणी रे महल में सरे, राजा पहुँच्यो जाय।
फौजी अफसर उस राणी को, साग्रह रह्यो सताय जी ॥नृप०॥२६॥
कर मुझ को स्वीकार अन्यथा, देसूँ शीश उड़ाय।
मैं नहीं डरता राजाजी से, फौज सभी कर माय जो ॥नृप०॥२७॥
कहे राणी मैं डरूँ दोय से, जिन से करूँ न काम।
पहला डर पर भव मम बिगड़े, दूजो डर निज श्याम जी ॥नृप०॥२८॥
माने के माने नहीं सरे, झूँठो करे जिकाल।
आज रात राजा को मारी, लेऊँ राज तत्काल जी ॥नृप०॥२९॥
लूण हरामी दुष्ट अन्याई, घाले गादी घाव।
भव-भव में तूँ रुलतो फिरसो, रूलियारा रो राव जो ॥नृप०॥३०॥
गुस्से भरियो पाछो गिरियो, राणी मारी लात।
पड़ियो देख वा माथे चढ़कर, करी खड्ग से घात जो ॥नृप०॥३१॥
धड़, शिर राल्या गढ़ री खाई, महल साफ कर डारचो।
छाने से महिपत वो सारो, ख्याल नजर से भारचो जो। नृप०॥३२॥
गयो महल में राणी चमकी, बोली बड़को देय।
अरे मौत थारी पिण आई, रातों आयो गेय जी ॥नृप०॥३३॥
भूप भणे दूजो नहीं भामण, मैं छूँ थारो कन्थ।
कन्थ वणे निशर्मा म्हारो, कंथ न पूछे पंथ जो ॥नृप०॥३४॥
ओलख ले महाराणी म्हाने, दीपक कर ले जोय।
धन्यवाद है तो भणी सरे, धर्म निभायो सोय जी ॥नृप०॥३५॥